शिक्षा निदेशालय

राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र, दिल्ली सरकार

सहायक सामग्री

(2022-2023)

कक्षा : ग्यारहवीं

समाजशास्त्र

मार्गदर्शन:

श्री अशोक कुमार
सचिव (शिक्षा)

श्री हिमांशु गुप्ता
निदेशक (शिक्षा)

डॉ. रीता शर्मा
अतिरिक्त शिक्षा निदेशक (स्कूल एवं परीक्षा)

समन्वयक:

श्री संजय सुभास कुमार
उप शिक्षा निदेशक (परीक्षा)

श्रीमती सुनीता दुआ
विशेष कार्याधिकारी (परीक्षा)

श्री राजकुमार
विशेष कार्याधिकारी (परीक्षा)

श्री कृष्ण कुमार
विशेष कार्याधिकारी (परीक्षा)

उत्पादन मंडल

अनिल कुमार शर्मा

दिल्ली पाठ्य पुस्तक ब्यूरो में राजेश कुमार, सचिव, दिल्ली पाठ्य पुस्तक ब्यूरो, 25/2, पंखा रोड, संस्थानीय क्षेत्र, नई दिल्ली द्वारा प्रकाशित तथा मैसर्स अरिहन्त ऑफसेट, नई दिल्ली द्वारा मुद्रित।

ASHOK KUMAR
IAS

सत्यमेव जयते

सचिव (शिक्षा)
राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र
दिल्ली सरकार
पुराना सचिवालय, दिल्ली-110054
दूरभाष: 23890187 टेलीफैक्स : 23890119

Secretary (Education)
Government of National Capital Territory of Delhi
Old Secretariat, Delhi-110054
Phone : 23890187, Telefax : 23890119
E-mail : secyedu@nic.in

Message

Remembering the words of John Dewey, "Education is not preparation for life, education is life itself", I highly commend the sincere efforts of the officials and subject experts from Directorate of Education involved in the development of Support Material for classes IX to XII for the session 2022-23.

The Support Material is a comprehensive, yet concise learning support tool to strengthen the subject competencies of the students. I am sure that this will help our students in performing to the best of their abilities.

I am sure that the Heads of Schools and teachers will motivate the students to utilise this material and the students will make optimum use of this Support Material to enrich themselves.

I would like to congratulate the team of the Examination Branch along with all the Subject Experts for their incessant and diligent efforts in making this material so useful for students.

I extend my Best Wishes to all the students for success in their future endeavours.

(Ashok Kumar)

HIMANSHU GUPTA, IAS
Director, Education & Sports

सत्यमेव जयते

Directorate of Education
Govt. of NCT of Delhi
Room No. 12, Civil Lines
Near Vidhan Sabha,
Delhi-110054
Ph.: 011-23890172
E-mail : diredu@nic.in

MESSAGE

"A good education is a foundation for a better future."
- Elizabeth Warren

Believing in this quote, Directorate of Education, GNCT of Delhi tries to fulfill its objective of providing quality education to all its students.

Keeping this aim in mind, every year support material is developed for the students of classes IX to XII. Our expert faculty members undertake the responsibility to review and update the Support Material incorporating the latest changes made by CBSE. This helps the students become familiar with the new approaches and methods, enabling them to become good at problem solving and critical thinking. This year too, I am positive that it will help our students to excel in academics.

The support material is the outcome of persistent and sincere efforts of our dedicated team of subject experts from the Directorate of Education. This Support Material has been especially prepared for the students. I believe its thoughtful and intelligent use will definitely lead to learning enhancement.

Lastly, I would like to applaud the entire team for their valuable contribution in making this Support Material so beneficial and practical for our students.

Best wishes to all the students for a bright future.

(HIMANSHU GUPTA)

Dr. RITA SHARMA
Additional Director of Education
(School/Exam)

सत्यमेव जयते

Govt. of NCT of Delhi
Directorate of Education
Old Secretariat, Delhi-110054
Ph.: 23890185

संदेश

शिक्षा निदेशालय, दिल्ली सरकार का महत्वपूर्ण लक्ष्य अपने विद्यार्थियों का सर्वांगीण विकास करना है। इस उद्देश्य को ध्यान में रखते हुए शिक्षा निदेशालय ने अपने विद्यार्थियों को उच्च कोटि के शैक्षणिक मानकों के अनुरूप विद्यार्थियों के स्तरानुकूल सहायक सामग्री उपलब्ध कराने का प्रयास किया है। कोरोना काल के कठिनतम समय में भी शिक्षण अधिगम की प्रक्रिया को निर्बाध रूप से संचालित करने के लिए संबंधित समस्त अकादमिक समूहों और क्रियान्वित करने वाले शिक्षकों को हार्दिक बधाई देती हूँ।

प्रत्येक वर्ष की भाँति इस वर्ष भी कक्षा 9वीं से कक्षा 12वीं तक की सहायक सामग्रियों में सी.बी.एस.ई. के नवीनतम दिशा-निर्देशों के अनुसार पाठ्यक्रम में आवश्यक संशोधन किए गए हैं। साथ ही साथ मूल्यांकन से संबंधित आवश्यक निर्देश भी दिए गए हैं। इन सहायक सामग्रियों में कठिन से कठिन पाठ्य सामग्री को भी सरलतम रूप में प्रस्तुत किया गया है ताकि शिक्षा निदेशालय के विद्यार्थियों को इसका भरपूर लाभ मिल सके।

मुझे आशा है कि इन सहायक सामग्रियों के गहन और निरंतर अध्ययन के फलस्वरूप विद्यार्थियों में गुणात्मक शैक्षणिक संवर्धन का विस्तार उनके प्रदर्शनो में भी परिलक्षित होगा। इस उत्कृष्ट सहायक सामग्री को तैयार करने में शामिल सभी अधिकारियों तथा शिक्षकों को हार्दिक बधाई देती हूँ तथा सभी विद्यार्थियों को उनके उज्वल भविष्य की शुभकामनाएं देती हूँ।

रीता शर्मा

(रीता शर्मा)

भारत का संविधान

उद्देशिका

हम, भारत के लोग, भारत को एक [1][**संपूर्ण प्रभुत्व-संपन्न समाजवादी पंथनिरपेक्ष लोकतंत्रात्मक गणराज्य**] बनाने के लिए, तथा उसके समस्त नागरिकों को :

सामाजिक, आर्थिक और राजनैतिक **न्याय,**

विचार, अभिव्यक्ति, विश्वास, धर्म और उपासना की **स्वतंत्रता,**

प्रतिष्ठा और अवसर की **समता**

प्राप्त कराने के लिए,

तथा उन **सब में**

व्यक्ति की गरिमा और [2][**राष्ट्र की एकता और अखंडता**] सुनिश्चित करने वाली **बंधुता**

बढ़ाने के लिए

दृढ़संकल्प होकर **अपनी इस संविधान सभा में** आज तारीख 26 नवंबर, 1949 ई. को **एतद्द्वारा इस संविधान को अंगीकृत, अधिनियमित और आत्मार्पित करते हैं।**

---

1. संविधान (बयालीसवां संशोधन) अधिनियम, 1976 की धारा 2 द्वारा (3.1.1977 से) "प्रभुत्व संपन्न लोकतंत्रात्मक गणराज्य" के स्थान पर प्रतिस्थापित।
2. संविधान (बयालीसवां संशोधन) अधिनियम, 1976 की धारा 2 द्वारा (3.1.1977 से) "राष्ट्र की एकता" के स्थान पर प्रतिस्थापित।

THE CONSTITUTION OF INDIA

PREAMBLE

WE, THE PEOPLE OF INDIA, having solemnly resolved to constitute India into a [1]**[SOVEREIGN SOCIALIST SECULAR DEMOCRATIC REPUBLIC]** and to secure to all its citizens :

JUSTICE, social, economic and political;

LIBERTY of thought, expression, belief, faith and worship;

EQUALITY of status and of opportunity; and to promote among them all

FRATERNITY assuring the dignity of the individual and the [2][unity and integrity of the Nation];

IN OUR CONSTITUENT ASSEMBLY this twenty-sixth day of November, 1949 do **HEREBY ADOPT, ENACT AND GIVE TO OURSELVES THIS CONSTITUTION.**

---

1. Subs. by the Constitution (Forty-second Amendment) Act, 1976, Sec.2, for "Sovereign Democratic Republic" (w.e.f. 3.1.1977)
2. Subs. by the Constitution (Forty-second Amendment) Act, 1976, Sec.2, for "Unity of the Nation" (w.e.f. 3.1.1977)

भारत का संविधान

भाग 4क

नागरिकों के मूल कर्तव्य

अनुच्छेद 51 क

मूल कर्तव्य - भारत के प्रत्येक नागरिक का यह कर्तव्य होगा कि वह -

(क) संविधान का पालन करे और उसके आदर्शों, संस्थाओं, राष्ट्रध्वज और राष्ट्रगान का आदर करे;

(ख) स्वतंत्रता के लिए हमारे राष्ट्रीय आंदोलन को प्रेरित करने वाले उच्च आदर्शों को हृदय में संजोए रखे और उनका पालन करे;

(ग) भारत की संप्रभुता, एकता और अखंडता की रक्षा करे और उसे अक्षुण्ण बनाए रखे;

(घ) देश की रक्षा करे और आह्वान किए जाने पर राष्ट्र की सेवा करे;

(ङ) भारत के सभी लोगों में समरसता और समान भ्रातृत्व की भावना का निर्माण करे जो धर्म, भाषा और प्रदेश या वर्ग पर आधारित सभी भेदभावों से परे हो, ऐसी प्रथाओं का त्याग करे जो महिलाओं के सम्मान के विरुद्ध हों;

(च) हमारी सामासिक संस्कृति की गौरवशाली परंपरा का महत्त्व समझे और उसका परिरक्षण करे;

(छ) प्राकृतिक पर्यावरण की, जिसके अंतर्गत वन, झील, नदी और वन्य जीव हैं, रक्षा करे और उसका संवर्धन करे तथा प्राणिमात्र के प्रति दयाभाव रखे;

(ज) वैज्ञानिक दृष्टिकोण, मानववाद और ज्ञानार्जन तथा सुधार की भावना का विकास करे;

(झ) सार्वजनिक संपत्ति को सुरक्षित रखे और हिंसा से दूर रहे;

(ञ) व्यक्तिगत और सामूहिक गतिविधियों के सभी क्षेत्रों में उत्कर्ष की ओर बढ़ने का सतत् प्रयास करे, जिससे राष्ट्र निरंतर बढ़ते हुए प्रयत्न और उपलब्धि की नई ऊँचाइयों को छू सके; और

(ट) यदि माता-पिता या संरक्षक है, छह वर्ष से चौदह वर्ष तक की आयु वाले अपने, यथास्थिति, बालक या प्रतिपाल्य को शिक्षा के अवसर प्रदान करे।

Constitution of India

Part IV A (Article 51 A)

Fundamental Duties

It shall be the duty of every citizen of India —

(a) to abide by the Constitution and respect its ideals and institutions, the National Flag and the National Anthem;

(b) to cherish and follow the noble ideals which inspired our national struggle for freedom;

(c) to uphold and protect the sovereignty, unity and integrity of India;

(d) to defend the country and render national service when called upon to do so;

(e) to promote harmony and the spirit of common brotherhood amongst all the people of India transcending religious, linguistic and regional or sectional diversities; to renounce practices derogatory to the dignity of women;

(f) to value and preserve the rich heritage of our composite culture;

(g) to protect and improve the natural environment including forests, lakes, rivers, wildlife and to have compassion for living creatures;

(h) to develop the scientific temper, humanism and the spirit of inquiry and reform;

(i) to safeguard public property and to abjure violence;

(j) to strive towards excellence in all spheres of individual and collective activity so that the nation constantly rises to higher levels of endeavour and achievement;

*(k) who is a parent or guardian, to provide opportunities for education to his child or, as the case may be, ward between the age of six and fourteen years.

Note: The Article 51A containing Fundamental Duties was inserted by the Constitution (42nd Amendment) Act, 1976 (with effect from 3 January 1977).

*(k) was inserted by the Constitution (86th Amendment) Act, 2002 (with effect from 1 April 2010).

शिक्षा निदेशालय

राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र, दिल्ली सरकार

सहायक सामग्री

(2022-2023)

समाजशास्त्र

कक्षा : ग्यारहवीं

निःशुल्क वितरण हेतु

दिल्ली पाठ्य-पुस्तक ब्यूरो द्वारा प्रकाशित

SUPPORT MATERIAL

2022-2023

CLASS-XI

SUBJECT : SOCIOLOGY

Reviewed and Updated by

Name of the Team Leader	Ms. Seema Roy Chowdhury Principal
Name of the Experts	1. Dr. Rajni Meena Lecturer Sociology R.S.K.V No. 2, Shakarpur Delhi-110092 2. Sanjay Choubey Lecturer Sociology RSBV Surajmal Vihar Khichripur, Delhi-110092 3. Ms. Deepika Kaku Lecturer Sociology GGSSS, M.B. Road Pushp Vihar, Sec.-1 New Delhi-110017 4. Ms. Neelam Dalal Lecturer Sociology S.V. Aliganj, Lodhi Colony New Delhi-110003

CLASS XI : SOCIOLOGY (Code N0. 039)
(2022-23)

Rationale :-

Sociology is introduced as an elective subject at the senior secondary stage. The syllabus is designed to help learners to reflect on what they hear and see in the course of everyday life and develop a constructive attitude towards society in change; to equip a learner with concepts and theoretical skills for the purpose. The curriculum of Sociology at this stage should enable the learner to understand dynamics of human behaviour in all its complexities and manifestations. The learners of today need answers and explanations to satisfy the questions that arise in their minds while trying to understand social world. Therefore, there is a need to develop an analytical approach towards the social structure so that they can meaningfully participate in the process of social change. There is scope in the syllabus not only for interactive learning, based on exercises and project work but also for teachers and students to jointly innovate new ways of learning.

- Sociology studies society. The child's familiarity with the society in which she / he lives in makes the study of Sociology a double edged experience. At one level Sociology studies institutions such as family and kinship, class, caste and tribe religion and region- contexts with which children are familiar of, even if differentially. For India is a society which is varied both horizontally and vertically. The effort in the books will be to grapple overtly with these both as a source of strength and as a site for interrogation.
- Significantly the intellectual legacy of Sociology equips the discipline with a plural perspective that overtly engages with the need for defamiliarization, to unlearn and question the given. This interrogative and critical character of Sociology also makes it possible to understand both other cultures as well as relearn about one's own culture.
- This plural perspective makes for an inbuilt richness and openness that not too many other disciplines in practice share. From its very inception Sociology has had mutually enriching and contesting traditions of an interpretative method that openly takes into account 'subjectivity' and causal explanations that pay due importance to establishing causal correspondences with considerable sophistication. Not surprisingly its field work tradition also entails large scale

survey methods as well as a rich ethnographic tradition. Indeed Indian sociology, in particular has bridged this distinction between what has often been seen as distinct approaches of Sociology and social anthropology. The syllabus provides ample opportunity to make the child familiar with the excitement of field work as well as its theoretical significance for the very discipline of Sociology.

- The plural legacy of Sociology also enables a bird's eye view and a worm's eye view of the society the child lives in. This is particularly true today when the local is inextricably defined and shaped by macro global processes.
- The syllabus proceeds with the assumption that gender as an organizing principle of society cannot be treated as an add on topic but is fundamental to the manner that all chapters shall be dealt with.
- The chapters shall seek for a child centric approach that makes it possible to connect the lived realty of children with social structures and social process that Sociology studies.
- A conscious effort will be made to build into the chapters a scope for exploration of society that makes learning a process of discovery. A way towards this is to deal with sociological concepts not as given but a product of societal actions humanly constructed and therefore open to questioning.

Objectives :-

- To enable learners to relate classroom teaching to their outside environment.
- To introduce them to the basic concepts of Sociology that would enable them to observe and interpret social life.
- To be aware of the complexity of social processes.
- To appreciate diversity in society in India and the world at large.
- To build the capacity of students to understand and analyze the changes in contemporary Indian Society.

COURSE STRUCTURE
CLASS : XI

One Paper Theory **Time : 3 Hours**

Max.Marks : 80

Unitwise Weightage

Units		Periods	Marks
A.	**Introducing Sociology**		
	1. Sociology, Society and its relationship with other Social Sciences	18	8
	2. Terms, Concepts and their use in Sociology	16	8
	3. Understanding Social Institutions	20	10
	4. Culture and Socialization	16	8
	5. Doing Sociology : Research Methods	20	6
	Total	**90**	**40**
B.	**Understanding Society**		
	6. Social Structure, Stratification and Social Processes in Society	18	10
	7. Social Change and Social order in Rural and Urban Society	20	10
	8. Enviornment and Society	12	4
	9. Introducing Western Sociologists	20	8
	10. Indian Sociologists	20	8
	Total	**90**	**40**
	Grad Total	**180**	**40**
	Project Work	**40**	**20**

A. INTRODUCING SOCIOLOGY — 40 MARKS

Unit 1: Sociology, Society and its Relationship with other Social Sciences — **18 Periods**

- Introducing Society: Individuals and collectivities. Plural Perspectives
- Introducing Sociology: Emergence. Nature and Scope. Relationship to other disciplines

Unit 2: Basic Concepts and their use in Sociology — **16 Periods**

- Social Groups & Society
- Status and Role
- Social Stratification
- Society & Social Control

Unit 3: Understanding Social Institutions — **20 Periods**

- Family, Marriage and Kinship
- Work & Economic Life
- Political Institutions
- Religion as a Social Institution
- Education as a Social Institution

Unit 4: Culture and Socialization — **16 Periods**

- Culture, Values and Norms: Shared, Plural, Contested
- Socialization: Conformity, Conflict and the Shaping of Personality

Unit 5: Doing Sociology: Research Methods — **20 Periods**

- Methods: Participant Observation, Survey
- Tools and Techniques: Observation, Interview, Questionnaire
- The Significance of Field Work in Sociology

B. UNDERSTANDING SOCIETY — 40 MARKS

Unit 6: Structure, Process and Stratification — 40 Marks

- Social Structure
- Social Stratification: Class, Caste, Race, Gender
- Social Processes: Cooperation, Competition, Conflict

Unit 7: Social Change and Social order in Rural and Urban Society — 18 Periods

- Social Change:Types; Causes and Consequences
- Social Order: Domination, Authority and Law; Contestation, Crime and Violence
- Village, Town and City: Changes in Rural and Urban Society

Unit 8: Environment and Society — 12 Periods

- Ecology and Society
- Environmental Crises and Social Responses
- Sustainable Development

Unit 9: Introducing Western Sociologists — 20 Periods

- Karl Marx on Class Conflict
- Emile Durkheim : Division of Labour and Conscience Collective
- Max Weber : Bureaucracy

Unit 10: Indian Sociologists — 20 Periods

- G. S. Ghurye on Race and Caste
- D. P. Mukherjee on Tradition and Change
- R. Desai on the State
- M. N. Srinivas on the Village

PROJECT WORK

Periods : 40 **Max. Marks : 20**
Time Allotted : 3 Hours

A.	**Project undertaken during the academic year at school level** 1. Introduction - 2 marks 2. Statement of Purpose - 2 marks 3. Research Question - 2 marks 4. Methodology - 3 marks 5. Data Analysis - 4 marks 6. Conclusion - 2 marks	**15 Marks**
B.	**Viva-based on the Project Work**	**5 Marks**

QUESTION WISE BREAK UP

Type of Question	Marks per Question	Total No. of Questions	Total Marks
Learning Checks	1	20	20
Very Short Answer (VSA)	2	9	18
Short Answer (SA)	4	6	24
Long Answer (La)	6	3	18
Total		**38**	**80**

QUESTION PAPER DESIGN 2021 - 22

SOCIOLOGY **Code No. 039** **CLASS-XI**

TIME: 3 Hours **Max. Marks: 80**

S.No	Typology of Questions	Learning Checks (LC) (1 Marks)	Very short Answer (VSA) (2 Marks)	Short Answer (SA) (4 Marks)	long Answer (LA) (6 Marks)	Total Marks	% Weightage
1	**Remembering-** (knowledge based sample recall questions, to know specific facts, terms, theories, Identify, define, or recite, information)	6	2	1	1	20	25%
2	**Understanding-** (Comprehension - to be familiar) with meaning and to understand conceptually, interpret, compare contrast, explain, paraphrase, or interpret information)	6	4	1	1	24	30%
3	**Application** (Use abstract information in concrete situation, to apply knowledge to new situations. Use given content to interpret a situation, provide an example, or solve a problem)	6	1	2	-	16	20%
4	**Higher Order Thinking Skills** (Analysis & Synthesis- Classify, compare, contrast, or differentiate pieces of information, organize and/or integrate unique pieces of information from a variety of sources)	2	2	1	1	16	20%
5	**Evaluation -** (Appraise, judge, and/or justify the value or worth of a decision or outcome, or to predict outcomes based on values)	-	-	1	-	4	5%
	TOTAL	**1x20=20**	**2x9=18**	**4x6=24**	**6x3=18**	**80(38)**	**100%**

SOCIOLOGY
(Code No. 039)
Class - XI (2022-23)

TERM WISE SYLLABUS

	TERM-I	WEIGHTAGE (In Marks)
1.	Sociology and Society	10
2.	Terms, Concept and their use in Sociology	10
3.	Understanding Social Institutions	10
4.	Culture and Socialisation	10
	Total	**40 Marks**
	TERM-II	
1.	Social Change and Social Order in Rural and Urban Society	14
2.	Introducing Western Sociologists	14
3.	Indian Sociologists	12
	Total	**40 Marks**

Prescribed Textbooks :

1. Introducing Sociology (NCERT)
2. Understanding Society (NCERT)

Project Work* = 20 Marks

***See the guidelines given with the document.**

Grand Total = Term I = 40 Marks
Term II = 40 Marks
Project Work = 20 Marks
= 100 Marks

Guidelines for Project Work: 20 Marks (SOCIOLOGY)

Only ONE Project is to be done throughout the session.

1. **The objectives of the project work:**

   Objectives of project work are to enable learners to :

   - Probe deeper into personal enquiry, initiate action and reflect on knowledge and skills, views etc. acquired during the course of class XI.
   - analyse and evaluate real world scenarios using theoretical constructs and arguments
   - demonstrate the application of critical and creative thinking skills and abilities to produce an independent and extended piece of work
   - follow up aspects in which learners have interest
   - develop the communication skills to argue logically

2. **Role of the teacher:**

   The teacher plays a critical role in developing thinking skills of the learners. A teacher should:

   - help each learner select the topic after detailed discussions and deliberations of the topic;
   - play the role of a facilitator to support and monitor the project work of the learner through periodic discussions;
   - guide the research work in terms of sources for the relevant data;
   - ensure that students must understand the relevance and usage of primary evidence and other sources in their projects and duly acknowledge the same;
   - ensure that the students are able to derive a conclusion from the content; cite the limitations faced during the research and give appropriate references used in doing the research work.
   - educate learner about plagiarism and the importance of quoting the source of the information to ensure authenticity of research work.
   - prepare the learner for the presentation of the project work.
   - arrange a presentation of the project file.

3. **Steps involved in the conduct of the project:**

Students may work upon the following lines as a suggested flow chart :

Choose a title/topic

↓

Collection of the research material/data

↓

Organization of material/data

↓

Present material/data

↓

Analysing the material/data for conclusion

↓

Draw the relevant conclusion

↓

Presentation of the Project Work

The project work can be in the form of telling/debate/panel discussion, Power Point

Presentation/Exhibition/Skit/albums/files/song and dance or culture show/story telling/debate/panel

discussion, paper presentation and so on . Any of these activities can be performed as per the choice of the student.

4. **Expected Checklist for the Project Work:**

- Introduction of topic/title
- Identifying the causes, event s, consequences and/ or remedies
- Various stakeholders and effect on each of them
- Advantages and disadvantages of situations or issues identified
- Short-term and long-term implications of strategies suggested in the course of research
- Validity, reliability, appropriateness and relevance of data used for research work and for presentation in the project file
- Presentation and writing that is succinct and coherent in project file
- Citation of the materials referred to, in the file in footnotes, resources section, bibliography etc.

5. Term-Wise Assessment of Project Work:

- Project Work has broadly the following phases: Synopsis/ Initiation, Data Collection, Data Analysis and Interpretation, Conclusion.
- The aspects of the project work to be covered by students can be assessed during the two terms.
- **20 marks assigned for Project Work can be divided in to two terms in the following manner:**

TERM-I PROJECT WORK (Part 1) : 10 Marks

The teacher will assess the progress of the project work in the term I in the following manner :-

Month	Periodic Work	Assessment Rubrics	Marks
1 - 3 July-September	Instructions about Project Guidelines, Background reading Discussions on Theme and Selection of the Final Topic, Initiation/ Synopsis	Introduction, Statement of Purpose/Need and Objective of the Study, HypotheSis/Research Question, Review of Literature, Presentation of Evidence, Key Words, Methodology, Questionnaire, Data Collection.	5
4-5 October-November	Planning and organisation: forming an action plan, feasibility or baseline study, Updating/modifying the action plan, Data Collection	Significance and relevance of the topic; challenges encountered while conducting the research.	5
October-November	**Mid-term Assessment by Internal examiner**	**Total**	**10**

TERM-II PROJECT WORK (Part 2) : 10 Marks

The teacher will assess the progress of the project work in the term II in the following manner :-

Month	**Periodic Work**	**Assessment Rubrics**	**Marks**
6-7 December- January	Content/data an alysis and interpretation. Conclusion, Limitations, Suggestions, Bibliography, Annexures and Overall Presentation of the project.	Content analysis and its relevance in the current scenario. Conclusion, Limitations, Bibliography, Annexures and Overall Presentation.	5
8 January/ February	**Final Assessment and VIVA by both Internal and External Examiners**	External/ Internal Viva based on the project	5
		TOTAL	**10**

6. <u>Viva-Voce:</u>

- At the end of the stipulated term, each learner will present the research work in the Project File to the External and Internal examiner.
- The questions should be asked from the Research Work/ Project File of the learner.
- The Internal Examiner should ensure that the study submitted by the learner is his/her own original work.
- In case of any doubt, authenticity should be checked and verified.

विषय–सूची

अध्याय	विषय	पृष्ठ नं.
	पुस्तक – 1 समाजशास्त्र परिचय	
1.	समाजशास्त्र एवं समाज	1-14
2.	समाजशास्त्र में प्रयुक्त शब्दावली, संकल्पनाएँ एवं उनका उपयोग	15-30
3.	सामाजिक संस्थाओं को समझना	31-42
4.	संस्कृति तथा समाजीकरण	43-54
5.	अनुसंधान पद्धतियाँ	55-68
	उत्तरमाला (अध्याय 1 से 5 तक)	69-74
	पुस्तक – 2 समाज का बोध	
1.	समाज में सामाजिक संरचना, स्तरीकरण और सामाजिक प्रक्रियाएँ	75-86
2.	ग्रामीण तथा नगरीय समाज में सामाजिक परिवर्तन सामाजिक व्यवस्था	87-103
3.	पर्यावरण और समाज	104-113
4.	पाश्चात्य समाजशास्त्री – एक परिचय	114-127
5.	भारतीय समाजशास्त्री	128-141
	उत्तरमाला (अध्याय 1 से 5 तक)	142-147
	Annexure - A : गद्यांश आधारित प्रश्न	148-153
	Annexure - B : अभ्यास प्रश्न पत्र	154-156

अध्याय-1
समाजशास्त्र एंव समाज

इस पाठ मे हम जानेगे:

- समाजशास्त्र एवं समाज
- समाजशास्त्रीय कल्पनाएँ:
- यूरोप और भारत मे समाजशास्त्र का आरंम्भ और विकास
- समाज शास्त्र का विषय क्षेत्र एव अन्य विज्ञानो से इसके संबंध

स्मरणीय बिन्दु :

- **समाज :** समाज, सामाजिक संबंधों का जाल है।
- **समाज की प्रमुख विशेषताए:**
  (1) समाज अमूर्त है
  (2) समाज में समानता व भिन्नता
  (3) पारस्परिक सहयोग एंव संघर्ष
  (4) आश्रित रहने का नियम
  (5) समाज परिवर्तनशील है
- **व्यक्ति और समाज में संबंध / मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है:**
  (1) मनुष्य के क्रियाकलाप समाज से संबंधित हैं और समाज पर ही उसका अस्तित्व और विकास निर्भर करता है।
  (2) मानव शरीर को सामाजिक विशेषताओं या गुणों से व्यक्तित्व प्रदान करना समाज का ही काम है।
  (3) इस दृष्टि से व्यक्ति समाज पर अत्याधिक निर्भर है।
  (4) व्यक्तियों के बिना सामाजिक संबंधों की व्यवस्था नहीं पनप सकती और न ही सामाजिक संबंधों की व्यवस्था के बिना समाज का अस्तित्व संभव है।

- **मानव समाज और पशु समाज में अन्तर**

मानव समाज	पशु समाज
(1) बोलने, सोचने, समझने की शक्ति होती है।	बोलने, सोचने, समझने की शक्ति नहीं होती है।
(2) अपनी एक संस्कृति होती है।	संस्कृति नहीं होती है।
(3) स्वयं को व्यक्त करने के लिए भाषा का प्रयोग करता है।	स्वयं के व्यक्त करने के लिए भाषा नहीं होती है।
(4) भविष्य की चिन्ता करता है उसके लिए योजनाएं बनाता है।	वर्तमान में जीता है।

- **समाजों में बहुलताएँ एंव असमानताएँ**

(1) एक समाज दूसरे समाज से भिन्न होता है।

(2) हम एक से अधिक समाज के सदस्य बनते जा रहे हैं।

(3) दूसरे समाजों से अंतः क्रिया करते हैं, उनकी संस्कृति को ग्रहण करते हैं।

(4) इस प्रकार आज हमारी संस्कृति एक मिश्रित संस्कृति तथा हमारा समाज एक बहुलवादी समाज (एक से ज्यादा समाज) में परिवर्तित होता जा रहा है।

(5) हमारे समाज में असमानता समाजों के बीच केन्द्रीय बिंदु है।

उदाहरण : अमीर व गरीब

समाजशास्त्र : सामाजिक संबंधों का व्यवस्थित व क्रमबद्ध तरीके से अध्ययन करने वाला विज्ञान ही समाजशास्त्र है।

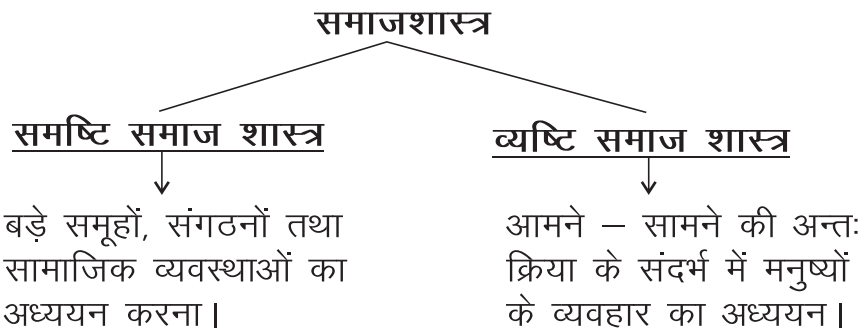

• **समाजशास्त्र की उत्पत्ति :**

(1) समाजशास्त्र का जन्म 19वीं शताब्दी में हुआ।

(2) समूह के क्रियाकलापों में भाग लेने के लिए आवश्यक है कि समस्याओं को सुलझाया जाए। इन्हीं प्रयत्नों के परिणामस्वरूप ही समाजशास्त्र की उत्पत्ति हुई है।

(3) 19वीं शताब्दी के प्रारंभ में फ्रांस के विचारक आगस्ट कॉम्टे ने समाजशास्त्र का नाम सामाजिक भौतिकी रखा और 1838 में बदलकर समाजशास्त्र रखा। इस कारण से कॉम्टे को ''समाजशास्त्र का जनक'' कहा जाता है।

(4) समाजशास्त्र को एक विषय के रूप में विकसित करने में दुर्खीम, स्पेंसर तथा मैक्स वेबर आदि विद्वानों के विचारों का काफी योगदान रहा है।

(5) भारत में समाजशास्त्र के उद्‌भव के विकास का इतिहास प्राचीन है।

(6) भारत में समाजशास्त्र विभाग 1919 में मुम्बई विश्वविद्यालय में शुरू हुआ तथा औपचारिक अध्ययन शुरू हुआ।

• **भारत में समाजशास्त्र के अध्ययन की आवश्यकता :**

(1) भारत में व्याप्त क्षेत्रवाद, भाषावाद, सम्प्रदायवाद, जातिवाद आदि समस्याओं को व्यवस्थित ढंग से सुलझाने के लिए समाजशास्त्रीय अध्ययन आवश्यक है।

(2) इसी कारण, भारत में विभिन्न समस्याओं के समाधान हेतु समाजशास्त्र का अध्ययन अधिक लोकप्रिय होता जा रहा है।

(3) दूसरे समाजों के साथ तुलनात्मक अध्ययन होता है

(4) सामाजिक गतिशीलता के बारे में पता चलता है

• **समाजशास्त्र की प्रकृति की मुख्य विशेषताएँ :**

(1) समाजशास्त्र एक सामाजिक विज्ञान है, न कि प्राकृतिक विज्ञान।

(2) समाजशास्त्र एक निरपेक्ष विज्ञान है, न कि आदर्शात्मक विज्ञान।

(3) समाजशास्त्र अपेक्षाकृत एक अमूर्त विज्ञान है, न कि मूर्त विज्ञान।

(4) समाजशास्त्र एक सामान्य विज्ञान है, न कि विशेष विज्ञान।

- **बौद्धिक विचार जिनकी समाजशास्त्र की रचना में भूमिका है :**

प्राकृतिक विकास के वैज्ञानिक सिद्धांतो और प्राचीन यात्रियों द्वारा पूर्व आधुनिक सभ्यताओं की खोज से प्रभावित होकर उपनिवेशी प्रशासकों, समाजशास्त्रियों एंव सामाजिक मानवविज्ञानियों ने समाजों के बारें में इस दृष्टिकोण से विचार किया कि उनका विभिन्न प्रकारों में वर्गीकरण किया जाए ताकि सामाजिक विकास के विभिन्न चरणों को पहचाना जा सके।

- **सरल समाज एंव जटिल समाज :**

1. भारत स्वयं परंपरा और आधुनिकता का, गाँव और शहर का, जाति और जनजाति का, वर्ग एंव समुदाय का एक जटिल मिश्रण है।
2. 19 वी शताब्दी में समाजों का वर्गीकरण किया गया–
   (1) आधुनिक काल से पहले के समाजों के प्रकार जैसे– शिकारी टोलियाँ एंव संग्रहकर्ता, चरवाहे एंव कृषक, कृषक एंव गैर औद्योगिक सभ्यताएँ (सरल समाज)
   (2) आधुनिक समाजों के प्रकार, जैसे– औद्योगिक समाज (जटिल समाज)
   (3) डार्विन के जीव विकास के विचारों का आरंभिक समाजशास्त्रीय विचारों पर दृढ़ प्रभाव था।
   (4) ज्ञानोदय, एक यूरोपीय बौद्धिक आंदोलन जो सत्रहवीं शताब्दी के अंतिम वर्षो एंव अट्ठारहवीं शताब्दी में चला, कारण और व्यक्तिवाद पर बल देता है।
   (5) सरल समाज में श्रम विभाजन नही होता जबकि जटिल समाज में यह देखने को मिलता है।

- **भौतिक मुद्दे जिनकी समाजशास्त्र की रचना में भूमिका है :**
- **औद्योगिक क्रांति से आए बदलाव एंव पूँजीवाद :**

1. औद्योगिक क्रांति एक नए गतिशील आर्थिक, क्रियाकलाप– पूँजीवाद पर आधारित थी। पूँजीवाद–आर्थिक उद्यम की एक व्यवस्था है जोकि बाजार विनिमय पर आधारित है। यह व्यवस्था उत्पादन के साधनों और संपत्तियों के निजी स्वामित्व पर

आधारित है। औद्योगिक उत्पादन की उन्नति के पीछे यही पूँजीवादी व्यवस्था एक प्रमुख शक्ति थी।

2. उद्यमी निश्चित और व्यवस्थित मुनाफे की आशा से प्रेरित थे।
3. बाजारों ने उत्पादनकारी जीवन में प्रमुख साधन की भूमिका अदा की। और माल, सेवाएँ एंव श्रम वस्तुएँ बन गई जिनका निर्धारण तार्किक गणनाओं के द्वारा होता था।
4. इंग्लैंड औद्योगिक क्रांति का केंद्र था। औद्योगीकरण द्वारा आया परिवर्तन असरकारी था।
5. औद्योगिकीकरण से पहले, अंग्रेजों का मुख्य पेशा खेती करना एंव कपड़ा बनाना था। अधिकांश लोग गाँवों में रहते थे जोकि कृषक, भू–स्वामी, लोहार एंव चमड़ा श्रमिक, जुलाहे, कुम्हार, चरवाह थे। समाज छोटा था। यह स्तरीकृत था। लोगों की स्थिति से उनका वर्ग परिभाषित था।
6. औद्योगीकरण के साथ–साथ शहरी केंद्रों का विकास एंव विस्तार हुआ। इसकी निशानी थी, फैक्ट्रियों का धुआँ और कालिख, नई औद्योगिक श्रमिक वर्ग की भीड़भाड़ वाली बस्तियाँ, गंदगी और सफाई का नितांत अभाव।
7. अंग्रेजी कारखानों के मशीनों द्वारा तैयार माल के आगमन से भारी तादाद में भारतीय दस्तकार बरबाद हो गए क्योंकि अत्याधिक विकसित कारखानों में उनकी खपत नहीं हो सकती थी। इन बर्बाद दस्तकारों ने मुख्यतः जीवन निर्वाह के लिए खेती को अपना लिया।

- **समाजशास्त्र की अन्य सामाजिक विज्ञानों के मध्य स्थिति एक दृष्टि में :**

1. सभी सामाजिक विज्ञान समाजशास्त्र से किसी रूप से संबंधित हैं और दूसरी और भिन्न भी हैं।
2. इनके आपसी सहयोग के द्वारा ही विभिन्न क्षेत्रों का अध्ययन सुचारू रूप से संभव है।

3. सभी सामाजिक विज्ञानों का क्षेत्र अलग–अलग है, और इन सभी का केंद्र बिंदु सामाजिक प्राणी मानव है।
4. समाजशास्त्र एक सहयोगी व्यवस्था का निर्माण करता है और सभी विज्ञानों को एक सामान्य पटल पर ले आता है।
5. इस प्रकार सामाजिक जीवन की जटिलताओं का अध्ययन व विश्लेषण सरलता से संभव है।

- **समाजशास्त्र एवं मनोविज्ञान में संबंध :**

समाज शास्त्र	मनोविज्ञान
• समाजशास्त्र मानव व्यवहार सीखने से सबंधित है • समाजशास्त्र एक बडे समूह या समाज के साथ सौदा करता है। • समाजशास्त्र एक अवलोकन प्रक्रिया के रूप मे किया जा सकता है। • समाजशास्त्र लोगो के संपर्क से संबधित है। • समाजशास्त्र मानता है कि एक व्यक्ति का कार्य उसके आस पास या समूह से प्रभावित होता है।	• मनोविज्ञान मानव मस्तिष्क के अध्ययन से सबंधित है। • मनोविज्ञान व्यक्तियो या छोटे समूह से संबधित है। • मनोविज्ञान को एक प्रयोगात्मक प्रक्रिया के रूप मे जाना जा सकता है। • मनोविज्ञान मानव भावनाओ से सबंधित है। • मनोवैज्ञानिक अध्ययनों मे यह माना जाता है कि व्यक्ति सभी गतिविधियो के लिये अकेले जिम्मेदार है

- **समाजशास्त्र और अर्थशास्त्र में संबंध :**

समाज शास्त्र	अर्थशास्त्र
• समाजशास्त्र एक सामान्यीकृत विज्ञान है • समाजशास्त्र का दृष्टिकोण व्यापक है • समाजशास्त्र के अध्यन की प्रकृति समूहवादी है। • समाजशास्त्र में, सामाजिक चर मापने बहुत मुश्किल है।	• अर्थशास्त्र एक विशेष विज्ञान है। • अर्थशास्त्र का दृष्टिकोण आर्थिक है। • अर्थशास्त्र के अध्ययन की प्रकृति व्यक्तिवादी है। • अर्थशास्त्र में, आर्थिक चर को सटीक रूप से मापा जा सकता है एवं इसे मात्रा में अकिंत किया जा सकता है।

समाजशास्त्र और राजनीति विज्ञान में संबंध :

समाज शास्त्र	राजनीति विज्ञान
• समाजशास्त्र समाज का विज्ञान है। • समाजशास्त्र दोनो संगठित, अंसगढित समाजो का अध्यन करते है • समाजशास्त्र का व्यापक दायरा है। • समाजशास्त्र मूल रूप से व्यक्ति का एक सामाजिक पशु के रूप मे अध्यन करता है। • समाजशास्त्र का दृष्टिकोष समाजशास्त्रीय है यह वैज्ञानिक विधियो के अतिरिक्त अपनी विधियों का अनुसरण करता है।	• राजनीतिक विज्ञान राज्य और सरकार का विज्ञान है। • राजनीतिक विज्ञान केवल राजनैतिक रूप से संगढित समाजो का अध्यन करता है। • राजनीतिक विज्ञान एक संकीर्ण क्षेत्र वाला विज्ञान है। • राजनीतिक विज्ञान एक राजनीतिक पशु के रूप मे मनुष्य का अध्यन करता है। • राजनीतिक विज्ञान का दृष्टिकोण राजनैतिक है।

- **समाजशास्त्र और इतिहास में संबंध :**

समाज शास्त्र	इतिहास
• समाजशास्त्र वर्तमान सामाजिक घटनाओ के अध्यन मे रूचि रखता है। • समाजशास्त्र विश्लेषणात्मक और व्याख्यात्मक विज्ञान है। • समाजशास्त्र सामान्य विज्ञान है। • समाजशास्त्र प्रश्नावली सर्वेक्षण, साक्षात्कार, विधियो आदि का उपयोग करता है। • समाजशास्त्र द्वारा सामन्यीकृत तथ्यो के लिये परीक्षण और पुनः परीक्षण संभव है। • समाजशास्त्र का एक विस्तृत दायरा है। • समाजशास्त्र एक युवा विज्ञान है।	• इतिहास पिछली घटनाओ में रूचि रखता है। • इतिहास एक वर्णनात्मक विज्ञान है। • इतिहास एक विशिष्ट विज्ञान है। • इतिहास अज्ञात के बारे मे जानने के लिये कालक्रम, सिक्के आदि का उपयोग करता है। • इतिहास में उल्लेखित घटनाओ के लिए परीक्षण और पुनः परीक्षण संभव नही है। • इतिहास का दायरा संकुचित है। इतिहास सबसे पुराना विज्ञान है।

तुलनात्मक अध्ययन

समाजशास्त्र	अर्थशस्त्र	इतिहास	राजनितिशास्त्र	मनोविज्ञान
1. यह सामाजिक सम्बन्धों का अध्ययन करता है। यह वर्तमान तथा तत्काल बीते हुए समय का अध्ययन करता है।	1. यह केवल आर्थिक गतिविधियाँ का अध्ययन करता है।	1. बीते हुए समय का अध्ययन करता है।	1. यह केवल राज्य के राजनैतिक सिद्धांत तथा सरकारी प्रशासन का अध्ययन करता है।	1. यह व्यक्ति की मनोदशा का अध्ययन करता है।
2. इसका विषय क्षेत्र विशाल है।	2. इसका विषय क्षेत्र सीमित है।	2. इसका विषय क्षेत्र सीमित है।	2. इसका विषय क्षेत्र सीमित है।	2. इसका विषय क्षेत्र सीमित है।
3. इसके अध्ययन के लिए तुलनात्मक तथा समाजमिती विधि प्रयोग की जाती है।	3. इसके अध्ययन के लिए आगमन तथा निगमन विधि प्रयोग की जाती है।	3. इसके अध्ययन के में विवरणात्मक विधि का प्रयोग होता है।	3. इसके अध्ययन में तुलनात्मक विधि का प्रयोग होता है।	3. इसके अध्ययन में गुणात्मक विधि का प्रयोग किया जाता है।
4. समाजशास्त्र घटनाओं के घटित होने के कारणों को खोजने की कोशिश करता है।	4. दृष्टिकोण आर्थिक है तथा इसका सम्बन्ध व्यक्ति की भौतिक खुशी से है।	4. पुरानी इतिहास घटनाओं को जानकारी देता है। तथा उसके विकास के अलग– अलग चरणों का अध्ययन करता है।	4. यह एक विशेष शास्त्र है। यह केवल व्यक्ति के जीवन के राजनीतिक हिस्से का अध्ययन करता है।	4. मनौवैज्ञानिक व्यक्तिगत आशाओं और भय का अध्ययन करते हैं।

शब्दकोश

पूँजीवाद

- बाजार विनिमय के आधार पर आर्थिक उद्यम की एक प्रणाली।
- ' 'पूंजी'' किसी भी परिसंपत्ति को संदर्भित करती है, जिसमें पैसा, संपत्ति, मशीन और शामिल है, जिसका उपयोग बिक्री के लिए वस्तुओं का उत्पादन करने या लाभ प्राप्त करने की आशा के साथ बाजार में निवेश करने के लिए किया जा सकता है।
- यह संपत्ति के निजी स्वामित्व और उत्पादन के साधनों पर निर्भर है।

द्वंद्वात्मक

- सामाजिक बलों का विरोध करने या अस्तित्व की कारवाई, उदाहरण के लिए सामाजिक बोध और व्यक्तिगत इच्छा है।

आनुभाविक जांचः

- सामाजिक अध्ययन के किसी दिए गए क्षेत्र में एक वास्तविक जांच की गई।

तथ्यात्मक पूछताछः

- तथ्यात्मक या वर्णनात्मक पूछताछ। इसका उद्देश्य मूल्यों मूद्दों को समझने और हल करने के लिए आवश्यक तथ्यों को प्राप्त करना है।

सामाजिक प्रतिबंधः

- समूह और समाज जिनका हम एक हिस्सा है जब वे हमारे व्यवहार पर एक अनुकूलित प्रभाव ड़ालते है।

मूल्यः

- मानव व्यक्ति या समूहों के विचार जो वांछनीय, उचित अच्छे या बुरे के बारे में है।

नस्ल / जातीयता

- नस्ल साझा सांस्कृतिक प्रथाओं, दृष्टिकोणों और भेदों को संदर्भित करता है जो लोगों को दूसरे से अलग करते है।

अथवा

जातीयता एक साझा सांस्कृतिक विरासत है। विभिन्न जातीय समूहों को अलग करने वाली विशेषताएं वंश, इतिहास की भावना, भाषा, धर्म और पोशाक के रूप हैं।

उपनिवेशवादः

- यह किसी अन्य देश पर पूर्ण या आंशिक राजनैतिक नियन्त्रण प्राप्त करने, इसे बसने वालों के कब्जा करने और आर्थिक रूप से इसका शोषण करने की नीति या अभ्यास को संदर्भित करता है

कारखाना उत्पादनः

- एक कारखाना उत्पादन या विनिर्माण संयंत्र एक और औद्योगिक स्थल है, जिसमें आम तौर पर भवनों और मशीनरी या अधिक जटिल होते है, जिनमें कई इमारतों होते है, जहाँ श्रमिक सामान का निर्माण अधिक करते है या मशीनों को एक उत्पाद से दूसरे में संसाधित करते हैं।

1 अंक वाले प्रश्न

सही विकल्प चुने :

1. "sociological imagination" के बारे में बात करने वाले पहले विद्वान कौन थे?

   (क) सी. डब्ल्यू. मिल्स (ख) मैक्स वेबर

   (ग) ए. एम. शाह (घ) एम. एन. श्रीनिवास

2. सामाजिक परिवर्तन–धार्मिक, आध्यात्मिक (तात्विक) और वैज्ञानिक (प्रत्यक्षात्मक) के चरणों द्वारा दिया गया है–

   (क) कार्ल मार्क्स (ख) एमिल दुर्खीम

(ग) आगस्ट कॉम्टे (घ) हर्बर्ट स्पेंसर

3. कार्य / व्यवहार के सामाजिक मान्यता प्राप्त तरीके समाज के ....हैं। नीचे दिए गए विकल्पों में से रिक्त स्थान भरें–

(क) अवज्ञा (ख) प्रतिबंध

(ग) विचलन (घ) कानून

4. निम्नलिखित में कौन–कौन सी समाज की विशेषताएँ हैं?

(क) सहयोग व संघर्ष (ख) पारस्परिक जागरुकता

(ग) आत्मनिर्भरता (घ) उपरोक्त सभी

5. किस समाज में प्रत्यक्ष और अनौपचारिक संबंधों की प्रधानता होती है?

(क) पुरातन समाज (ख) आधुनिक समाज

(ग) सरल समाज (घ) जटिल समाज

रिक्त स्थान पूर्ण करें :

1. 'समाजशास्त्र' शब्द अगस्ट कॉम्टे द्वारा वर्ष ..... ई० में गढ़ा गया था।
2. .....बाजार विनिमय पर आधारित एक आर्थिक प्रणाली है।
3. ..... और ..... प्रबुद्धता आंदोलन के दौरान परिभाषित सिद्धांत बन गए।
4. ..... और ..... के बीच का संबंध समाजशास्त्रीय कल्पना के माध्यम से पता चलता है।
5. ..... के अनुसार समाज सामाजिक सम्बन्धों का जाल है।

कथन ठीक करें :

1. समाजशास्त्र राज्य का अध्ययन है जबकि राजनीति विज्ञान एक विशेष विज्ञान है।

2. सोशल एंथ्रोपोलॉजी आधुनिक समाज का अध्ययन है जहां समाजशास्त्र आदिम समाजों का अध्ययन है।
3. "सामान्य समझ" ज्ञान का आधार तर्कसंगत सोच नही है।
4. औद्योगिक क्रांति की मुख्य विशेषता पर्यावरण प्रदूषण नही थी।
5. 'पश्चिमी अनुशासन के रूप में समाजशास्त्र का उदय अफ्रीका में हुआ था।

सही / गलत

1. अगस्ट काम्टे समाजशास्त्र के जनक कहे जाते है। (सही / गलत)
2. पशु समाज की अपनी एक संस्कृति होती है। (सही / गलत)
3. नए समाजो के उभरने का एक ओर संकेतक था घड़ी के अनुसार समय का महत्व। (सही / गलत)
4. इंग्लैंड औद्योगिक क्रान्ति का केन्द्र था। (सही / गलत)
5. अंग्रेजी कारखानों के मशीनों द्वारा तैयार माल के आगमन से भारी तादाद में भारतीय दस्तकार बरबाद हो गये। (सही / गलत)

2 अंक वाले प्रश्न

1. समाज से आप क्या समझते हैं?
2. समाजशास्त्र का जनक किसे माना जाता है?
3. समाजशास्त्र का क्या अर्थ है?
4. भारतीय समाज की असमानताओं की चर्चा कीजिए?
5. पूँजीवाद का अर्थ स्पष्ट कीजिए।
6. अनुभाविक अन्वेषण से आप क्या समझते हैं?
7. नगरीकरण के दो प्रभाव बताइए।
8. समष्टि और व्यष्टि समाजशास्त्र में अंतर बताइए।

9. पूंजीवाद क्या है?
10. सामाजिक प्रतिबंध परिभाषित करें।
11. मूल्य क्या है?
12. अनुभवजन्य जांच क्या है?

4 अंक वाले प्रश्न

1. समाज की प्रमुख विशेषताएँ।
2. भारत में समाजशास्त्र की उत्पत्ति के संबंध में आप क्या जानते हैं?
3. समाजशास्त्र और इतिहास में संबंध स्थापित कीजिए।
4. औद्योगीकरण से समाज में आए बदलावों की चर्चा कीजिए।
5. उपनिवेशवाद के दौरान भारतीय दस्तकारों की दशा दयनीय क्यों थी?
6. समाजशास्त्र का अध्ययन क्यों आवश्यक है?
7. सरल समाज और जटिल समाज में अंतर स्पष्ट कीजिए।
8. ''मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है'' इस कथन को स्पष्ट कीजिए।
9. समाजशास्त्र और अर्थशास्त्र में अंतर स्पष्ट कीजिए।
10. कैसे राजनीतिक विज्ञान से समाजशास्त्र अलग है स्पष्ट करे?
11. समाजशास्त्र और मनोविज्ञान में अंतर स्पष्ट कीजिए।

6 अंको वाले प्रश्न

1. ''समाजशास्त्र सभी सामाजिक विज्ञानों के मध्य सबका है।'' इस कथन की व्याख्या कीजिए।
2. ''भारतीय समाज जिसमें विभिन्नता में एकता के दर्शन होते हैं।'' इस कथन का आशय स्पष्ट कीजिए।
3. समाज के बहुलवादी परिप्रेक्ष्य की चर्चा कीजिए।

- **स्रोत आधारित प्रश्न**

प्र॰ 1 स्रोत को पढ़ें तथा निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दे।

कारखाने को एक आर्थिक कठोर नियंक्षण के रूप मे देखा गया जो अभी तक बैरको और जेलो तक था। कुछ के अनुसार जैसे मार्म्स, कारखाना दमनकारी था। फिर भी काफी हद तक स्वतंन्त्रता को गुजाइश थी।

(अ) श्रम विभाजन से क्या अभिप्राय है। (1)

(ब) कारखाना दमनकारी था ये किसके द्वारा कहा गया इसके पक्ष मे तर्क दीजिए। (1)

प्र॰ 2 स्रोत को पढ़ें तथा निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दें।

भारत स्वयं परम्परा और आधुनिकता का, गाँव और शहर का, जाति और जनजाति का, वर्ग एव समुदाय का एक जटिल मिश्रण है। गाँव राजधानी दिल्ली के बीचो–बीच निवास करते है। काल सेन्टर देश के विभिन्न कस्बो से यूरोपीय और अमेरिकी ग्राहको को सेवा करते है।

(अ) सरल समाज एव जटिल समाज में अन्तर बताइऐ (1)

(ब) काल सेन्टर किसे कहते है। (1)

अध्याय-2

समाजशास्त्र में प्रयुक्त शब्दावली, संकल्पनाएँ एंव उनका उपयोग

इस पाठ मे हम जानेगे:

- सामाजिक समूह एव समाज
- प्रस्थिति और भूमिका
- सामाजिक स्तरीकरण
- सामाजिक नियन्त्रण

कुछ मुख्य समाज शास्त्रीय संकल्पनाएं

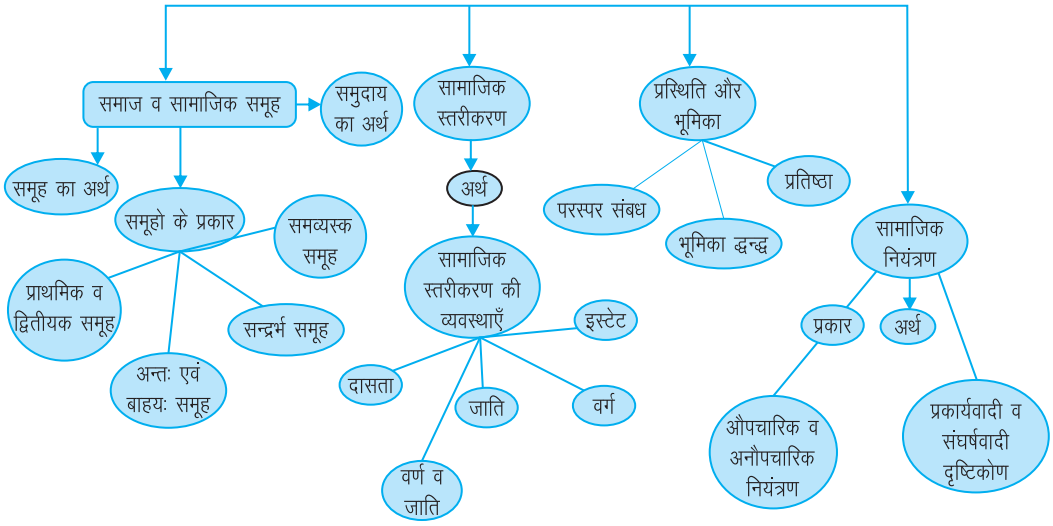

स्मरणीय बिन्दु :

- **सामाजिक समूह** से हमारा अभिप्राय व्यक्तियों के किसी भी ऐसे संग्रह से है जो आपस में एक–दूसरे के साथ सामाजिक संबंध रखते हैं।
- **सामाजिक समूह की विशेषताएँ :**

(1) दो या दो से अधिक व्यक्तियों का होना।

सामाजिक समूह	अर्द्ध समूह
1. सामाजिक समूह के सदस्यों में आपसी सम्बन्ध पाऐ जाते है।	1. एक अर्ध समूह एक समुच्चय अथवा समायोजन होता है। जिसमें संरचना अथवा संगठन की कमी होती है।
2. सामाजिक समूह में व्यक्तियों में एकत्रता नहीं बल्कि समूह ही के सदस्यों में आपसी सम्बन्ध होते है।	2. समुच्चय सिर्फ लोगों का जमावड़ा होता है। जो एक समय में एक ही स्थान पर एकत्र होते हैं जिनका आपस में कोई निश्चित सम्बन्ध नहीं होता। उदाहरण – रेलवे स्टेशन, बस स्टाप इत्यादि।
3. हम की भावना पाई जाती है। एक इसी कारण व्यक्ति आपस में एक दूसरे के साथ जुडें होते है। जैसे – हमदर्दी, प्यार आदि।	3. अर्ध समूह विशेष परिस्थितियों में सामाजिक समूह बन सकते हैं। जैसे – समान आयु एंव लिंग आदि।

(2) सामान्य स्वार्थ, उद्देश्य या दृष्टिकोण।

(3) सामान्य मूल्य।

(4) प्रत्यक्ष अथवा अप्रत्यक्ष संबंध।

(5) समूह में कार्यो का विभाजन।

- **सामाजिक समूह के प्रकार :**

(1) चार्ल्स कूले के अनुसार– प्राथमिक समूह, द्वितीयक समूह।

(2) अंतः समूह और बाह्य समूह।

(3) संदर्भ समूह।

(4) समवयस्क समूह

(5) समुदाय और समाज

- **प्राथमिक समूह** संबंधों की पूर्णता और निकटता को व्यक्त करने वाले व्यक्तियों के छोटे समूह हैं।

  उदाहरण – परिवार, बच्चों का खेल समूह, स्थायी पड़ोस।

- द्वितीयक समूह वे समूह हैं जो घनिष्ठता की कमी अनुभव करते हैं।

  उदाहरण – विभिन्न राजनैतिक दल, आर्थिक महासंघ।

- **प्राथमिक समूह की विशेषताएँ :**

  (1) समूह की लघुता

  (2) शारीरिक समीपता

  (3) संबंधों की निरंतरता तथा स्थिरता

  (4) सामान्य उत्तरदायित्व

  (5) सम – उद्देश्य

- **द्वितीयक समूह की विशेषताएँ :**

  (1) बड़ा आकार

  (2) अप्रत्यक्ष संबंध

  (3) विशेष स्वार्थो की पूर्ति

  (4) उत्तरदायित्व सीमित

  (5) संबंध अस्थायी

- **अंतः समूह और बाह्य समूह में अंतर :**

अंत समूह	बाह्य समूह
(1) 'हम भावना' पाई जाती है।	(1) 'हम भावना' का अभाव रहता है।
(2) संबंधों में निकटता।	(2) संबंधों में दूरी।
(3) समूह के सदस्यों के प्रति त्याग। और सहानुभूति की भावना।	(3) त्याग और सहानुभूति का औपचारिक ढोंग।
(4) सुख –दुःख की आंतरिक भावना।	(4) सुख –दुःख का बाहरी रूप।

- **संदर्भ समूह :**
  - एक व्यक्ति या लोगों का कोई समूह, जो किसी की तरह दिखने की इच्छा रखते है।
  - व्यक्ति या समूह जिनकी जीवनशैलियों का अनुकरण किया जाता है।
  - हम एक संदर्भ समूह से संबंधित नहीं है। लेकिन हम उस समूह के साथ खुद को पहचानते हैं।
  - संदर्भ समूह संस्कृति, जीवनशैली, आकाक्षाँ और लक्ष्य उपलब्धियों के बारे में जानकारी का महत्वपूर्ण स्रोत होता है।
- **औपनिवैशिक अवधि में संदर्भ समूहः**
  - कई मध्यम श्रेणी के भारतीयों ने उचित अंग्रेज विशेष रूप से महत्वाकांक्षी अनुभाग की तरह व्यवहार करने की इच्छा व्यक्त की।
  - इस प्रक्रिया को प्रस्तुत किया गया था, यानी पुरूषों और महिलाओं के लिए इसका अलग–अलग प्रभाव पड़ा।
  - अक्सर भारतीय पुरूष ब्रिटिश पुरूषों की तरह कपड़े पहनना और भोजन करना चाहते थे।
  - भारतीय महिलाएं अपने तरीके से 'भारतीय' बनी रहीं। या कभी–कभी उचित अंग्रेजी महिला की तरह थोड़ा सा होने की इच्छा होती है लेकिन वह उसे पसंद नहीं करती है।
- **समकालीन अवधि में संदर्भ समूह**
  - एक विपणन परिप्रेक्ष्य से, संदर्भ समूह ऐसे समूह होते है जो व्यक्तियों के लिए उनकी खरीद या खपत निर्णयों में संदर्भ के फ्रेम के रूप में कार्य करते हैं।
  - कपड़ो को खरीदने और पहननें के लिए चुनने में, उदाहरण के लिए, हम आम तौर पर हमारे आसपास के लोगों, जैसे मित्र या सहकर्मी

समूह, सहयोगियों या स्टाइलिस्ट संदर्भ समूहों को संदर्भित करते है।

- विभिन्न क्षेत्रों में खेल, संगीत, अभिनय, और यहां तक कि कॉमेडी सहित विभिन्न क्षेत्रों में एक विविध श्रेणी की हस्तियां।
- सहकर्मी दबाव किसी के साथियों को किए जाने वाले सामाजिक दबाब को संदर्भित करता है। जैसे– किसी कार्य को करना चाहिए कि नहीं।

- **समवयस्क समूह :**

यह एक प्रकार का प्राथमिक समूह है, जो सामान्यतः समान आयु के व्यक्तियों के बीच अथवा सामान्य व्यवसाय के लोगों के बीच बनता है।

समुदाय	समाज
समुदाय से तात्पर्य उन तरह के सम्बन्धों से है जो बहुत आधुनिक अधिक वैयक्तिक, घनिष्ठ अवैयक्तिक और चिरस्थायी होते है।	यहाँ समाज या संघ का तात्पर्य हर समुदाय के विपरीत है। विशेषतः नगरीय जीवन के सम्बन्ध स्पष्टतः बाहरी और अस्थायी होते हैं।

- **सामाजिक स्तरीकरण :**

समाज के अंर्तगत पाए जाने वाले विभिन्न समूहों का ऊँच–नीच या छोटे–बड़े के आधार पर विभिन्न स्तरों में बँट जाना ही 'सामाजिक स्तरीकरण' कहलाता है।

- **सामाजिक स्तरीकरण की विशेषताएँ :**

(1) स्तरीकरण की प्रकृति सामाजिक है।

(2) स्तरीकरण काफी पुराना है।

(3) प्रत्येक समाज मे स्तरीकरण पाया जाता है।

(4) स्तरीकरण के विभिन्न स्वरूप होते हैं आयु, वर्ग, जाति।

(5) स्तरीकरण से जीवनशैली में विभिन्नता पाई जाती है।

- **जाति के आधार पर स्तरीकरण :**

(1) जाति व्यवस्था के स्तरीकरण में ब्राह्मण सबसे ऊँचे स्तर पर हैं तथा शुद्र निम्न स्तर पर है।

(2) यह स्तरीकरण अब पूर्णतया बंद है।

(3) जाति संरचना में प्रत्येक जाति का संस्तरण ऊँच–नीच के आधार पर बना हुआ है।

(4) जो व्यक्ति जिस जाति में जन्म लेता है, समाज में उसे उसी जाति का संस्तरण प्राप्त होता है।

(5) समाज को चार वर्णों मे विभाजित किया गया है– ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य तथा शुद्र।

- **जाति व्यवस्था के बदलते प्रतिमान :**

(1) खान – पान संबंधी प्रतिबंधों में परिवर्तन।

(2) व्यवसायिक प्रतिबंधों में परिवर्तन।

(3) विवाह संबंधी प्रतिबंधों में परिवर्तन।

(4) शिक्षा संबंधी प्रतिबंधों में परिवर्तन।

- **वर्ग के आधार पर स्तरीकरण :**

(1) वर्ग के आधार पर स्तरीकरण जन्म पर आधारित नहीं है वरन् कार्य, योग्यता, कुशलता, शिक्षा, विज्ञान आदि पर आधारित है।

(2) वर्ग के द्वार सबके लिए खुले हैं।

(3) व्यक्ति अपने वर्ग को बदल सकता है और प्रयास करने पर सामाजिक स्तरीकरण में ऊँचा स्थान प्राप्त कर सकता है।

(4) **वर्ग के प्रकार** → उच्च वर्ग, मध्यम वर्ग, निम्न वर्ग, कृषक वर्ग

- **जाति और वर्ग में अंतर :**

जाति	वर्ग
1. जाति जन्म आधारित है।	1. सामाजिक प्रस्थिति पर आधारित है।
2. जाति एक बंद समूह है।	2. वर्ग एक खुली व्यवस्था है।
3. विवाह, खान–पान आदि के कठोर नियम हैं।	3. वर्ग में कठोरता नहीं है।
4. जाति व्यवस्था स्थिर संगठन है।	4. वर्ग व्यवस्था जाति व्यवस्था के मुकाबले कम स्थिर है।
5. यह प्रजातंत्र व राष्ट्रवाद प्रतिकूल है।	5. प्रजातंत्र और राष्ट्रवाद में बाधक नहीं है।

- **सामाजिक प्रस्थिति** : प्रस्थिति व्यक्ति को समाज में प्राप्त स्थान है। प्रस्थिति को प्रमुख तौर पर दो भागों में रॉल्फ लिंटन ने बाँटा है :

  (1) **प्रदत्त प्रस्थिति** : यह प्रस्थिति जन्म पर आधारित होती है जोकि बिना किसी प्रयास के स्वतः ही मिल जाती है। प्रदत्त प्रस्थिति के आधार निम्नलिखित हैं:–

  1. जाति,
  2. नातेदारी,
  3. जन्म,
  4. लिंग भेद तथा
  5. आयु भेद।

  (2) **अर्जित प्रस्थिति** : जिन पदों या स्थानों को व्यक्ति अपने व्यक्तिगत गुणों के आधार पर प्राप्त करता है, वे अर्जित प्रस्थितियाँ होती हैं। अर्जित प्रस्थिति के आधार निम्नलिखित हैं :–

  1. शिक्षा,
  2. प्रशिक्षण,
  3. धन,
  4. दौलत,
  5. व्यवसाय तथा 6. राजनीतिक सत्ता।

- **सामाजिक प्रस्थिति**

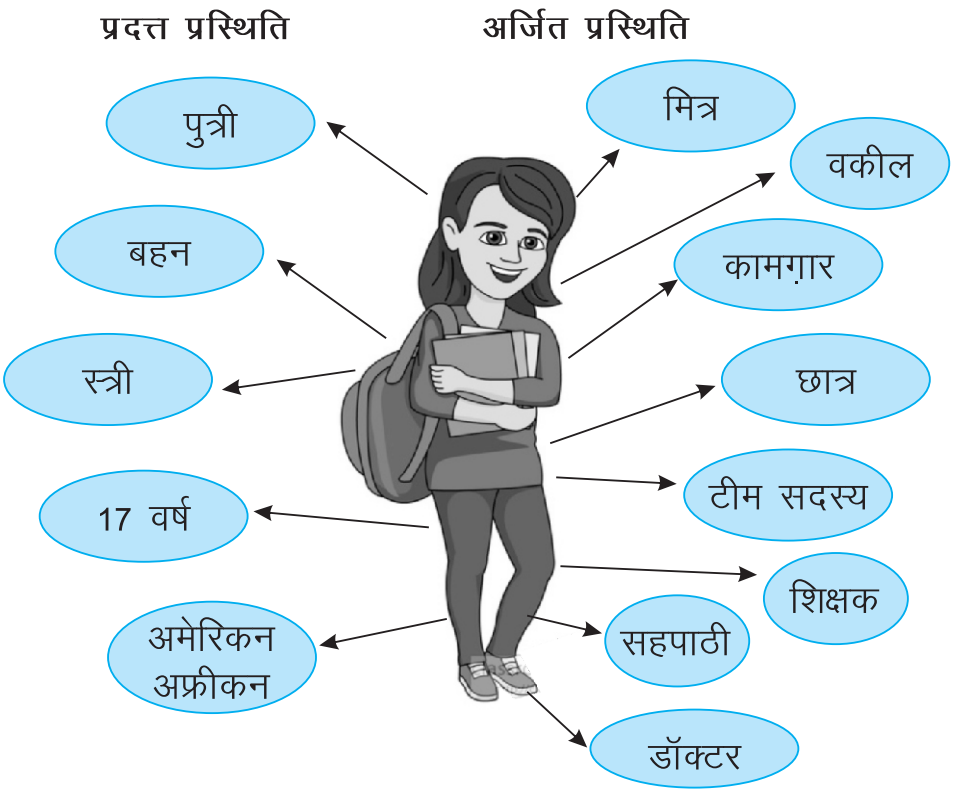

- **प्रस्थिति और प्रतिष्ठा अंतःसंबंधित शब्द हैं :**

  प्रत्येक प्रस्थिति के अपने कुछ अधिकार और मूल्य होते हैं। प्रस्थिति या पदाधिकार से जुड़े मूल्य के प्रकार प्रतिष्ठा कहते हैं। अपनी प्रतिष्ठा के आधार पर लोग अपनी प्रस्थिति को ऊँचा या नीचा दर्जा दे सकते हैं। उदाहरण– एक दुकानदार की तुलना में एक डॉक्टर की प्रतिष्ठा ज्यादा होगी चाहे उसकी आय कम ही क्यों न हो।

- **भूमिका :**

  जिसे व्यक्ति प्रस्थिति के अनुरूप निभाता है। भूमिका प्रस्थिति का गत्यात्मक पक्ष है।

- **भूमिका संघर्ष :**

  यह एक से अधिक प्रस्थितियों से जुड़ी भूमिकाओं की असंगतता है। यह

तब होता हे जब दो या अधिक भूमिकाओं से विरोधी अपेक्षाएँ पैदा होती हैं। उदाहरण– एक मध्यमवर्गीय कामकाजी महिला जिसे घर पर माँ तथा पत्नी की भूमिका में और और कार्य स्थल पर कुशल व्यवसाय की भूमिका निभानी पड़ती है।

- **भूमिका स्थिरीकरण :**

  यह समाज के कुछ सदस्यों के लिए कुछ विशिष्ट भूमिकाओं को सुदृढ़ करने की प्रक्रिया है। उदाहरण– अक्सर पुरूष कमाने वाले और महिलाएँ घर चलाने वाली रूढ़िबद्ध भूमिकाओं को निभाते हैं।

- **सामाजिक नियंत्रण :**

  एक ऐसी प्रक्रिया है, जिसके द्वारा समाज में व्यवस्था स्थापित होती है और बनाए रखी जाती है।

- **सामाजिक नियंत्रण की आवश्यकता या महत्व :**

  (1) सामाजिक व्यवस्था को स्थापित करना।

  (2) मानव व्यवहार को नियंत्रण करना।

  (3) संस्कृति के मौलिक तत्त्वों की रक्षा।

  (4) सामाजिक सुरक्षा।

  (5) समूह में एकरूपता।

- **सामाजिक नियंत्रण के प्रकार :**

  (1) औपचारिक नियंत्रण : जब नियंत्रण के संहिताबद्ध, व्यवस्थित और अन्य औपचारिक साधन प्रयोग किए जाते हैं तो औपचारिक सामाजिक नियंत्रण के रूप में जाना जाता है। उदाहरण– कानून, राज्य, पुलिस आदि। अपराध की गंभीरता के अनुसार यह दंड साधारण जुर्माने से लेकर मृत्युदंड हो सकता है।

  (2) अनौपचारिक नियंत्रण : यह व्यक्तिगत, अशासकीय और असंहिताबाद्ध होता है। उदाहरण– धर्म, प्रथा, परंपरा, रूढि आदि। ग्रामीण समुदाय में जातीय नियमों का उल्लंघन करने पर हुक्का–पानी बंद कर दिया जाता है।

- **सामाजिक नियन्त्रण के दृष्टिकोण**

  (1) प्रकार्यवादी दृष्टिकोण :

  - व्यक्ति और समूह के व्यवहार को नियंत्रित करने के लिए बल का प्रयोग करना।
  - समाज में व्यवस्था बनाए रखने के लिए मूल्यों और प्रतिमानों को लागू करना।

  (2) संघर्षवादी दृष्टिकोण :

  - समाज के प्रभावी वर्ग का बाकी समाज पर नियंत्रण को सामाजिक नियंत्रण के साधन के रूप मे देखते हैं।
  - कानून को समाज में शक्तिशालियों और उनके हितों के औपचारिक दस्तावेज के रूप में देखना।

शब्दकोश

मानदंड़ :

- व्यवहार के नियम जो संस्कृति के मूल्यों को प्रतिबिंबित या जोड़ते हैं।
- यह निर्धारित किया जा सकता है, या किसी दिए गए व्यवहार, या इसे मना कर दिया जा सकता है।
- मानदंड़ों को हमेशा एक तरह से या किसी अन्य की स्वीकृति से समर्थित किया जाता है, जो अनौपचरिक अस्वीकृत से शारीरिक सजा या निष्पादन में भिन्न होता है।

प्रतिबंध :

- इनाम या दंड का एक तरीका जो व्यवहार के सामाजिक रूप से अपेक्षित रूपों को मजबूत करता है।

संघर्ष :

- यह किसी समूह के भीतर उत्पन्न घर्षण या असहमति के कुछ रूपों को संदर्भित करता है जब समूह के एक या एक से अधिक सदस्यों की मान्यताओं या कार्यों को या तो किसी अन्य समूह के एक या अधिक सदस्यों से प्रतिस्पर्ध या अस्वीकार्य किया जाता है।

समुच्चय :

- वे केवल उन लोगों के संग्रह है जो एक ही स्थान पर है, लेकिन एक दूसरे के साथ कोई निश्चित संबंध साझा नहीं करते हैं।

खासी :

- वे उत्तर–पूर्वी भारत में मेघालय के मूल जातीय समूह है

सामाजिक नियंत्रण :

- सामाजिक नियंत्रण सामाजिक एकजुटता और विचलन के बजाय अनुरूपता का मूल माध्यम है। यह व्यक्तियों के व्यवहार, दृष्टिकोण और कार्यों को उनकी सामाजिक स्थिति को संतुलित करने के लिए नियंत्रित करता है।

1 अंक वाले प्रश्न

सही विकल्प चुने :

1. एक सामाजिक समूह की विशेषता हैः
   (क) अपनेपन की भावना का अभाव
   (ख) आमने सामने के सम्बन्ध का अभाव
   (ग) अवैयक्तिक संबंध
   (घ) बातचीत का स्थिर पैटर्न।
2 समाजशास्त्री जिन्हें 1948 में रामपुरा में जनगणना करने का श्रेय दिया गया है।
   (क) एम. एन. श्रीनिवास
   (ख) आगस्ट कॉम्टे
   (ग) डी.पी. मुखर्जी
   (घ) इनमें से कोई भी नहीं
3. प्राथमिक समूह की विशेषता नहीं हैं?
   (क) आमने सामने के संबंध
   (ख) समूह की लघुता
   (ग) समान उदेश्य
   (घ) अप्रत्यक्ष संबंध
4. अंत समूह की विशेषता हैं
   (क) हम की भावना
   (ख) संबंधो में दूरी
   (ग) बड़ा आकार
   (घ) अप्रत्यक्ष संबंध

5. प्रदत प्रस्थिति और अर्जित प्रस्थिति में किस विचारक ने भेद किया हैं।

(क) C.W. मिल्स

(ख) मैक्स वेबर

(ग) कार्ल मार्क्स

(घ) राल्फ लिंटन

रिक्त स्थान भरें :

1. जाति एक स्थिति है जो .....विशेषताओं पर आधारित है।
2. जाति का निर्धारण.....द्वारा किया जाता है, जबकि वर्ग का निर्धारण .....द्वारा किया जाता है।
3. .....का उपयोग आमने सामने के लोगों के एक छोटे समूह से बातचीत करने के लिए किया जाता है।
4. .....व्यवहार के सामाजिक रूप से स्वीकृत रूपों को पुष्ट करता है।
5. .....व्यक्तिगत व्यवहार को विनियमित करने के लिए बल के उपयोग को सही ठहराता है।

कथन को सही करें :

1. वर्ग पर आधारित स्तरीकरण जन्म से निर्धारित होता है।
2. बाह्य समूह में अपनेपन की भावना की विशेषता होती है।
3. द्वितीयक समूह आकार में अपेक्षाकृत छोटे होते हैं। जिनमें व्यक्तिगत संबंधों की विशेषता होती है।
4. छात्रों का एक वर्ग अर्ध समूह का एक उदाहरण है।
5. भूमिका संघर्ष समाज मे सदस्यों के लिए कुछ विशिष्ट भूमिका को मजबूत करने की प्रक्रिया है।

सही / गलत :

1. 'समुच्चय' सिर्फ लोगों का जमावड़ा होता है जो एक समय में एक ही स्थान पर होते हैं लेकिन एक–दूसरे से निश्चित संबंध नहीं होते हैं। (सही / गलत)
2. परिवार, ग्राम और मित्रों के समूह द्वितीयक समूहों के उदाहरण हैं। (सही / गलत)
3. प्रस्थिति और भूमिका पहले से निर्धारित होती है। (सही / गलत)
4. दास प्रथा असमानता का चरम रूप है। (सही / गलत)
5. सामाजिक नियंत्रण केवल औपचारिक ही हो सकता है। (सही / गलत)

2 अंक वाले प्रश्न

1. सामाजिक समूह से आप क्या समझते हैं ?
2. संदर्भ समूह किसे कहते हैं ?
3. भूमिका से क्या तात्पर्य है ?
4. प्रदत्त तथा अर्जित प्रस्थिति में अंतर बताइए ।
5. प्राथमिक समूह की परिभाषा दीजिए।
6. अंतः समूह की परिभाषा दीजिए।
7. समुदाय से आप क्या समझते हैं ?
8. समवयस्क समूह किसे कहते हैं ?
9. सामाजिक स्तरीकरण से आप क्या समझते हैं ?
10. सामाजिक नियंत्रण को समझाएँ ?
11. जाति आधारित स्तरीकरण से क्या अभिप्राय है ?
12. जाति व्यवस्था के बदलते प्रतिमानों के दो आधारों का उल्लेख कीजिए।
13. वर्ग स्तरीकरण के दो प्रमुख आधार लिखिए।
14. भूमिका संघर्ष से आप क्या समझते हैं ?

4 अंक वाले प्रश्न

1. सामाजिक प्रस्थिति का अर्थ स्पष्ट कीजिए तथा इसके दो भेदों के नाम बताइए।
2. द्वैतीयक समूह क्या है ? द्वैतीयक समूहों की कोई दो विशेषताएँ बताइए।
3. सामाजिक समूह की विशेषताएँ लिखिए ।
4. सामाजिक स्तरीकरण की विशेषताओं का वर्णन कीजिए।
5. जाति और वर्ग में अंतर बताइए।
6. सामाजिक नियंत्रण के महत्व लिखिए।
7. सामाजिक नियंत्रण के प्रकारों की चर्चा उदाहरणों सहित कीजिए।
8. भूमिका स्थिरीकरण को उदाहरण सहित समझाएँ।
9. अर्जित प्रस्थिति किसे कहते हैं ? उदाहरण देते हुए दो आधार लिखिए।

6 अंक वाले प्रश्न

1. ''जाति एक बंद स्तरीकरण है जबकि वर्ग एक खुला स्तरीकरण।'' इस कथन को स्पष्ट कीजिए।
2. ''प्रस्थिति और प्रतिष्ठा अंतःसंबंधित शब्द हैं।'' इस कथन को स्पष्ट कीजिए।
3. भूमिकाओं के संदर्भ में आप 'कार्य ग्रहण' और 'कार्य प्रत्याशा' से क्या समझते हैं ? उदाहरण सहित समझाएँ।
4. प्रदत्त प्रस्थिति से आप क्या समझते हैं ? प्रदत्त प्रस्थिति के कोई चार आधारों की चर्चा कीजिए।

स्रोत आधरित प्रश्न

प्र॰1 स्रोत को पढे तथा निम्नलिखित प्रश्नो के उत्तर दे।

भारत मे जाति व्यवस्था मे समय के साथ–साथ बहुत से परिर्वतन आए हैं। कथित उच्च जातियों की पवित्रता को बनाऐ रखने के लिए अन्तःविवाह और अनुष्ठाानो मे कथित निम्न जाति के सदस्यो की अनुपस्थिति बहुत आवश्यक मानी जाती थी।

(अ) जाति आधिक्रम किसे कहते है? (1)

(ब) जाति व्यवस्था के बदलाते प्रतिमानो के दो आधारो का उल्लेख कीजिए। (1)

प्र॰2 प्रदत प्ररिथति एक सामाजिक स्थिति है जो एक व्यक्ति जन्म से अथवा अनैच्छिक रूप से ग्रहण करता है। प्रदत प्रस्थिति का सामान्य आधार आयु, जाति, प्रजाति और नातेदारी है। सरल और परंपरागत समाज प्रदत प्रस्थिति से चिन्हित होते है।

(अ) सामाजिक प्रस्थिति के प्रकारो के नाम बताइए। (1)

(क) प्रदत प्रस्थिति के कोई दो आधार लिखिए। (1)

अध्याय-3

सामाजिक संस्थाओं को समझना

इस पाठ में हम जानेगे:

- सामाजिक सस्थाओं का अर्थ
- महत्वपूर्ण सामाजिक संस्थाएँ
  - परिवार, विवाह एव नातेदारी
  - कार्य
  - राजनीति
  - धर्म
  - शिक्षा

स्मरणीय बिन्दु :

- **सामाजिक संस्थाओं** को सामाजिक मानकों, आस्थाओं, मूल्यों और समाज की आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए निर्मित संबंधों की भूमिका के जटिल ताने–बाने के रूप में देखा जाता है।
- **महत्वपूर्ण सामाजिक संस्थाए हैं :**

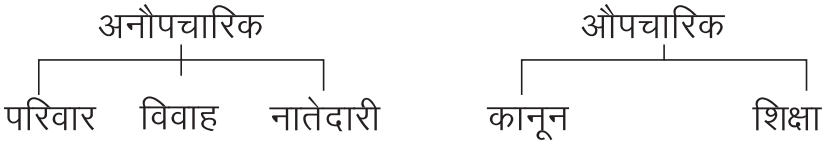

– संस्था उसे कहा जाता है जो स्थापित या कम से कम कानून या प्रथा द्वारा स्वीकृत नियमों के अनुसार कार्य करती है और उसके नियमित तथा निरंतर कार्यचालन को इन नियमों को काम जाने बिना समझा नहीं जा सकता। संस्थाएँ व्यक्तियों पर प्रतिबंध लगाती हैं, साथ ही ये व्यक्तियों को अवसर भी प्रदान करती हैं।

सामाजिक संस्थाएँ सामाजिक जरूरतों को पूरा करने के लिए विद्यमान होती हैं।

- मूल परिवार को औद्योगिक समाज की आवश्यकताएँ पूरी करने वाली एक सर्वोत्तम साधन संपन्न इकाई के रूप में देखा जाता है। ऐसे परिवार में घर का एक सदस्य घर से बाहर कार्य करता है और दूसरा सदस्य घर व बच्चों की देखभाल करता है।

विभिन्न समाजों में परिवार के विभिन्न स्वरूप पाए जाते हैं :

1. आवास/स्थान के आधार पर
   - पितृस्थानिक
   - मातृस्थानिक
2. अधिकार और प्रभाव के आधार पर
   - पितृसत्तात्मक
   - मातृसत्तात्मक
3. वंश के आधार पर
   - पितृवंशीय
   - मातृवंशीय

– जन्म का परिवार और प्रजनन का परिवार।

– एकल परिवार और संयुक्त परिवार।

- **परिवार के स्वरुपों में परिवर्तन**

1. संयुक्त परिवारों का टूटना
2. पारिवारिक व्यवसायों में कमी
3. स्त्रियों का शिक्षित और आत्मनिर्भर होना

4. आर्थिक असुरक्षा के कारण देरी से विवाह या विवाह न करना
5. नगरों में संबंध विच्छेद व तलाक के मामलों का बढ़ना

- **महिला प्रधान घर/परिवार**

  जब पुरूष शहरी क्षेत्रों में चले जाते हैं तो महिलाओं को हल चलाना पड़ता है और खेती के कार्यो का प्रबंध करना पड़ता है। कई बार वे अपने परिवार की एकमात्र भरण–पोषण करने वाली बन जाती हैं। ऐसे परिवारों को "महिला–प्रधान घर" कहा जाता है। उदाहरण– उत्तरी आंधप्रदेश में कोलम जनजाती समुदाय।

- **परिवार लिंगवादी होता है–**

  आज भी यही विश्वास है कि लड़का वृद्धावस्था में अभिभावकों की सहायता करेगा और लड़की विवाह करके दूसरे घर चली जाएगीं इस तरह लड़कियों की उपेक्षा की जाती है। कन्या भ्रूण हत्या को बढ़ावा मिलता है। 2001 की जनगणना के अनुसार प्रति हजार लड़को पर 927 लड़कियाँ हैं। समृद्ध राज्यों जैसे– पंजाब, हरियाणा, महाराष्ट्र और पश्चिमी उत्तर प्रदेश में हालात बहुत खराब हैं।

- परिवार प्रत्यक्ष नातेदारी संबंधों से जुड़े संबंधों से जुड़ते व्यक्तियों का एक समूह है। नातेदारी बंधन व्यक्तियों के बीच के वह सूत्र होते हैं जो या तो विवाह के माध्यम से या वंश परम्परा के माध्यम से रक्त संबंधियों को जोड़ते हैं।

- रक्त के माध्यम से बने नातेदारों को समरक्त नातेदार/रक्तमूलक नातेदार और विवाह के माध्यम से बने नातेदारों को वैवाहिक नातेदार/विवाहमूलक नातेदार कहते हैं।

- **विवाह संस्था**

  1. विवाह को दो वयस्क (स्त्री/पुरूष) व्यक्तियों के बीच लैगिक संबंधों की सामाजिक स्वीकृति और अनुमोदन के रूप में परिभाषित किया जाता है।

2.

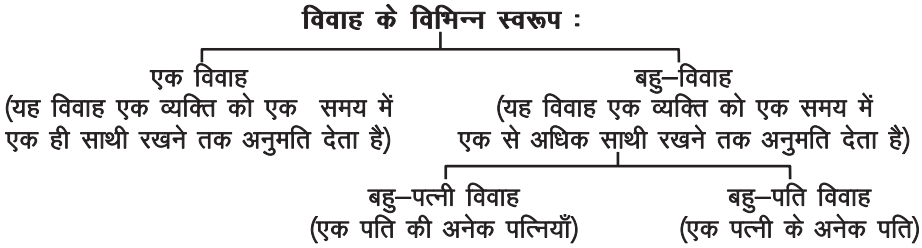

– **अंतर्विवाह** : इस विवाह में व्यक्ति उसी सांस्कृतिक समूह में विवाह करता है जिसका वह पहले से ही सदस्य है। उदाहरण– जाति।

– **बहिर्विवाह** : इस विवाह में व्यक्ति अपने समूह से बाहर विवाह करता है। उदाहरण– गोत्र, जाति और नस्ल।

- **कार्य और आर्थिक जीवन** :

  कार्य को शारीरिक और मानसिक परिश्रमों के द्वारा किए जाने वाले ऐसे सवैतनिक या अवैतनिक कार्यो के रूप में परिभाषित कर सकते हैं जिनका उद्देश्य मानव की आवश्यकताएँ पूरी करने के लिए वस्तुओं और सेवाओं का उत्पादन करना है।

- आधुनिक समाजों की अर्थव्यवस्था की अनेक महत्वपूर्ण विशेषताएँ हैं:
  - अत्याधिक जटिल श्रम विभाजन
  - कार्य के स्थान में परिवर्तन
  - औद्योगिक प्रौद्योगिकी में विकास
  - पूँजीपति उद्योगपतियों के कारखाने
  - विशिष्ट कार्य के अनुसार वेतन
  - प्रबंधक द्वारा कार्यो का निरीक्षण
  - श्रमिक की उत्पादकता बढ़ाना और अनुशासन बनाए रखना
  - परस्पर अर्थव्यवस्था का असीमित विस्तार

- **कार्य रूपांतरण :**
  - औद्योगिक प्रक्रियाएँ सरल संक्रियाओं में विभाजित।
  - थोक उत्पादन के लिए थोक बाजारों की आवश्यकता।
  - उत्पादन की प्रक्रिया में नव परिवर्तन, स्वचालित उत्पादन की कड़ियों का निर्माण।
  - उदार उत्पादन और कार्य विकेंद्रीकरण।
- राजनीति संस्थाओं का सरोकार समाज के दो महत्वपूर्ण पहलू हैं।
  - **शक्ति** : शक्ति व्यक्तियों या समूहों द्वारा दूसरों के विरोध करने के बावजूद अपनी इच्छा पूरी करने की योग्यता है।
  - **सत्ता** : शक्ति का उपयोग सत्ता के माध्यम से किया जाता है। सत्ता शक्ति का वह रूप है जिसे वैध होने के रूप में स्वीकार किया जाता है।
  - राज्यविहीन समाज ऐसा समाज जिसमें सरकार की औपचारिक संस्थाओं का अभाव हो।
  - राज्य की संकल्पना राज्य वहाँ विद्यमान होता है जहाँ सरकार का एक राजनीतिक तंत्र एक निश्चित क्षेत्र पर शासन करता है।
- आधुनिक राज्य प्रभुसत्ता, नागरिकता और अवसर राष्ट्रवादी विचारों द्वारा परिभाषित है :
  - प्रभुसत्ता : प्रभुसत्ता का अभिप्राय एक निश्चित भौगोलिक क्षेत्र पर एक राज्य के अविवादित शासन से है।

नागरिकता के अधिकार :

(1) नागरिक अधिकार : भाषण और धर्म की स्वतंत्रता का अधिकार।

(2) राजनीतिक अधिकार : चुनाव में शामिल होने का अधिकार।

(3) सामाजिक अधिकार : स्वास्थ्य लाभ, समाज कल्याण, बेरोजगारी भत्ता और न्यूनतम मजदूरी निर्धारित करने के अधिकारी।

- **धर्म** : इमाइल दुर्खीम के अनुसार '' धर्म पवित्र वस्तुओं से संबंधित अनेक विश्वासों अनेक विश्वासों और व्यवहारों की एक ऐसी संगठित व्यवस्था है जो व्यक्तियों को एक नैतिक समुदाय की भावना में बाँधती है जो उसी प्रकार विश्वासों और व्यवहारों को अभिव्यक्त करते हैं।''
- **सभी धर्मों की समान विशेषताएँ हैं** :

1. प्रतीको का समुच्चय, श्रद्धा या सम्मान की भावनाएँ
2. अनुष्ठान या समारोह
3. विश्वासकर्ताओं का एक समुदाय
4. धर्म के साथ संबद्ध अनुष्ठान विविध प्रकार के होते हैं।

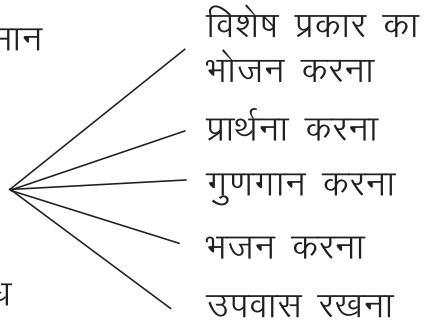

5. सामाजिक शक्तियाँ हमेशा और अनिवार्यतः धार्मिक संस्थाओं को प्रभावित करती हैं। धार्मिक अनुष्ठान प्रायः व्यक्तियों द्वारा अपने दैनिक जीवन में किए जाते है। धर्म एक पवित्र क्षेत्र है। जो बात सबमें समान है वह है श्रद्धा की भावना, पवित्र स्थानों या स्थितियों की पहचान और उनके प्रति सम्मान की भावना।

- **शिक्षा** : शिक्षा सपूंर्ण जीवन चलने वाली प्रक्रिया है जिसमे सीखने की औपचारिक और अनौपचारिक दोनों प्रकार की संस्थाएँ शामिल हैं।
- शिक्षा स्तरीकरण के मुख्य अभिकर्त्ता के रूप में कार्य करती है :
- सामाजिक–आर्थिक पृष्ठभूमि के आधार पर विभिन्न प्रकार के विद्यालयों में जाते हैं।
- विद्यालयी शिक्षा, संभ्रांत और सामान्य के बीच विद्यमान भेद को और अधिक गहरा करती है।

- विशेषाधिकार प्राप्त विद्यालयों में जाने वाले बच्चों में आत्मविश्वास आ जाता है जबकि इससे वंचित बच्चे इसके विपरीत भाव का अनुभव कर सकते हैं।
- ऐसे और अनेक बच्चे है जो विद्यालय नहीं जा सकते या विद्यालय जाना बीच में ही छोड़ देते हैं।
- लिंग और जातिगत भेदभाव किस तरह शिक्षा के अवसरों का अतिक्रमण करते हैं।

फसल के समय विद्यालय में अनुसूचित जाति एवं जनजाति से बच्चे नहीं आते हैं क्योंकि उनके माता–पिता बाहर काम करते हैं तो उन पर घर की जिम्मेदारी आ जाती है। इन समुदायों की लड़कियाँ कभी–कभार ही विद्यालय आती हैं क्योंकि वे विभिन्न प्रकार के घरेलू और आमदनी वाले कार्य करती हैं।

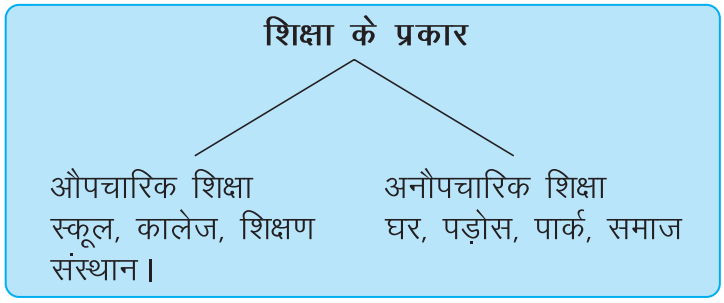

नागरिकः

- उस सदस्यता से जुडे अधिकार और कर्तव्यों दोनों के साथ एक राजनैतिक समुदाय का एक सदस्य।

श्रम विभाजनः

- सभी समाजों में श्रम विभाजन का कुछ प्राथमिकता रूप है।
- इसमें कार्यों की विशेषज्ञता शामिल है।
- विभिन्न व्यवसायों को एक उत्पादन प्रणाली के भीतर संयुक्त किया जाता है।
- औद्योगिकीकरण के विकास के साथ, श्रम का विभाजन किसी भी प्रकार के उत्पादन प्रणाली की तुलना में अधिक जटिल हो जाता है।

- आधुनिक दुनिया में श्रम विभाजन का रूप अंतर्राष्ट्रीय है।
- लिंग को समाज के बुनियादी सिद्धांत के रूप में देखा जाता है।
- व्यवहार के बारे में सामाजिक अपेक्षाएं प्रत्येक लिंग के सदस्यों के लिए उचित मानी जाती है।
- अनुभवजन्य जाचः सामाजिक अध्ययन के किसी दिए गए क्षेत्र में वास्तविक जांच की गई।

अंतःविवाह / अन्तर्विवाह

- जब विवाह एक विशिष्ट जाति, वर्ग या आदिवासी समूह के भीतर होता है।

बाह्यविवाह

- जब विवाह संबंध, संबंधों के एक निश्चित समूह के बाहर होता है।

विचारधाराः

- साझा विचार या मान्यताएँ जो प्रमुख समूहों के हितों को न्यायसंगत साबित करने के लिए काम करते है।
- विचारधारा उन सभी समाजों में पाई जाती है। जिनमें समूहों के बीच व्यवस्थित और अंतनिर्हित असमानताएं होती हैं।
- विचारधारा की अवधारणा शक्ति के साथ निकटता से जुड़ती है, क्योंकि वैचारिक प्रणाली समूह की भिन्न शक्ति को वैध बनाने के लिए काम करती है।

वैधताः

- एक विश्वास जिसमे एक विशेष राजनीतिक आदेश सिर्फ सत्ता से वैधता प्राप्त है।

एकलविवाहः

- जब एक समय में एक स्त्री / पुरूष का एक ही पति अथवा एक पत्नी होती है।

बहुविवाहः

- एक समय में एक स्त्री अथवा पुरूष के एक से अधिक पति / पत्नी पाए जाते हैं।

बहुपति विवाहः

- जब एक से अधिक व्यक्ति एक महिला से विवाहित हैं।

बहुपत्नी विवाहः

- जब एक व्यक्ति से एक से अधिक महिला विवाहित होती हैं।

सेवा क्षेत्रः

- व्यापार उद्योग जैसे विनिर्मित सामानों की बजाय सेवाओं के उत्पादन से संबंधित उद्योग।

राज्य समाजः

- एक समाज जिसमें सरकार का औपचारिक तंत्र है।

1 अंक वाले प्रश्न

सही विकल्प चुने :

1. उस परिवार की संरचना को पहचानें जहाँ पुरूष अधिकार और प्रभुत्व का प्रयोग करते हैं।
   (क) पितृसत्ता
   (ख) मातृ–सत्ता
   (ग) बहुविवाह
   (घ) पितृवंशीय
2. दो व्यक्यिों के बीच सामाजिक रूप से स्वीकृत और स्वीकृत यौन सम्बंध के रूप में जाना जाता हैः
   (क) परिवार
   (ख) शादी
   (ग) नातेदारी
   (घ) प्रसव
3. पुस्तक 'द प्रोटेस्टेंट एथिक एंड द स्पिरिट ऑफ कैपिटलिज्म' किसने लिखा है?
   (क) कार्ल मार्क्स
   (ख) एंथनी गिडेंस
   (ग) मैक्स वेबर
   (घ) एमाइल दुर्खीम
4. शक्ति का वैध स्वरूप क्या हैः
   (क) सत्ता
   (ख) राजनीतिक दल
   (ग) लोक हितकारी दल
   (घ) संप्रभुता

खाली स्थान भरें :

1. .....एक आदमी को एक निश्चित समय में केवल एक पति/पत्नी की अनुमति देता है।
2. अभिजात वर्ग और जनता के बीच मौजूदा विभाजन को .....प्रणाली द्वारा तेज किया जाता है।
3. विशेषाधिकार प्राप्त विद्यालयों में जाने वाले बच्चों में ..... आ जाता है।
4. समाजशास्त्री.....टिप्पणी करते हैं कि स्वतंत्र भारत के बाद संयुक्त परिवार में लगातार वृद्धि हुई है।
5. .....के नियम में एक व्यक्ति को सांस्कृतिक रूप से परिभाषित समूह के भीतर शादी करने की आवश्यकता है।

कथन को ठीक करें:

1. प्रकार्यवादियों के लिए, व्यक्तियों को एक समाज में समान रूप से नहीं रखा जाता है।
2. अंतर्विवाह, एक विवाह प्रथा जो विशिष्ट जाति, वर्ग या जनजातीय समूहों के अंतर्गत प्रचलित नही है।
3. बहुविवाह व्यक्ति को एक समय में एक पति या पत्नी को प्रतिबंधित करता है।
4. शक्ति और प्राधिकरण अंतर–संबंधित अवधारणाएं नहीं हैं।
5. बेटियों को परिवार के करीब रहने के लिए सुनिश्चित करने के लिए ग्राम बहिर्विवाह का अभ्यास किया जाता है।

सही/गलत :

1. बहुविवाह में व्यक्ति एक समय में एक जीवनसाथी से विवाह के लिए प्रतिबंधित होता है। (सही/गलत)
2. राज्यविहीन समाज में अनौपचारिक संस्थाओं का अभाव होता है। (सही/गलत)
3. विश्वासकर्ताओं का एक समुदाय धर्म की विशेषता नहीं है। (सही/गलत)
4. शिक्षा जीवन पर्यन्त चलने वाली प्रक्रिया है। (सही/गलत)
5. प्रार्थना करना, जप करना, अनुष्ठान कृत्यों में शामिल है। (सही/गलत)

2 अंक वाले प्रश्न

1. सामाजिक संस्था से आप क्या समझते हैं ?
2. औपचारिक और अनौपचारिक सामाजिक संस्थाओं के उदाहरण दीजिए।
3. परिवार से क्या तात्पर्य है ?
4. विवाह से आप क्या समझते हैं ?

5. एक विवाह और बहुविवाह मे अन्तर स्पष्ट किजिए।
6. नातेदारी क्या है ?
7. समस्त नातेदार क्या है ?
8. वैवाहिक नातेदारी क्या है ?
9. कार्य से आप क्या समझते हैं ?
10. कार्य के विकेंद्रीकरण से आप क्या तात्पर्य है ?
11. राजनीतिक संस्था से क्या तात्पर्य है ?
12. राष्ट्रवाद से आप क्या समझते हैं ?
13. प्रभुसत्ता से क्या तात्पर्य है ?
14. सामाजिक गतिशीलता क्या है ?
15. राज्यविहीन समाज से क्या समझते हैं ?
16. धर्म से क्या तात्पर्य है ?
17. शिक्षा से क्या तात्पर्य है ?

4 अंक वाले प्रश्न

1. सामाजिक संस्थान, बोध संबंधो के कारण विचारधाराओं का उल्लेख कीजिए।
2. "आर्थिक प्रक्रियाओं के कारण परिवार किस ओर परिवर्तित होते रहते हैं", चर्चा कीजिए।
3. "महिला–प्रधान घर" को उदाहरण सहित समझाइए।
4. विवाह संबंधी नियमों को समझाइये।
5. एक विवाह और बहुविवाह में अंतर स्पष्ट कीजिए।
6. परिवार के स्परूप में आ रहे परिवर्तनों का उल्लेख कीजिए।
7. जनगणनाओं से स्पष्ट होता है कि परिवार लिंगवादी है – समझाइए।
8. "शक्ति का उपयोग सत्ता के माध्यम से किया जाता है" इस कथन का आशय स्पष्ट कीजिए।
9. "नागरिकता के अधिकारों में नागरिक, राजनैतिक और सामाजिक अधिकार शामिल हैं" इस कथन को स्पष्ट किजिए।
10. धर्म के साथ संबद्ध अनुष्ठान विविध प्रकार के होते हैं, उल्लेख कीजिए।
11. "धर्म समाज में महत्वपूर्ण है।" समझाइए।
12. धर्म पर विभिन्न समाजशास्त्रियों के विचारों का उल्लेख कीजिए ।
13. शिक्षा सामाजिक स्तरीकरण के मुख्य अधिकर्ता के रूप में कार्य करती है– स्पष्ट कीजिए।

6 अंक वाले प्रश्न

1. विवाह एक सामाजिक संस्था है, चर्चा कीजिए।
2. आधुनिक समाज में आर्थिक व्यवस्थाओं के विशिष्ट लक्षणों का उल्लेख कीजिए।
3. राज्य की संकल्पना स्पष्ट कीजिए।
4. "शिक्षा जीवनपर्यन्त चलने वाली प्रक्रिया है"– इस कथन को स्पष्ट कीजिए।

स्रोत आधरित प्रश्न

प्र॰1 स्रोत को पढे तथा निम्नलिखित प्रश्नो के उत्तर दे।

साधारण समाजो और जटिल आधुनिक समाजो मे एक गुणात्मक अन्तर है। साधारण समाजो मे औपचारिक विद्यालय जाने की आवश्यकता नही थी। बच्चे बडो के साथ क्रियाकलापो मे शामिल होकर प्रथाओ और जीवन के व्यापक तरीके सीख लेते थे। जटिल समाजो मे हमने देखा है कि श्रम का आर्थिक विभाजन बढ रहा है। घर से कार्मो का विभाजन हो रहा है, विशिष्ट शिक्षा और दक्षता प्राप्त करने की आवश्यकता है, राज्य व्यवस्थाओं, राष्ट्रो और प्रतीको एव विचारो के जटिल समुच्चय की भी उत्पति हो रही है।

(अ) औपचारिक शिक्षा अनौपचारिक शिक्षा से किस प्रकार भिन्न है? (1)

(ब) जैसे–जैसे समाज सरल से जटिल होता गया, शिक्षा मे क्या–क्या परिर्वतन हुऐ? (1)

प्र॰2 स्रोत को पढे तथा निम्नलिखित प्रश्नो के उत्तर दे।

ऐसा कोई कार्म नही था जिसे टिनी की नानी ने जीवन के किसी न किसी अवस्था मे आजमाया न हो। अपना कप उठाने की आयु से ही उसने प्रतिदिन दो वक्त भोजन और पहनने के वस्त्र के बदले लोगो के घरो में विभिन्न तरह के बेमेल कार्य करना आरम्भ कर दिया था। बेमेल कार्यो का सही अर्थ क्या है ये वे ही जान सकते है जिन्होने हंसने और दूसरे बच्चो के साथ खेलने की आयु मे ही वे कार्य किए हैं। बच्चे का झुनझुना हिलाने से लेकर स्वामी के सिर की मालिश करने तक सभी नीरस कार्म 'बेमेल कार्य' मे आ सकते है। (चुगताई 2004:125)

(अ) बेमेल कार्य से आप क्या समझते है (1)

(ब) आपके आस–पास की महिलाऐ किस तरह के बेमेल कार्य करती है। (1)

अध्याय-4

सँस्कृति तथा समाजीकरण

इस पाठ में हम जानेगें:

- सँस्कृति का अर्थ
- सँस्कृति के आयाम
- साँस्कृतिक परिर्वतन
- समाजीकरण
- समाजीकरण के अभिकरण

- सामाजिक अंतःक्रिया के द्वारा सँस्कृति सीखी जाती है। तथा इसका विकास होता है।

  टायरल के अनुसार : "सँस्कृति वह जटिल पूर्णता है जिसके अंतर्गत ज्ञान, विश्वास, कला नीति, कानून , प्रथा और अन्य क्षमताएँ व आदतें सम्मिलित हैं जिन्हें मनुष्य समाज के सदस्य के रूप में ग्रहण करता है।"

- **सँस्कृति–**
  1. सोचने, अनुभव करने तथा विश्वास करने का एक तरीका है।
  2. लोगों के जीने का एक संपूर्ण तरीका है।
  3. व्यवहार का सारांश है।
  4. सीखा हुआ व्यवहार है।
  5. सीखी हुई चीजों का एक भंडार है।
  6. सामाजिक धरोहर है जोकि व्यक्ति अपने समूह से प्राप्त करता है।
  7. बार–बार घट रही समस्याओं के लिए मानवकृत दिशाओं का एक समुच्चय हैं
  8. व्यवहार के मानकीय नियमितिकरण हेतु एक साधन है।

- जीवन तथा सँस्कृति के विविध परिवेश का उद्‌गम विभिन्न व्यवस्था के कारण है।
- आधुनिक विज्ञान तथा तकनीक तक पहुँच होने से आधुनिक साँस्कृतिक द्वीपों में रहने वाली जनजातियां की सँस्कृति सबसे बेहतर नहीं हो जाती।
- **सँस्कृति के आयाम :**
  - **(1) सँस्कृति का संज्ञानात्मक पक्ष :** संज्ञानात्मक का संबंध समझ से है, अपने वातावरण से प्राप्त होने वाली सूचना का हम कैसे उपयोग करते हैं।
  - **(2) मानकीय का पक्ष :** मानकीय पक्ष में लोकरीतियाँ, लोकाचार, प्रथाएँ, परिपाटियाँ तथा कानून शामिल हैं। यह मूल्य या नियम हैं जो विभिन्न संदर्भो में सामाजिक व्यवहार को दिशा निर्देश देते है। सभी सामाजिक मानकों के साथ स्वीकृतियों मानकों के साथ स्वीकृतियाँ होती है जो कि अनुरूपता को बढ़ावा देती है।
  - **(3) सँस्कृति का भौतिक पक्ष :** भौतिक पक्ष औजारों, तकनीकों, भवनों या यातायात के साधनों के साथ–साथ उत्पादन तथा संप्रेषण के उपकरणों से संदर्भित है।
- **सँस्कृति के दो मुख्य आयाम है :**
  1. **भौतिकः** भौतिक आयाम उत्पादन बढ़ाने तथा जीवन स्तर को ऊपर उठाने के लिए महत्वपूर्ण हैं। उदाहरण– औजार, तकनीकी, यंत्र, भवन तथा यातायात के साधन आदि।
  2. **अभौतिकः** संज्ञानात्मक तथा मानकीय पक्ष अभौतिक है। उदाहरण– प्रथाएँ आदि।
- सँस्कृति के एकीकृत कार्यो हेतु भौतिक तथा अभौतिक आयामों को एकजुट होकर कार्य करना चाहिए।

- **साँस्कृतिक पिछड़न** : भौतिक आयाम तेजी से बदलते हैं तो मूल्यों तथा मानकों की दृष्टि से अभौतिक पक्ष पिछड़ सकते हैं। इससे सँस्कृति के पिछड़ने की स्थिति उत्पन्न हो सकती है।

भौतिक सँस्कृति	अभौतिक सँस्कृति
1. भौतिक सँस्कृति मूर्त होती है जिसे हम देख सकते है छू सकते हैं। जैसे– किताब, पैन, कुर्सी आदि।	1. अभौतिक सँस्कृति अमूर्त होती है जिसे हम देख व छू नहीं सकते केवल महसूस कर सकते हैं। जैसे– विचार, आदर्श, इत्यादि।
2. भौतिक सँस्कृति को हम गुणात्मक रूप मे माप सकते है।	2. अभौतिक सँस्कृति को हम गुणात्मक रूप से आसानी से नहीं माप सकते हैं।
3. भौतिक सँस्कृति में परिवर्तन तेजी से आते है क्योंकि संसार मे परिवर्तन तेजी से आते हैं।	3. अभौतिक सँस्कृति में परिवर्तन धीरे–धीरे आते हैं क्योंकि लोगों के विचार धीरे–धीरे बदलते हैं।
4. भौतिक सँस्कृति में किसी नई चीज का अविष्कार होता है। तो इसका लाभ कोई भी व्यक्ति व समाज उठा सकता है।	4. अभौतिक सँस्कृति के तत्वों का लाभ सिर्फ उसी समाज के सदस्य उठा सकते हैं।
5. भौतिक सँस्कृति के तत्व आकर्षक होते हैं इसलिए हम इसे आसानी से स्वीकार कर लेते हैं।	5. अभौतिक सँस्कृति के तत्व आकर्षक नहीं होते इसलिए हम इसमें आने वाले परिवर्तनों को आसानी से स्वीकार नही करते।

- **कानून एंव प्रतिमान में अंतर** :
  1. मानदंड अस्पष्ट नियम हैं जबकि कानून स्पष्ट नियम है।
  2. कानून सरकार द्वारा नियम के रूप में परिभाषित औपचारिक स्वीकृति है।

3. कानून पूरे समाज पर लागू होते हैं तथा कानूनों का उल्लंघन करने पर जुर्माना तथा सजा हो सकती है।
4. कानून सार्वभौमिक रूप से स्वीकृत किए जाते हैं, जबकि मानक सामाजिक परिस्थिति के अनुसार।

- पहचान विरासत में नहीं मिलती अपितु यह व्यक्ति तथा समाज को इनके दूसरे व्यक्तियों के साथ संबंधों से प्राप्त होती है।
- आधुनिक समाज में प्रत्येक व्यक्ति बहुत सी भूमिकाएँ अदा करता है।
- किसी भी सँस्कृति की अनेक उपसंस्कृतियाँ हो सकती हैं, जैसे संभ्रांत तथा कामगाार वर्ग के युवा। उपसंस्कृतियों की पहचान शैली, रूचि तथा संघ से होती है।
- **नृजातीयता** : नृजातीयता से आशय अपने साँस्कृतिक मूल्यों का अन्य संस्कृतियों के लोगों के व्यवहार तथा आस्थाओं का मूल्यांकन करने के लिए प्रयोग करने से है। जब सँस्कृतियाँ एक दूसरे के संपर्क में आती हैं तभी नृजातीयता की उत्पत्ति होती है।
- नृजातीयता विश्वबंधुता के विपरीत है जोकि सँस्कृतियों को उनके अंतर के कारण महत्व देती है।
- विश्वबंधुता पर्यवेक्षण अन्य व्यक्तियों के मूल्यों तथा आस्थाओं का मूल्यांकन अपने मूल्यों तथा आस्थाओं के अनुसार नहीं करता।
- एक आधुनिक समाज साँस्कृतिक विभिन्नता का प्रशंसक होता है।
- एक विश्वव्यापी पर्यवेक्षण प्रत्येक व्यक्ति को अपनी साँस्कृतिक प्रभावों द्वारा सशक्त करने की स्वतंत्रता देता है।
- **साँस्कृतिक परिवर्तन** :

  यह वह तरीका है जिसके द्वारा समाज अपनी सँस्कृति के प्रतिमानों को बदलता है।

सामाजिक परिवर्तन आंतरिक या बाहरी हो सकते हैं :

1. **आंतरिक** : कृषि या खेती करने की नई पद्धतियाँ।
2. **बाहरी** : हस्तक्षेप जीत या उपनिवेशीकरण के रूप में हो सकते हैं।

- प्राकृतिक वातावरण में परिवर्तन अन्य संस्कृतियों से संपर्क या अनुकूलन की प्रक्रियाओं द्वारा सांस्कृतिक परिवर्तन हो सकते हैं।
- क्रांतिकारी परिवर्तनों की शुरूआत राजनीतिक हस्तक्षेप तकनीकी खोज परिस्थितिकीय रूपांतरण के कारण हो सकती है। उदाहरण– फ्रांसीसी क्रांति ने राजतंत्र को समाप्त किया प्रचार तंत्र, इलेक्ट्रॉनिक तथा मुद्रण।
- **समाजीकरण :**

  वह प्रक्रिया है जिसके द्वारा समाज का सदस्य बनना सीखते हैं।
- यह जीवनभर चलने वाली प्रक्रिया है।
- **प्रारम्भिक तथा द्वितीयक समाजीकरण**

  प्राथमिक समाजीकरण : बच्चे का प्राथमिक समाजीकरण उसके शिशुकाल तथा बचपन में शुरू होता है। यह बच्चे का सबसे महत्वपूर्ण एवं निर्णायक स्तर होता है। बच्चा अपने बचपन में ही इस स्तर पर मूलभूत व्यवहार सीख जाता है।

  द्वितीयक समाजीकरण : द्वितीयक समाजीकरण बचपन की अंतिम अवस्था से शुरू होकर जीवन में परिपक्वता आने तक चलता है।
- **समाजीकरण के प्रमुख अभिकरण**

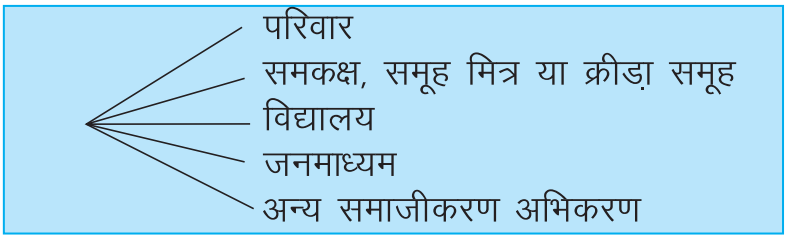

समाजीकरण की प्रक्रिया एक जटिल प्रक्रिया है, जिसमें अनेक संस्थाओं या अभिकरणों का योगदान होता है।

समाजीकरण के प्रमुख अभिकरण इस प्रकार हैं :–

- **परिवार** : समाजीकरण करने वाली संस्था या अभिकरण के रूप में परिवार का महत्व वास्तव में असाधारण है। बच्चा पहले परिवार में जन्म लेता है, और इस रूप में वह परिवार की सदस्यता ग्रहण करता है।
- **समकक्ष, समूह मित्र या क्रीड़ा समूह** : बच्चों के मित्र या उनके साथ खेलने वाले समूह भी एक महत्वपूर्ण प्राथमिक समूह होते हैं। इस कारण बच्चों के समाजीकरण की प्रक्रिया में इनका अत्यंत प्रभावशाली स्थान होता है।
- **विद्यालय** :

  विद्यालय एक औपचारिक संगठन है।

  औपचारिक पाठ्यक्रम के साथ–साथ बच्चों को सिखाने के लिए कुछ अप्रत्यक्ष पाठ्यक्रम भी होता है।
- **जन माध्यम** :

  जन माध्यम हमारे दैनिक जीवन का एक अनिवार्य हिस्सा बन चुके हैं।

  इलेक्ट्रॉनिक माध्यम और मुद्रण माध्यम का महत्व भी लगातार बना हुआ है।

  जन माध्यमों के द्वारा सूचना ज्यादा लोकतांत्रिक ढंग से पहुँचाई जा सकती है।
- **अन्य समाजीकरण अभिकरण** :

  सभी संस्कृतियों में कार्यस्थल एक ऐसा महत्वपूर्ण स्थान है जहाँ समाजीकरण की प्रक्रिया चलती है।

  उदाहरण– धर्म, सामाजिक जाति / वर्ग आदि।
- **वृहत परम्परा** : राबर्ट रेडिफिल्ड के अनुसार बृहत परम्परा से तात्पर्य ऐसे उच्च बौधिक प्रयास से जिनका जन्म बाहर से होता है। इनका सृजन चेतन रूप से विद्यालय एवं देवालय में होता है।

- **लघु परम्परा :** लघु परम्परा से तात्पर्य ऐसे मानसिक प्रभाव से जिनका उदगम (स्थानीय सँस्कृति) में अपने आप होता हे। इनको ही समाज में लोक परम्परा के नाम से जाता जाता है।

शब्दकोश

साँस्कृतिक विकासवादः

- यह सँस्कृति का एक सिद्धांत है, जो तर्क देता है कि प्राकृतिक प्रजातियों की तरह साँस्कृतिक विविधता प्राकृतिक चयन के माध्यम से भी विकसित होती है।

सामंती व्यवस्थाः

- यह सामंती यूरोप में एक प्रणाली थी।
- यह व्यवसायों के अनुसार एक पदक्रम था।
- तीन वर्ग कुलीन, पादरी और तीसरा वर्ग था।
- अंतिम मुख्य रूप से पेशेवर और मध्यम श्रेणी के लोग थे।
- प्रत्येक वर्ग ने अपने स्वयं के प्रतिनिधियो को चुना।
- किसानों और मजदूरों के पास वोट का अधिकार नहीं था।

परंपराः

- इसमें साँस्कृतिक लक्षण या परंपराए शामिल हैं जो लिखी गई है।
- यह शिक्षित समाज के अभिजात वर्ग द्वारा व्यापक रूप से स्वीकार किया जाता है।

लघु परंपराः

- इसमें साँस्कृतिक लक्षण या परंपराए शामिल है जो मौखिक है और गांव के स्तर पर संचालित होती है

स्व छविः

- दूसरों की आंखों में प्रतिबिंबित व्यक्ति की एक छवि।

सामाजिक भूमिकाएँ:

- ये किसी व्यक्ति की सामाजिक स्थिति या स्थिति से जुड़े अधिकार और जिम्मेदारियां है।

समाजीकरण:

- यह वह प्रक्रिया है जिसके द्वारा हम समाज के सदस्य बनना सीखते हैं।

उपसँस्कृति:

- यह एक बड़ी सँस्कृति के भीतर लोगों के एक समूह को चिंहित करता है
- वे खुद को अलग करने के लिए बड़े सँस्कृति के प्रतीक मूल्यों और मान्यताओं से उधार लेते है और अक्सर विकृत अतिरंजित या उलटा करते हैं।

1 अंक वाले प्रश्न

सही विकल्प चुने :

1. साँस्कृति का यह आयाम हमें उन सूचनाओं को संसाधित करने की अनुमति देता हे जिन्हें हम देखते और सुनते हैं।
   (क) मानक
   (ख) सामग्री
   (ग) संज्ञानात्मक
   (घ) अभौतिक
2. कौन सा नियम राज्य से अपने अधिकार प्राप्त करता है?
   (क) आचार
   (ख) मानदंड
   (ग) कानून
   (घ) लोक–रीतियाँ
3. एक के अपने साँस्कृतिक मूल्यों के अनुसार अन्य सँस्कृतियाँ का मूल्यांकन करने की प्रवृत्ति के रूप में जाना जाता है:

(क) महानगरीय संस्कृति

(ख) प्रजातिकेंद्रिकता

(ग) आवास

(घ) सँस्कृति–संक्रमण

4. समाजीकरण की प्राथमिक संस्था की पहचान करें:

(क) मीडिया

(ख) परिवार

(ग) स्कूल

(घ) कार्यस्थल

5. सामंती व्यवस्था कहाँ पर प्रचलित थी?

(क) यूरोप

(ख) अमेरिका

(ग) जापान

(घ) एशिया

खाली स्थान भरें:

1. ..... शब्द का उपयोग संगीत, नृत्य रूपों, पेंटिंग आदि में परिष्कृत स्वाद प्राप्त करने के लिए किया जाता हैं।
2. वह प्रक्रिया जिसके द्वारा जीवन का एक तरीका परिवर्तन .... के रूप में जाना जाता है।
3. सँस्कृति का ..... आयाम विभिन्न संदर्भों में हमारे सामाजिक व्यवहार का मार्गदर्शन करता है।
4. .....समूह शैली, स्वाद और ऐसोसिएशन द्वारा चिह्नत हैं।
5. मशीनों, औजारों, इंटरनेट और कला रूपों का उपयोग संस्कृति के ....पहलू के सभी रूप हैं।

कथन को सही करेः

1. पहचान विरासत में मिली है और दूसरों के साथ अपने रिश्ते के माध्यम से व्यक्ति और समूह द्वारा नए जमाने की है।
2. लघु परम्परा शहरी समाज में पायी जाती हैं।
3. एक आधुनिक समाज विदेशों से साँस्कृतिक मतभेदों और साँस्कृतिक प्रभावों की सराहना नहीं करता है।
4. स्कूल केवल औपचारिक पाठ्यक्रम के माध्यम से बच्चे का समाजीकरण करते हैं।
5. किसी वृहत सँस्कृति के अधीन लोगों के समूह उप–सँस्कृति के द्योतक हैं।

सही / गलत

1. सँस्कृति एक सीखा हुआ व्यवहार है। (सही / गलत)
2. सँस्कृति के चार आयाम हैं। (सही / गलत)
3. मानदण्ड अस्पष्ट नियम हैं जबकि कानून स्पष्ट नियम हैं। (सही / गलत)
4. जब सँस्कृतियाँ एक–दूसरे के सम्पर्क में आती हैं तभी नृजाति केन्द्रवाद की उत्पत्ति होती है। (सही / गलत)
5. समाजीकरण केवल बाल्यकाल में चलने वाली प्रक्रिया है। (सही / गलत)

2 अंक वाले प्रश्न

1. सँस्कृति का क्या अर्थ है ?
2. भौतिक और अभौतिक सँस्कृति में क्या अंतर है ?
3. उपसँस्कृति से क्या आशय है ?
4. साँस्कृतिक परिवर्तन क्या है ?
5. साँस्कृतिक विकासवाद से आप क्या समझते हैं।
6. साँस्कृति के तीन आयाम बताइये।

7. सँस्कृति विलम्बना/सँस्कृति का पिछड़ापन से क्या आशय है ?
8. नृजातीयता से क्या तात्पर्य है ?
9. समाजीकरण से आप क्या समझते हैं ?
10. वृहत् परम्परा एवं लघु परम्पराएँ क्या हैं?

4 अंक वाले प्रश्न

1. सँस्कृति शब्द पर विस्तारपूर्वक चर्चा कीजिए।
2. सँस्कृति के संज्ञानात्मक और मानकीय पक्षों का उल्लेख कीजिए।
3. सँस्कृति के भौतिक पक्ष स्पष्ट कीजिए।
4. ''नृजातीयता विश्वबंधुता के विपरीत है'' – समझाइए।
5. समाजीकरण के प्रमुख चरणों का उल्लेख कीजिए।
6. कानून और मानक में अंतर स्पष्ट कीजिए।
7. क्रांतिकारी परिवर्तन से आप क्या समझते हैं? उदाहरण सहित स्पष्ट कीजिए।

6 अंक वाले प्रश्न

1. विविध परिवेश में विभिन्न सँस्कृतियों का वर्णन कीजिए।
2. सँस्कृति के प्रमुख आयामों का उल्लेख कीजिए।
3. ''पहचान विरासत में नहीं मिलती अपितु यह व्यक्ति और समाज के संबंधों से प्राप्त होती है'' इस कथन को समझाइए।
4. समाजीकरण के प्रमुख अभिकरणों का उल्लेख कीजिए।

स्रोत आधरित प्रश्न

प्र॰1 स्रोत को पढे तथा निम्नलिखित प्रश्नो के उत्तर दे।

प्रचलित कुछ इंग्लिश शब्दो से एयर देश (ट्रेवल बाय एयर), चड्डीस (अन्डरपेटस) चाय (इंडियन) करोड (10 मिलियन) डकैत (थीफ), देसी (लोकल) डिक्की (बूट), गोरा (व्हाइर परसन) जँगली (अनकाउथ) लाख (100000) उपर (ढग) आप्टीकल (स्पेक्टिकल्स), प्रीपोन (ब्रिग फारवर्ड) स्टेपनी (स्पेयर टायर) तथा वुड बी (फियांस या फियांसी) शमिल है .....

एक रिर्पोट के अनुसार हिंग्लिंश मे अनेक शब्द या वाक्यांश शमिल है जिन्हे बिट्रेन या अमेरिका वासी शायद आसानी से न समझ सके। इनमे से कुछ अप्रचलित जैसे 'पक्का' है, जो राज के स्मृति चिन्ह है। अन्य नवनिर्मित शब्द भी है जैसे 'टाइमपास' जिसका अर्थ है समय व्यतीत करने के लिए कोई भी कार्य करना।

(अ) हिंग्लिंश क्या है? (1)

(ब) कुछ ऐसे हिंग्लिंश शब्दो के नाम लिखिऐ जिनका प्रयोग आप अपने दैनिक जीवन मे प्रायः करते है। (1)

प्र॰2 स्रोत को पढे तथा निम्नलिखित प्रश्नो के उत्तर दे।

'समकक्षा' का अर्थ है 'समान' तथा युवा बच्चो के बीच मित्रता का आधार भी काफी हद तक समानता ही होता है। एक प्रभावशाली या शारीरिक रूप से स्वस्थ बच्चा अन्य बच्चो पर प्रभुत्व जमाने का प्रयास कर सकता है। तथापि पारिवारिक स्थितियो मे विरासत मे मिली निर्भरता की तुलना मे समकक्ष समूहों में लेन–देन अधिक होता है।

(अ) समकक्ष समूह को परिभाषित कीजिए (1)

(ब) समाजीकरण के एक अभिकरण के रूप मे समकक्ष समूह परिवार से किस प्रकार भिन्न है? (1)

अध्याय-5 DELETED CHAPTER

समाजशास्त्र - अनुसंधान पद्धतियां

सामाजिक शोध का अर्थ सामाजिक घटनाओं या विभिन्न सिद्धांतों के सम्बन्ध में नवीन ज्ञान की प्राप्ति के लिए प्रयोग में लाई गई वैज्ञानिक पद्धति सामाजिक शोध कहलाती है।

समाजशास्त्र में वस्तुनिष्ठता :– समाजशास्त्र एक विज्ञान है क्योंकि इसकी शोध पद्धतियां वस्तुनिष्ठता पर आधारित होती है। ''वस्तुनिष्ठता'' से तात्पर्य बिना पक्षपात के तटस्थ होकर तथ्यों को जुटाना है शोध में वस्तुनिष्ठता तभी आती है जब शोधकर्ता अपनी व्यक्तिगत भावनाओं, पूर्वाग्रहों और आधार–व्यवहार से विमुख होकर शोध से सम्बंधित वास्तविक तथ्य एकत्र करता है और उस पर अपना निष्कर्ष देता है या सिद्धांत पारित करता है।

समाजशास्त्र में व्यक्तिपरकता :– जब एक समाजशास्त्री किसी सामाजिक समस्या का अध्ययन करते समय अपनी निजी भावनायें, धारणाओं, पूर्वाग्रहों आदि को पूर्णतया नहीं त्याग सकता, कारणवश उसके निष्कर्ष में तटस्थता आना कठिन होता है अर्थात् उसके व्यक्तिगत मूल्य शोध पर अपना प्रभाव डालेंगे।

सामाजिक शोध की पद्धतियां

सामाजिक शोध सामाजिक घटनाओं और सामाजिक समस्याओं से सम्बंधित है। विविध प्रकार कि घटनाओं का अध्ययन एक पद्धति से सम्भव नहीं हो सकता है। इसलिए समाजशास्त्र में अनेक प्रकार कि पद्धतियों को प्रयोग में लाया जाता है, पद्धतियों के चुनाव में अध्ययन विषय कि प्रकृति, क्षेत्र और अध्ययन का उद्देश्य आदि महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं यहाँ हम मुख्य रूप से सामाजिक सर्वेक्षण अवलोकन/निरीक्षण, साक्षात्कार तथा क्षेत्रीय अध्ययन (Field Work) जैसी पद्धतियों की चर्चा करेंगे।

सामाजिक सर्वेक्षण

सामाजिक सर्वेक्षण निरीक्षण–परीक्षण की वह वैज्ञानिक पद्धति है जो सामाजिक समूह या किसी सामाजिक जीवन के किसी पक्ष या घटना के सम्बंध में वैज्ञानिक अध्ययन करने में प्रयुक्त होती है। सर्वेक्षण 'समष्टि' पद्धति का सबसे आम उदाहरण है।

सामाजिक सर्वेक्षण के उद्देश्य या कार्य :–

- सामाजिक तथ्यों का संकलन करना।
- सामाजिक समस्याओं का अध्ययन करना।
- श्रमिकों की दशाओं का अध्ययन करना।
- कार्य–कारण सम्बन्ध का ज्ञान अर्जित करना।
- सामाजिक सिद्धांतों की पुनर्परीक्षा आयोजित करना।
- उपकल्पना का निर्माण और उसकी जाँच करना।
- समाज सुधार के लिए ज्ञान प्राप्त करना।
- सर्वेक्षण का आयोजन।
- तथ्यों का संकलन।
- तथ्यों का विश्लेषण।
- तथ्यों का प्रदर्शन।

सामाजिक सर्वेक्षण के प्रकार

- **जनगणना सर्वेक्षण** – देश की जनसंख्या से सम्बंधित आंकड़े प्राप्त करने के लिए किया जाने वाला सर्वेक्षण जैसे भारत में आयोजित 2011 की जनगणना।
- **निदर्शन सर्वेक्षण** – जब सर्वेक्षण का क्षेत्र विस्तृत होता तो इस विशाल भाग से प्रतिनिधि इकाइयों का चुनाव करके उनका सर्वेक्षण करना

निदर्शन सर्वेक्षण कहलाता है।

- **सरकारी सर्वेक्षण** – अनेक सर्वेक्षण सरकार अपने स्वतन्त्र विभागों के माध्यम से करवाती है, जैसे गरीबी, बेरोजगारी कृषि आदि।
- **गैर–सरकारी सर्वेक्षण** – अनेक सामाजिक सर्वेक्षण व्यक्तिगत और गैर– सरकारी संस्थाओं द्वारा किये जाते है. इन सर्वेक्षण को गैर–सरकारी सर्वेक्षण कहा जाता है।
- **गुणात्मक सर्वेक्षण** – सामाजिक घटनाओं की प्रकृति गुणात्मक होती है। इसमें स्वभाव, अच्छाई, बुराई आदि का अध्ययन किया जाता है।
- **गणनात्मक सर्वेक्षण** – सामाजिक सर्वेक्षण का उद्देश्य समाज के बारे गुणात्मक तथ्य प्राप्त करना होता है। इसलिए आधुनिक युग में इस प्रकार के सर्वेक्षण में निरंतर वृद्धि होती जा रही है। इसमें सामाजिक जीवन का संख्यात्मक सर्वेक्षण किया जाता है।
- **आवृत्तिपूर्ण सर्वेक्षण** – सामाजिक जीवन गतिशील होने के कारण बार–बार एक ही घटना के बारे में सर्वेक्षण करना पड़ता है. इस प्रकार के सर्वेक्षण को आवृत्तिपूर्ण सर्वेक्षण कहते है।

सर्वेक्षण पद्धति के गुण

- सामाजिक सर्वेक्षण पद्धति का सबसे मूहत्वपूर्ण गुण यह है कि इसके द्वारा समाज के विषय में गहन जानकारी प्राप्त होती है।
- सामाजिक गतिशीलता की दिशा और प्रभाव का ज्ञान मिलता है।
- सामाजिक सर्वेक्षण के माध्यम से जो निष्कर्ष प्राप्त होते है, वे अधिक विश्वसनीय और वैश्विक होते है।
- नई उपकल्पनाओं की जानकारी हमें सामाजिक सर्वेक्षण के माध्यम से मिलती है जिनके ऊपर आगे चलकर शोध किया जाता है।

- सामाजिक सर्वेक्षण के द्वारा हम समस्या से सीधे सम्पर्क में आते है और इस प्रकार उस सम्बन्ध में व्यवहारिक ज्ञान भी प्राप्त करते है।
- सामाजिक सर्वेक्षण के द्वारा हमें समस्या की वास्तविक जानकारी मिलती है और इस प्रकार पक्षपात की संभावना कम हो जाती है।
- सामाजिक सर्वेक्षण में अधिक समय लगने के कारण जानकारी समय पर नहीं मिल पाती है।
- सामाजिक सर्वेक्षण का क्षेत्र अधिक विस्तृत होने के कारण ही सर्वेक्षण अधिक समय तक चलता है।
- सामाजिक सर्वेक्षण अकुशल शोधकर्ता द्वारा संपन्न किया जाता है तो निष्कर्ष अविश्वसनीय होते है।
- सामाजिक सर्वेक्षण पूर्व नियोजित और योजनाबद्ध होने के कारण अनुसंधनकर्ता स्वतन्त्र रूप से अपनी बुद्धि का प्रयोग नही कर सकता है।
- सामाजिक घटनाएँ अमूर्त होती है इसके साथ ही उनकी प्रकृति बिखरी हुई होने के कारण सामाजिक सर्वेक्षण में कठिनाई होती है।
- सामाजिक सर्वेक्षण में धन और समय अधिक लगता है, इसलिए विस्तृत क्षेत्र में सर्वेक्षण न किया जाकर सीमित क्षेत्र में सर्वेक्षण किया जाता है।

निरीक्षण / अवलोकन / प्रेक्षण

अवलोकन सामाजिक शोध की ऐसी प्रविधि है जिसमें अनुसंधानकर्ता अपने अध्ययन करने वाले समुदाय के व्यवहार की सीधी जांच अपनी आँखो से करते है। यह प्रविधि मानवशास्त्र में सर्वप्रथम उपयोग में लाने वाले मानवशास्त्री 'ब्रेंसिला मलिनोवासकी' रहे है. मानवशास्त्र से ही यह शोध प्रविधि समाजशास्त्र में आई है।

अवलोकन की विशेषताएः

- निरीक्षण के द्वारा प्राथमिक सामग्री का संकलन किया जाता है।

- निरीक्षण विधि के माध्यम से प्रत्यक्ष रूप से अध्ययन किया जाता है।
- निरीक्षण प्रविधि में मानव इन्द्रियों का पूर्ण उपयोग किया जाता है।
- निरीक्षण विधि के द्वारा उद्धेश्यपूर्ण या विचारपूर्वक मूल समस्या का अध्ययन किया जाता है।
- कार्य–कारण सम्बन्ध की जानकारी हमें अवलोकन के द्वारा ही मिल पाती है।
- निरीक्षण विधि से सामूहिक व्यवहार का अध्ययन के लिए सर्वोत्तम विधि है।

अवलोकन दो प्रकार से किया जाता है

- सहभागी अवलोकन
- असहभागी अवलोकन

सहभागी अवलोकन :– सहभागी अवलोकन वह अवलोकन है जिसमें अवलोकनकर्ता अध्ययन किये जाने वाले समूह में जाकर रहने लगता है। वह समूह में इस प्रकार घुल–मिल जाता है कि समूह के सभी क्रियाकलापों में समूह के सदस्यों कि भांति भाग लेता है और साथ–साथ सामाजिक सम्बंधों का भी अध्ययन करता है।

- सहभागी अवलोकन से अनुसंधानकर्ता को समस्या का सूक्ष्म अध्ययन करने में मदद मिलती है।
- सहभागी अवलोकन प्रत्यक्ष अध्ययन का अवसर प्रदान करता है।
- सहभागी निरीक्षण से प्रत्यक्ष अध्ययन नहीं कर सकते बल्कि सामाजिक जीवन की विस्तृत सूचनाएं भी प्राप्त कर सकते है।
- सहभागी अवलोकन से सूचनादाता के अप्रभावित व वास्तविक व्यवहार का अध्ययन सम्भव है।

• सहभागी निरीक्षण असहभागी निरीक्षण कि तुलना में काफी सरल है।

सहभागी अवलोकन के दोष

• अवलोकनकर्ता की अध्ययनरत समूह में कभी–कभी पूर्ण सहभागिता सम्भव नहीं हो पाती है।

• सहभागी निरीक्षण एक खर्चीली प्रणाली है।

• सहभागी अवलोकन में अध्ययन की गति धीरे–धीरे आगे बढ़ती है।

• इस विधि के द्वारा सीमित क्षेत्र में ही ज्ञान एवम् अनुभव प्राप्त कर सकता है।

• कभी–कभी अध्ययनरत समूह के सदस्य निरीक्षणकर्ता के आने से अपना वास्तविक सामाजिक व्यवहार बदल लेते है। परिणामस्वरूप परिवर्तित व्यवहार का अध्ययन कठिन हो जाता है।

• अवलोकनकर्ता के समूह का सदस्य बन जाने के कारण अनुसंधानकर्ता के अध्ययन में व्यक्तिगत पक्षपात आने की सम्भावना रहती है।

असहभागी अवलोकन / निरीक्षण

असहभागी अवलोकन में, अनुसंधानकर्ता समूह या समुदाय का जिसका उसे अध्ययन करना है, निरीक्षण एक तटस्थ दृष्टा की भाँति वैज्ञानिक भावना से करता है।

असहभागी अवलोकन / निरीक्षण के लाभ

• असहभागी अवलोकन में सत्यता और वास्तविकता आने की अधिक सम्भावना रहती है।

• असहभागी निरीक्षण से विश्वसनीय सूचनाओं की प्राप्ति होती है।

• सहभागी की तुलना में असहभागी निरीक्षण में कम समय और कम धन लगता है।

असहभागी अवलोकन / निरीक्षण की हानि

- असहभागी निरीक्षणकर्ता कई घटनाओं एंव क्रियाओं का महत्व समझने में असफल होता है।
- यह निरीक्षण विशुद्ध रूप से असहभागी निरीक्षण भी है।
- अजनबी व्यक्ति के प्रति समुदाय के लोगों का व्यवहार संदेहास्पद भी होना स्वभाविक है, परिणाम स्वरूप समुदाय के सदस्यों के व्यवहारों में बनावट आ जाती है।

साक्षात्कार

एक व्यक्ति अथवा समूह के साथ विशिष्ट प्रयोजन से आयोजित औपचारिक वार्तालाप की प्रक्रिया साक्षात्कार–विधि कहलाती है। सामाजिक शोध की एक विधि के रूप में साक्षात्कार का मुख्य उद्देश्य शोध सम्बन्धी सूचनांए एकत्रित करना है।

साक्षात्कार के उद्देश्य

- **व्यक्तिगत सूचनाएं** – साक्षात्कार विधि के द्वारा व्यक्तिगत सम्पर्क से सूचनाएं प्राप्त की जाती है।
- **प्रत्यक्ष सम्पर्क** – शोधकर्ता और सूचनादाता के बीच प्रत्यक्ष सम्बन्ध बनने से अधिक विश्वसनीय सूचनाएं प्राप्त की जा सकती है।
- **समस्याओं के विभिन्न पहलुओं की जानकारी** – इस विधि में शोधकर्ता विभिन्न प्रकार के व्यक्तियों से सम्पर्क स्थापित करता है जिससे समस्या के विषय में गहन जानकारी मिलती है।
- **गुणात्मक तथ्यों के लिए** – साक्षात्कार विधि के द्वारा लोगों के जीवन, सम्बन्धित गुणात्मक प्रकृति की व्यक्तिगत तथा आंतरिक सूचनाएँ जैसे– आदर्श, सामाजिक मूल्य, विशेष अभिरुचियाँ, स्वभाव, भावनाएँ, विचार,

अच्छाई–बुराई, अमूर्त तथा अदृश्य गुणों तथा व्यवहारों का ज्ञान प्राप्त होता है।

साक्षात्कार के प्रकार

- **व्यक्तिगत साक्षात्कार** – इस प्रकार के साक्षात्कार में केवल दो व्यक्ति शोधकर्ता और सूचनादाता होते है। इस विधि के द्वारा वास्तविक सूचनाएं सरलता से मिल जाती है।
- **सामूहिक साक्षात्कार** – इस प्रकार के साक्षात्कार में एक या अधिक साक्षात्कर्ता अनेक सूचनादाताओं में समस्या से जुड़ी सूचना एकत्रित करते है।
- **प्रत्यक्ष साक्षात्कार** – इस विधि में साक्षातकर्ता और सूचनादाता आमने–सामने प्रत्यक्ष रूप से वार्तालाप करते हैं।
- **अप्रत्यक्ष साक्षात्कार** – इस प्रकार के साक्षात्कार में प्रत्यक्ष आमने–सामने न बैठकर फोन, इंटरनेट द्वारा सूचना ग्रहण की जाती है।
- **औपचारिक साक्षात्कार** – औपचारिक साक्षात्कार में साक्षात्कारकर्ता सूचनादाता पहले से निर्मित साक्षात्कार अनुसूची में से प्रश्न पूछता है और उनके उत्तर वही लिखता है।
- **अनौपचारिक साक्षात्कार** – इस प्रकार के साक्षात्कार में शोधकर्ता सूचनादाता से स्वतन्त्र रूप से अपनी अनुसंधान की समस्या के विभिन्न पहलुओं पर वार्तालाप करता है।

साक्षात्कार प्रविधि का महत्त्व

- व्यक्ति का मनोवैज्ञानिक रूप से अध्ययन सिर्फ साक्षात्कार से ही सम्भव है.
- साक्षात्कार विधि के द्वारा ही अमूर्त घटनाओं का अध्ययन किया जा सकता है, जैसे – सामाजिक सम्बन्धों का अध्ययन।

- साक्षात्कार विधि से अधिक मार्मिक और गोपनीय आंतरिक जीवन का अध्ययन किया जा सकता है।
- भूतकालीन घटनाओं का अध्ययन केवल साक्षात्कार विधि से सम्भव है। क्योकि समाज परिवर्तनशील है। परिणामरूवरूप अनेक घटनाएँ इतिहास में छुप जाती है।
- साक्षात्कार विधि के माध्यम से हम किसी भी पृष्ठभूमि के व्यक्ति का अध्ययन कर सकते हैं। जैसे– अशिक्षित, शिक्षित, ग्रामीण, नगरीय, आदि जो सूचनादाता प्रश्नों को समझ नहीं पाते शोधकर्ता उन्हें समझाकर सूचना प्राप्त कर लेते हैं।
- साक्षात्कार एक लचीली शोध प्रविधि है।
- विविध सूचनाओं की प्राप्ति का साधन साक्षात्कार विधि है।

साक्षात्कार प्राविधि की हानियाँ

- दोषपूर्ण स्मरण शक्ति
- सत्यापन का अभाव
- विश्वसनीयता की कमी
- विचारों की स्वतंत्रता
- हीनता की भावना
- अधिक समय और धन खर्च

शब्दकोश

जनगणनाः

- आबादी के प्रत्येक सदस्य को शामिल करने वाला एक व्यापक सर्वेक्षण।

वंशावलीः

- पीढ़िया में पारिवारिक सम्बंधों को रेखाकिंत करने वाला एक विस्तारित परिवारिक वृक्ष।

नमूनाः

- एक उप–समूह या चयन (आमतौर पर छोटा) एक बड़ी आबादी से लिया जो उसका प्रतिनिधित्व करता है।

नमूनाकरण त्रृटिः

- सर्वेक्षण के परिणामों में त्रुटि का अपरिहार्य अंतर क्योंकि यह पूरी आबादी के बजाय केवल एक छोटे से नमूने से जानकारी पर आधरित है।

गैर–नमूना त्रृटिः

- तरीकों के प्रारुप या आवेदन में गलतियों के कारण सर्वेक्षण परिणामों में त्रुटियाँ।

आबादीः

- सांख्यिकीय अर्थ में बड़े निकाय (व्यक्तियों गांवों, परिवारों, आदि) जिनमें से नमूना तैयार किया जाता है।

संभावनाः

- किसी घटना की संभावना या आशा (संख्यिकीय अर्थ में)।

प्रश्नावलीः

- सर्वेक्षण या साक्षात्कार में पूछे जाने वाले प्रश्नों की एक लिखित सूची।

सम्भावित्ताः

- यह सुनिश्चित करना कि एक घटना (जैसे नमूना में किसी विशेष आइटम का चयन) मौके पर पूरी तरह से निर्भर करता है और कुछ भी नहीं।

प्रतिबिंबताः

- शोधकर्ता की खुद को देखने और विश्लेषण करने की क्षमता।

स्तरीकरणः

- सांख्यिकीय अर्थ के अनुसार, लिंग, स्थान, धर्म, आयु इत्यादि जैसे प्रासंगिक मानदंड़ो के आधार पर आबादी का अलग–अलग समूहों में उपखंड़।

1 अंक वाले प्रश्न

सही विकल्प चुनेः

1. पुस्तक 'द गोल्डन बोग' किस प्रसिद्ध मानवविज्ञानी द्वारा लिखी गई है?
   (क) जेम्स फ्रेजर
   (ख) मलिनोवस्की
   (ग) विलियम फुट व्हाईट
   (घ) एमाइल दुर्खीम
2. शोधकर्ता और प्रतिवादी के बीच एक निर्देशित बातचीत के रूप में जाना जाता हैः
   (क) क्षेत्रीय कार्य
   (ख) साक्षात्कार
   (ग) प्रश्नावली
   (घ) सर्वेक्षण

3. नमूना चयन के इस सिद्धांत में, उत्तरदाताओं को विशुद्ध रूप से संयोग से चुना जाता है:

(क) याद्दच्छिकीकरण

(ख) स्तरीकरण

(ग) संभावना

(घ) Compartmentalization

4. एक मात्रात्मक शोध में निम्नलिखित में से कौन सी विधि शामिल है?

(क) साक्षात्कार (ख) प्रश्नावली

(ग) केस स्टडी (घ) क्षेत्रीय कार्य

5 जनसंख्या के हर एक सदस्य को कवर करने के लिए एक व्यापक सर्वेक्षण के रूप में जाना जाता है:

(क) सर्वेक्षण (ख) प्रतिभागी अवलोकन

(ग) जनगणना (घ) केस स्टडी

खाली स्थान भरें:

1. विधि के अध्ययन को ..... के रूप में जाना जाता है।
2. ..... के गुण को हमें निष्पक्ष और तटस्थ रहने की आवश्यकता है।
3. ..... एक विशेष पद्धति को संदर्भित करता हे जिसके द्वारा समाजशास्त्री समाज, संस्कृति और लोगों के बारे में सीखता है जिनका वह अध्ययन कर रहा है।
4. ..... शोध करते समय मनोवैज्ञानिक के लिए जानकारी का प्राथमिक / तत्काल स्रोत हैं।

5. नमूना चयन प्रक्रिया ..... और ..... सिद्धांतों पर निर्भर करती हैं।

कथन सही करें :

1. साक्षात्कार विधि का बहुत नुकसान इसके प्रारूप का लचीलापन है।
2. नमूना प्रक्रिया के कारण गैर–नमूनाकरण त्रुटियां होती हैं।
3. यदि नमूने का आकार बड़ा है तो सर्वेक्षण वास्तव में प्रकृति का प्रतिनिधि नहीं है।
4. मैक्रो तरीके छोटे और अंतरंग सेटिंग्स में काम करने के लिए डिजाइन किए गए हैं।
5. आत्म–संवेदनशीलता, शोधकर्ता को अवचेतन पूर्वाग्रह की समस्या को हल करने की अनुमति देता है।

सही / गलत

1. समाजशास्त्र में वास्तुनिष्ठता बहुत कठिन और जटिल कार्य है। (सही / गलत)
2. भूविज्ञानी आमतौर पर समाज का अध्ययन करता है। (सही / गलत)
3. जेम्स फ्रेजर ने क्षेत्रीय कार्य को सामाजिक मानवविज्ञान में एक विशेष पद्धति के रूप में स्थापित किया। (सही / गलत)
4. सहभागी प्रेक्षण को प्रायः 'क्षेत्रीय कार्य' कहा जाता है। (सही / गलत)
5. प्रेक्षण पद्धति एक समय बचाने वाली प्रक्रिया है। (सही / गलत)

2 अंक वाले प्रश्न

1. सामाजिक शोध क्या है?
2. सर्वेक्षण पद्धति क्या है?
3. सर्वेक्षण के दो गुण बताओ।

4. निरीक्षण पद्धति के प्रकार बताओ।
5. साक्षात्कार क्या है?

4 अंक वाले प्रश्न

1. सर्वेक्षण के प्रमुख चरण बताओ।
2. सहभागी निरीक्षण के गुण और दोष बताओ।
3. साक्षात्कार के उद्देश्य क्या है?
4. क्षेत्रीय कार्य का अनुसंधान पद्धति में क्या महत्व है?
5. साक्षात्कार अनुसंधान की एक लचीली पद्धति है, चर्चा करें।

उत्तरमाला

अध्याय–1 समाजशास्त्र एवं समाज

सही विकल्प चुने :–

1. (क) सी. डब्ल्यू. मिल्स
2. (ग) आगस्ट कॉम्टे
3. (घ) कानून
4. (घ) उपरोक्त सभी
5. (ग) सरल समाज

रिक्त स्थान पूर्ण करे :–

1. 1838
2. पूंजीवादी
3. कारण, व्यक्तिवाद
4. व्यक्तिवाद मुददे, जनहित के मुद्दे
5. मैकाइवर एवं पेज

कथन को सही करे :–

1. समाजशास्त्र समाज का अध्ययन है जबकि राजनीति विज्ञान एक विशेष विज्ञान है।
2. सोशल एंथ्रोपोलॉजी आदिम समाज का अध्ययन है वही समाज शास्त्र आधुनिक समाज का अध्ययन है।
3. कथन सही है।
4. औद्योगिक क्रान्ति की एक विशेषता पर्यावरण प्रदूषण था।
5. पश्चिमी अनुशासन के रूप में समाजशास्त्र का उदय यूरोप में हुआ था।

सही / गलत :–

1. सही
2. गलत

3. सही
4. सही
5. सही

अध्याय–2 समाजशास्त्र में प्रयुक्त शब्दावली, संकल्पनाएं एवं उनका उपयोग

सही विकल्प चुने :–

1. (घ) बातचीत का स्थिर पैटर्न
2. (क) एम. एन. श्रीनिवास
3. (घ) अप्रत्यक्ष सम्बन्ध
4. (क) हम की भावना
5. (घ) राल्फ लिंटन

रिक्त स्थान पूर्ण करे :–

1. प्रदत्त प्रस्थिति
2. जन्म, योग्यता
3. प्राथमिक समूह
4. इनाम या दण्ड
5. सामाजिक नियंत्रण

कथन को सही करे :–

1. वर्ग पर आधारित स्तरीकरण योग्यता, कुशलता से निर्धारित होता है।
2. बाह्य समूह में अपनेपन की भावना का अभाव होता है।
3. द्वितीयक समूह आकार में अपेक्षाकृत बड़े होते हैं और उसमें अवैयक्तिक सम्बन्ध होते हैं।
4. सामाजिक वर्गों, भीड़ को अर्द्ध समूह के रूप में देखा जा सकता है।
5. भूमिका संघर्ष एक या अधिक प्रस्थितियों से जुड़ी भूमिकाओं की असंगतता है। यह तब होता है जब दो या अधिक भूमिकाओं से विरोधी अपेक्षाएं पैदा होती है।

सही / गलत :–

1. सही
2. गलत
3. गलत
4. सही
5. गलत

अध्याय–3 सामाजिक संस्थाओं को समझना

सही विकल्प चुने :–

1. (क) पितृसत्ता
2. (ख) शादी
3. (ग) मैक्स वैबर
4. (क) सत्ता

रिक्त स्थान पूर्ण करे :–

1. एकल विवाह
2. शिक्षा
3. आत्मविश्वास
4. ए. एम. शाह
5. अंत विवाह

कथन को सही करे :–

1. प्रकार्यवादियों के लिये व्यक्ति को एक समाज में समान रूप से रखा जाता है।
2. अंत विवाह, एक विवाह प्रथा जो विशिष्ट जाति, वर्ग या जनजातीय समूहों के अर्न्तगत प्रचलित है।

3. बहुविवाह में व्यक्ति को एक समय एक स्त्री अथवा पुरूष के एक से अधिक पति / पत्नी पाए जाते हैं।
4. शक्ति और सत्ता परस्पर संबंधित अवधारणाएँ हैं।
5. बेटियों को परिवार से दूर रखने के लिए ग्राम बहिर्विवाह का अभ्यास किया जाता है।

सही / गलत :–

1. गलत
2. गलत
3. गलत
4. सही
5. सही

अध्याय–4 संस्कृति तथा समाजीकरण

सही विकल्प चुने :–

1. (ग) संज्ञानात्मक
2. (ग) कानून
3. (ख) प्रजाति केन्द्रिकता
4. (ख) परिवार
5. (क) यूरोप

रिक्त स्थान पूर्ण करे :–

1. संस्कृति
2. सांस्कृतिक परिवर्तन
3. मानकीय
4. उपसंस्कृति
5. भौतिक

कथन को सही करे :–

1. पहचान विरासत में नहीं मिलती अपितु यह व्यक्ति तथा समाज को इनके दूसरे व्यक्तियों के साथ संबंधों से प्राप्त होती है।
2. लघु परंपरा ग्रामीण समाज में पायी जाती है।
3. एक आधुनिक समाज विदेशों से सांस्कृतिक मतभेदों और सांस्कृतिक प्रभावों की सराहना करता है।
4. स्कूल औपचारिक पाठ्यक्रम के साथ–साथ अप्रत्यक्ष पाठ्यक्रम के द्वारा बच्चे का समाजीकरण करते है।
5. किसी वृहत संस्कृति के अधीन लोगों के एक समूह को चिन्हित करता है।

सही / गलत :–

1. सही
2. गलत
3. सही
4. सही
5. गलत

अध्याय–5 अनुसंधान पद्धतियां

सही विकल्प चुने :–

1. (क) जेम्स फ्रेजर
2. (ख) साक्षात्कार
3. (क) यादृच्छिकीकरण
4. (ख) प्रश्नावली
5. (ग) जनगणना

रिक्त स्थान पूर्ण करे :–

1. पद्धति शास्त्र
2. वस्तुनिष्ठता
3. सहभागी प्रेक्षण
4. उत्तरदाता / सूचनादाता
5. स्तरीकरण, याद्दच्छिकीकरण

कथन को सही करे :–

1. साक्षात्कार विधि का सबसे बड़ा लाभ इसके प्रारूप का लचीलापन है।
2. डिजाइन या आवेदन में गलती के कारण गैर नमूना श्रुटि होती है।
3. यदि नमूने का आकार बड़ा है तो सर्वेक्षण वास्तव में प्रकृति का प्रतिनिधि है।
4. माइक्रो तरीके छोटे और अतरंग सेटिंग्स में काम करने के लिये डिजाइन किए गए है।
5. समाजशास्त्री स्ववाचक होने का कितना भी प्रयास करे, अवचेतन पूर्वाग्रह की संभावना सदा रहती है।

सही / गलत :–

1. सही
2. गलत
3. गलत
4. सही
5. गलत

अध्याय-1 DELETED CHAPTER

समाज में सामाजिक संरचना, स्तरीकरण और सामाजिक प्रक्रियाएँ

स्मरणीय बिन्दु :

- 'सामाजिक संरचना' शब्द इस तथ्य को दर्शाता है कि समाज संरचनात्मक है।
- 'सामाजिक संरचना' शब्द का प्रयोग सामाजिक सम्बन्धों, सामाजिक घटनाओं के निश्चित क्रम के लिए किया जाता है।
- मानव द्वारा रचित समाज उस इमारत की तरह होता है जिसका प्रत्येक क्षण उन्हीं ईटों से पुनर्रचित होती है जिनसे उसे बनाया गया है।
- इमिल दुर्खाइम के अनुसार समाज अपने सदस्यों की क्रियाओं पर सामाजिक प्रतिबंध लगाते हैं और व्यक्ति पर समाज का प्रभुत्व होता है।
- कार्ल मार्क्स ने भी संरचना की बाध्यता पर बल दिया है लेकिन वह मनुष्य की सृजनात्मकता को भी महत्वपूर्ण मानते हैं।
- सामाजिक स्तरीकरण से अभिप्राय समाज में समूहों के बीच संरचनात्मक असमानताओं के अस्तित्व से है, भौतिक अथवा प्रतीकात्मक पुरस्कारों की पहुँच से है।
- आधुनिक समाज धन तथा शक्ति की असमानताओं के कारण पहचाने जाते हैं।
- सामाजिक स्तरीकरण वह प्रक्रिया है जिसमें समाज उच्चता तथा निम्नता के आधार पर अनेक समूहों में बंट जाता है।
- स्तरीकरण की संकल्पना उस विचार को संदर्भित करती है जहाँ समाज का विभाजन एक निश्चित प्रतिमान के रूप में होता है, तथा यह संरचना

पीढ़ी–दर– पीढ़ी चलती रहती है। असमान रूप से बाँटे गये लाभ के तीन बुनियादी प्रकार है जिसका उपभोग विशेषाधिकार प्राप्त समूहों द्वारा किया जाता है–

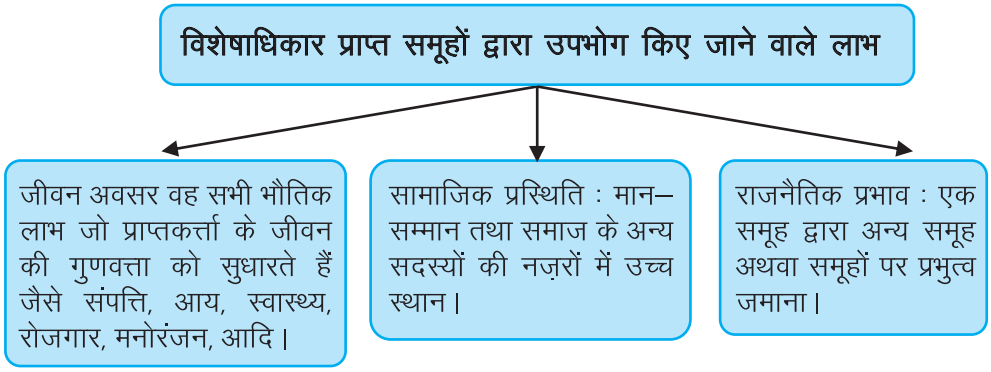

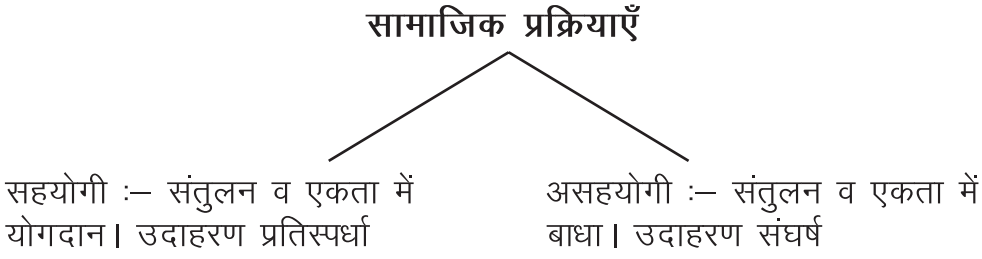

'कार्ल मार्क्स' और 'एमिल दुर्खाइम' के अनुसार मनुष्यों को अपनी बुनियादी आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए सहयोग करना होता है तथा अपने और अपनी दुनिया के लिए उत्पादन और पुनः उत्पादन करना पड़ता है।

प्रकार्यवादी परिप्रेक्ष्य का सरोकार मुख्य रूप से समाज में 'व्यवस्था की आवश्यकता' से है जिन्हें प्रकार्यात्मक अनिवार्यताएं भी कहा जाता है। ये निम्न हैं :–

1. नए सदस्यों का समाजीकरण
2. संचार की साझा प्रणाली
3. व्यक्ति की भूमिका निर्धारण के तरीके

- समाज के विभिन्न भागों का एक प्रकार्य अथवा भूमिका होती है जो संपूर्ण समाज की प्रकार्यात्मकता के लिए जरूरी होता है।
- प्रतियोगिता तथा संघर्ष को इस दृष्टि से भी समझा जाता है कि अधिकतर स्थितियों में ये बिना ज्यादा हानि तथा कष्ट के सुलझ जाते हैं तथा समाज की भी विभिन्न प्रकार से मदद करते हैं।
- सहयोग, प्रतियोगिता एंव संघर्ष के आपसी संबंध अधिकतर जटिल होते है तथा ये आसानी से अलग नहीं किये जा सकते। इस संबंध को एक समाजशास्त्रीय अध्ययन से समझा जा सकता है जिसमें समाज के विभिन्न हिस्सों से जन्म की संपत्ति पर उनके दृष्टिकोण को जानने की कोशिश की। इसमें बड़ी संख्या में महिलाओं ने अपनी पैतृक संपत्ति पर दावा नहीं करने की बात की (भावना से नहीं बल्कि आशंका से) क्योंकि वे डरती हैं कि इससे भाइयों के साथ इनके संबंधों में कड़वाहट आ जाएगी।

  'व्यवस्थापन' : संघर्षों के रहते हुए भी समझौता व सह–अस्तित्व की कोशिश। जैसे पैतृक संपत्ति से लड़कियों का स्वयं दावा छोड़ना।

सहयोग तथा श्रम विभाजन

4. **सहयोग** : सामान्य उद्देश्य की प्राप्ति के लिए मिलकर किया गया कार्य जैसे– पारिवारिक कार्यो में हाथ बँटाना, राष्ट्र विपत्ति में जनता का सरकार का साथ देना।

- सहयोग का विचार मानव व्यवहार की कुछ मान्यताओं पर आधारित हैः–

  – मनुष्य के सहयोग के बिना मानव जाति का अस्तित्व कठिन हो जाएगा।

  – जानवरों की दुनिया में भी हम सहयोग के प्रमाण देख सकते हैं।
- दुर्खाइम के अनुसार, एकता समाज का नैतिक बल है, तथा यह सहयोग और इस तरह समाज के प्रकार्यो को समझने के लिए बुनियादी अवयव है।

- श्रम विभाजन की भूमिका जिसमें सहयोग निहित है, यथार्थ रूप में समाज की आवश्यकताओं की पूर्ति करती है।
- दुर्खाइम ने यांत्रिक तथा सावयवी एकता में अंतर स्पष्ट किया है–

  1. **यांत्रिक एकता** – यह संहति का एक रूप है जो बुनियादी रूप से एकरूपता पर आधारित है। इस समाज के अधिकांश सदस्य एक जैसा जीवन व्यतीत करते हैं, कम–से–कम विशिष्टता अथवा श्रम–विभाजन को हमेशा आयु तथा लिंग से जोड़ा जाता है।

  2. **सावयवी एकता** – यह सामाजिक संहति का वह रूप है जो श्रम विभाजन पर आधारित है तथा जिसके फलस्वरूप समाज के सदस्यों में सह निर्भरता है।
- मनुष्य केवल सहयोग के लिए समायोजन तथा सामंजस्य ही नहीं करते हैं बल्कि इस प्रक्रिया में समाज को बदलते भी हैं। जैसे– भारतीयों को ब्रिटिश साम्राज्यवाद के अनुभव के कारण अंग्रेजी भाषा के साथ समायोजन, सामंजस्य तथा सहयोग करना पड़ा था।
- **अलगाव** – इस धारणा का प्रयोग मार्क्स द्वारा श्रमिकों का अपने श्रम तथा उत्पादों पर किसी प्रकार के अधिकार न होने के लिए किया जाता है। इससे श्रमिकों की अपने कार्य के प्रति रूचि समाप्त होने लगती है।

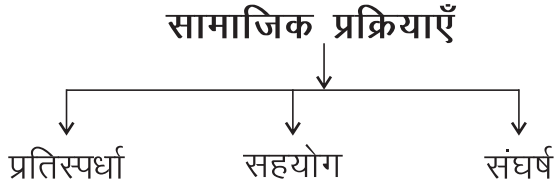

- **प्रतिस्पर्धा – अवधारणा एवं व्यवहार के रूप में** : यह विश्वव्यापी और स्वभाविक क्रिया है जिसमें व्यक्ति दूसरे को नुकसान पहुँचाए बिना आगे बढ़ना चाहता है। यह व्यक्तिगत प्रगति में सहायता करती है। यह निरन्तर चलने वाली प्रक्रिया है। एक सामाजिक प्रक्रिया है जिसके

अन्तर्गत दो या अधिक व्यक्तियों का एक ही वस्तु को प्राप्त करने के लिए किया गया प्रयास है।

- हमारे समाज में वस्तुओं की संख्या कम होती है और प्रत्येक व्यक्ति अपनी आवश्यकताओं को पूर्ण रखने में असमर्थ रहता है। अर्थात जब वस्तुओं की संख्या कम हो और उसको प्राप्त करने वालों की संख्या अधिक हो तो प्रतियोगिता प्रक्रिया आरम्भ हो जाती है। आर्थिक, सामाजिक धार्मिक, राजनैतिक अर्थात प्रत्येक क्षेत्र प्रतियोगिता के ऊपर ही आधारित है।
- फेयर चाइल्ड के अनुसार, ''प्रतियोगिता सीमित वस्तुओं के उपभोग या अधिकार के लिए किये जाने वाले प्रयत्नों को कहते हैं।''
- **पूँजीवाद** – वह आर्थिक व्यवस्था, जहाँ पर उत्पादन के साधनों पर व्यक्तिगत अधिकार होता है, जिसे बाजार व्यवस्था में लाभ कमानें के लिए प्रयोग किया जाता है जहाँ श्रमिकों द्वारा श्रम किया जाता है।
- आधुनिक पूँजीवाद समाज जिस प्रकार कार्य करते हैं वहाँ दोनों (व्यक्तिवाद तथा प्रतियोगिता) का एक साथ विकास सहज है। पूँजीवाद की मौलिक मान्यताएँ हैः–
  1. व्यापार का विस्तार
  2. श्रम विभाजन – कार्य का विशिष्टीकरण, जिसकी सहायता से अलग – अलग रोजगार उत्पादन प्रणाली से जुड़े होते है।
  3. विशेषीकरण
  4. बढ़ती उत्पादकता
- प्रतियोगिता की विचारधारा पूँजीवाद की सशक्त विचारधारा है। इस विचारधारा का तर्क है कि बाजार इस प्रकार से कार्य करता है कि अधितम कार्यकुशलता सुनिश्चित हो सके

- प्रतिस्पर्धा तथा पूँजीवाद के तहत 19वीं शताब्दी की संपूर्ण मुक्त व्यापार अर्थव्यवस्था ने आर्थिक विकास में महत्वपूर्ण योगदान दिया।

संघर्ष तथा सहयोग

- संघर्ष – हितों में टकराहट को संघर्ष कहते हैं। संघर्ष किसी भी समाज का एक महत्वपूर्ण हिस्सा सदैव रहा है
- संसाधनों की कमी समाज में संघर्ष उत्पन्न करती है क्योंकि संसाधनो को पाने तथा उस पर कब्जा करने के लिए प्रत्येक समूह संघर्ष करता है।
- संघर्ष विभिन्न प्रकार के होते हैं :–
    1. नस्लीय संघर्ष
    2. वर्ग संघर्ष
    3. जाति संघर्ष
    4. राजनैतिक संघर्ष
    5. अन्तराष्ट्रीय संघर्ष
    6. निजी संघर्ष
- समाज संघर्ष एंव सहयोग दोनों तत्वों के मिश्रण के साथ ही विकसित होता है, जहाँ समाज में एक तरफ प्रेम और सहयोग की भावना होती है वहाँ दूसरी तरफ नफरत, ईर्ष्या, द्वेष इत्यादि की भावना उत्पन्न होती है। जैसे कि भारतीय नारी अपने माता पिता की जायदाद का हिस्सा नहीं लेती ताकि उसके भाई भाभी उससे नफरत न करे। वह स्वयं से संघर्ष करती रहती है।
- परहितवाद – बिना किसी लाभ के दूसरों के हित के लिए काम करना परहितवाद कहलाता है।
- मुक्त व्यापार/उदारवाद – वह राजनैतिक तथा आर्थिक नजरिया, जो

इस सिद्धांत पर आधारित है कि सरकार द्वारा अर्थव्यवस्था में अहस्तक्षेप नीति अपनाई जाए तथा बाजार एंव संपत्ति मालिकों को पूरी छूट दे दी जाए।

- सामाजिक बाध्यता – हम जिस समूह अथवा समाज के भाग होते हैं वह हमारे व्यवहार पर प्रभाव छोड़ते हैं। दुर्खाइम के अनुसार सामाजिक बाध्यता सामाजिक तथ्य का एक विशिष्ट लक्षण है।

सहयोग	संघर्ष
1. इसका अर्थ है साथ देना	1. इसका अर्थ है हितों में टकराव अर्थात सहयोग न करना।
2. अवैयक्तिक होता है।	2. व्यक्तिगत होता है।
3. निरन्तर चलने वाली प्रक्रिया है।	3. अनिरंतर प्रक्रिया है
4. अहिंसक रूप है।	4. हिंसक रूप है।
5. सामाजिक नियमों का पालन होता है।	5. सामाजिक नियमों का पालन नहीं होता।

शब्दकोश

1. **परहितवाद / परार्थवाद** : किसी भी स्वार्थपरता या स्वहित के बिना दूसरों को लाभ पहुंचाने के लिए कार्य करने का सिद्धांत।
2. **अलगाव:** मार्क्स ने कार्य, श्रम की प्रकृति, और श्रम के उत्पादों पर श्रमिकों के हिस्से पर नियंत्रण के नुकसान को संदर्भित करने के लिए शब्द का उपयोग किया।
3. **प्रतिमानहीनता / मानकशून्यता** : दुर्खाइम के लिए, सामाजिक स्थिति जहाँ व्यवहार को पथ–प्रदर्शित करने वाले मानदंड नष्ट हो जाते हैं, व्यक्ति बिना सामाजिक बाध्यता अथवा पथ–प्रदर्शन के रह जाता है।
4. **पूंजीवाद** : एक आर्थिक प्रणाली जिसमें उत्पादन के साधन निजी स्वामित्व में होते हैं और बाजार ढांचे के भीतर मुनाफे को जमा करने के लिए व्यवस्थित हैं, जिसमें श्रमिक मजदूरों द्वारा श्रम प्रदान किया जाता है।

5. **श्रम का विभाजन** : कार्य का विशिष्टीकरण, जिसके माध्यम से विभिन्न व्यवसायों को उत्पादन प्रणाली के भीतर जोड़ा जाता है। सभी समाजों में श्रम विभाजन किसी न किसी रूप में पाया जाता है, विशेष रूप से पुरूषों और महिलाओं द्वारा किए गए कार्यों के बीच। औद्योगिकीकरण के विकास के साथ, श्रम का विभाजन किसी भी अन्य प्रकार के उत्पादन प्रणाली की तुलना में अधिक जटिल हो गया। आधुनिक दुनिया में, श्रम का विभाजन क्षेत्र अंतरराष्ट्रीय हो गया है।

6. **प्रभुत्वशाली विचारधारा** : साझा विचार या विश्वास जो प्रमुख समूहों के हितों को न्याससंगत बनाने के लिए काम करते हैं। ऐसी विचारधारा उन सभी समाजों में पाई जाती है। जिनमें वे व्यवस्थित और समूह के बीच असमानताओं की असमानता रखते हैं। विचारधारा की अवधारण शक्ति के साथ निकटता से जुडती है, क्योंकि वैचारिक प्रणाली समूह की भिन्न शक्ति को वैध बनाने के लिए काम करती है।

7. **व्यक्तिगत व्यक्तिवाद** : सिद्धांत या सोचने के तरीके जो समूह के बजाए स्वायत्त व्यक्ति पर ध्यान केंद्रित करते हैं।

8. **लेस–ए–फेयर उदारवाद** : सरकार द्वारा अर्थव्यवस्था में अहस्तक्षेप नीति के सामान्य सिद्धांत और बाजारों और संपत्ति मालिकों के लिए स्वतंत्रता के आधार पर एक राजनीतिक और आर्थिक दृष्टिकोण।

1 अंक वाले प्रश्न

सही विकल्प चुने :

1. "संरचना' शब्द समाज को किस तरह से संदर्भित करता है –

   (क) संरचित (ख) असंरचित

   (ग) परस्पर संबंधित (घ) बेतरतीब

2. "सामाजिक संरचना संगठन के निर्माण की रूपरेखा और पैटर्न के लिए हमारी
गतिविधियों को बाधित करती है और हमारे व्यवहार को निर्देशित करती है" विचारक का नाम दें –
(क) मैक्स वेबर (ख) दुर्खीम
(ग) बॉटमोर (घ) नमूना

3. जब एक समाज विविध आर्थिक, राजनीतिक, धार्मिक और सांस्कृतिक समूहों से बना होता है, तो समाज को कहा जाता है –.
(क) विविध (ख) स्तरीकृत
(ग) अव्यवस्थित (घ) नमूना

4. जीवन अवसर, सामाजिक प्रस्थिति और राजनीतिक प्रभाव का आनंद लेते हैं –
(क) प्राथमिक समूह (ख) तृतीयक समूह
(ग) विशेषाधिकार समूह (घ) रूचि के समूह

5. समाज और व्यक्ति के बीच द्वंद्वात्मक संबंध को समझने के लिए केंद्रीय अवधारणाएं हैं –
(क) संरचना (ख) स्तरीकरण
(ग) सामाजिक प्रक्रियाएँ (घ) उपर्युक्त सभी

खाली स्थान भरें:

1. कोई व्यक्ति किस तरह के विद्यालय में जाता है/नहीं जाता है, वह कैसे कपड़े पहनता है, और कैसा भोजन करता है, इन सबके संदर्भ में वह जो चुनाव करता है या जो चुनाव के अवसर उसके पास उपलब्ध हैं, वह उसके ..... पर निर्भर करता है।
2. भूमि संसाधनों पर गहन संधर्ष के चलते किसान आंदोलन किस प्रकार का संघर्ष है? .....

3. सामाजिक संरचनाएं दो घटकों से बनी होती हैं ..... और ....
4. एक परिवार या स्कूल के पुराने सदस्यों का निधन हो सकता है और नए सदस्य प्रवेश करेंगे, लेकिन, एक पहलू/सुविधा जो जीवन भर रहती हैं .....
5. .....वह सामाजिक पद्धति जिसके आधार पर व्यक्तियों और समूहों को उच्च या निम्न प्रस्थिति प्राप्त होती हैं।

वाक्य सही करें:

1. ऐसी एकता जो पारंपरिक संस्कृति में पाई जाती है, जहाँ श्रम का निम्न विभाजन, अधिक सहयोग, और कम जनसंख्या होती उसे सावयवी एकता कहते है।
2. स्वार्थ या स्वहित के साथ दूसरों को लाभ पहुंचाने के लिए कार्य का सिद्धांत परार्थवाद (अल्ट्रइजम) है।
3. सरकार द्वारा अर्थव्यवस्था में अहस्तक्षेप के सामान्य सिद्धांत पर आधारित एक राजनीतिक और आर्थिक दृष्टिकोण पूंजीवाद है।
4. प्रतिस्पर्धा आर्थिक कार्यवाही का एक रूप है जिसमें हम सीमित सामग्री या गैर–भौतिक वस्तुओं के कब्जे या उपयोग के लिए एक दूसरे के खिलाफ प्रयास करते है।
5. व्यवस्थापन/समायोजन को संघर्ष के बावजूद समझौता और सह–अस्तित्व के प्रयास के रूप में देखा जाता है।

सही/गलत :

1. सामाजिक संरचना मानवीय क्रियाओं और संबंधों से बनती है। (सही/गलत)
2. समाज में कई बार सहयोग को जबरदस्ती लागू किया जाता है ताकि संघर्षों को छिपाया जा सके। (सही/गलत)

3. दुर्खाइम के अनुसार सामाजिक संरचना हमारी क्रियाओं की सीमा तय नहीं करती। (सही/गलत)
4. मार्क्स के अनुसार मनुष्य वैसा ही इतिहास बनाते हैं जैसी उनकी इच्छा होती है। (सही/गलत)
5. किसी भी समाज में असमानता व्यक्तियों के बीच व्यवस्थित व सामाजिक समूहों की सदस्यता से जुड़ी होती है। (सही/गलत)

2 अंक वाले प्रश्न

1. सामाजिक स्तरीकरण से आप क्या समझते है ?
2. 'अलगाव' से क्या तात्पर्य है ?
3. सामाजिक संरचना से क्या आशय है ?
4. परहितवाद क्या है ?
5. श्रम विभाजन से क्या तात्पर्य है ?
6. मुक्त व्यापार क्या है ?
7. सामाजिक बाध्यता से क्या तात्पर्य है ?
8. संघर्ष से आप क्या समझते है ?
9. प्रतियोगिता से क्या तात्पर्य है ?

4 अंक वाले प्रश्न

1. कार्ल मार्क्स के सहयोग संबंधी विचारों का उल्लेख कीजिए।
2. यांत्रिक और सावयवी एकता में अन्तर स्पष्ट कीजिए।
3. विशेषाधिकारी प्राप्त समूहों द्वारा उपभोग किये जाने वाले तीन प्रमुख लाभों का उल्लेख कीजिए।
4. संघर्ष के विभिन्न प्रकारों को उदाहरण सहित समझाइये।

6 अंक वाले प्रश्न

1. समाजशास्त्र में सामाजिक प्रक्रियाओं को समझने के दो तरीके स्पष्ट कीजिए।
2. मनुष्य केवल सहयोग के लिए समायोजन तथा सामंजस्य ही नहीं करते बल्कि इस प्रक्रिया में समाज को बदलते भी हैं – समझाइये।
3. "प्रतियोगिता की विचारधारा पूँजीवाद की सशक्त विचारधारा है।" इस कथन को स्पष्ट कीजिए।
4. प्रतियोगिता, सहयोग और संघर्ष के आपसी सम्बन्ध समझाइये।

अध्याय-2

ग्रामीण तथा नगरीय समाज में सामाजिक परिवर्तन एवं सामाजिक व्यवस्था

इस पाठ में हम जानेंगे:

- सामाजिक परिवर्तन का अर्थ
- सामाजिक परिवर्तन के कारण
- सामाजिक व्यवस्था का अर्थ
- ग्रामीण व नगरीय क्षेत्रों में सामाजिक परिवर्तन व सामाजिक व्यवस्था

स्मरणीय बिन्दु :

- **सामाजिक परिवर्तन** : यह वे परिवर्तन हैं जो कुछ समय बाद समाज की विभिन्न इकाइयों में भिन्नता लाते हैं और इस प्रकार समाज द्वारा मानव संस्थाओं, प्रतिमानों, संबंधों, प्रक्रियाओं, व्यवस्थाओं आदि का स्वरूप पहले जैसा नहीं रह जाता है, यह हमेशा चलने वाली प्रक्रिया है। गिडेन्स के अनुसार सामाजिक परिवर्तन से आशय उस परिवर्तन से है जो "किसी वस्तु अथवा परिस्थिति की मूलाधार संरचना को समयावधि में बदल दे"।

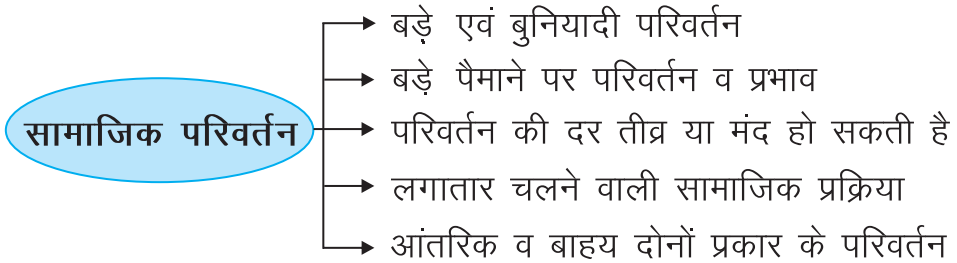

- **आंतरिक परिवर्तन** : किसी युग में आदर्श तथा मूल्यों में यदि पिछले युग के मुकाबले कुछ नयापन दिखाई पड़े तो उसे आंतरिक परिवर्तन कहते हैं।

- **बाह्य परिवर्तन या संरचनात्मक परिवर्तन** : यदि किसी सामाजिक अंग जैसे परिवार, विवाह, नातेदारी, वर्ग, जातीय संस्तरण, समूहों के स्वरूपों तथा आधारों में परिवर्तन दिखाई देता है उसे बाह्य परिवर्तन कहते है।

सामाजिक परिवर्तन की प्रक्रिया के स्वरूप :

उद्‌विकास : परिवर्तन जब धीरे–धीरे लंबे समय तक सरल से जटिल की ओर होता है, तो उसे 'उद्‌विकास' कहते हैं।

चार्ल्स डार्विन का उद्‌विकासीय सिद्धांत :

1. डार्विन के अनुसार आरम्भ में प्रत्येक जीवित प्राणी सरल होता है।
2. कई शताब्दियों अथवा कभी–कभी सहस्त्राब्दियों में धीरे–धीरे अपने आपको प्राकृतिक वातावरण में ढालकर मनुष्य बदलते रहते हैं।
3. डार्विन के सिद्धान्त ने 'योग्यतम की उत्तरजीविता' के विचार पर बल दिया। केवल वही जीवधारी जीवित रहने में सफल होते हैं जो अपने पर्यावरण के अनुरूप अपने आपको ढाल लेते हैं, जो अपने आपको ढालने में सक्षम नहीं होते अथवा ऐसा धीमी गति से करते हैं, लंबे समय में वे नष्ट हो जाते हैं।
4. डार्विन का सिद्धान्त प्राकृतिक प्रक्रियाओं को दिखाता है।
5. इसे शीघ्र सामाजिक विश्व में स्वीकृत किया गया जिसने अनुकूली परिवर्तन में महत्ता पर बल दिया। इसे 'सोशल डार्विनिज़्म' के नाम से जाना गया।

क्रांतिकारी परिवर्तन : परिवर्तन जो तुलनात्मक रूप से शीघ्र अथवा अचानक होता है। इसका प्रयोग मुख्यतः राजनीतिक संदर्भ में होता है। जहाँ पूर्व सत्ता वर्ग को विस्थापित कर दिया जाता है। जैसे– फ्रांसिसी क्रांति, 1917 की रूसी क्रांति अथवा औद्योगिक क्रांति, संचार क्रांति आदि।

- **मूल्यों तथा मान्यताओं में परिवर्तन : (उदाहरण – बाल श्रम)**

  1. 19वीं शताब्दी के अंत में यह माना जाने लगा कि बच्चे जितना जल्दी हो काम पर लग जाएँ। प्रारंभिक फैक्ट्री व्यवस्था बच्चों के श्रम पर आश्रित थी। बच्चे पाँच अथवा छह वर्ष की आयु से ही काम प्रारंम्भ कर देते थें। तब बचपन से संबंधित विशिष्ट संकल्पना नहीं थी।
  2. 20वीं शताब्दी के दौरान अनेक देशों ने बाल श्रम को कानून द्वारा बंद कर दिया।
  3. यद्यपि कुछ ऐसे उद्योग हमारे देश में हैं जो आज भी बाल श्रम पर कम–से–कम आंशिक रूप से आश्रित हैं। जैसे दरी बुनना, छोटी चाय की दुकानें , रेस्तराँ, माचिस बनाना इत्यादि।
  4. बाल श्रम गैर कानूनी है तथा मालिकों को मुजरिमों के रूप में सजा हो सकती है।

सामाजिक परिवर्तन के स्त्रोत अथवा कारण :

- पर्यावरण
- तकनीकी व आर्थिक
- राजनैतिक
- साँस्कृतिक

- **पर्यावरण तथा सामाजिक परिवर्तन :**

  1. पर्यावरण सामाजिक परिवर्तन लाने में एक प्रभावकारी कारक है।
  2. भौतिक पर्यावरण सामाजिक परिवर्तन को एक गति देता है। मनुष्य प्रकृति के प्रभावों को रोकने अथवा झेलने में अक्षम था। उदाहरण के लिए– मरूस्थलीय वातावरण में रहने वाले लोगों के लिए एक स्थान पर रहकर कृषि करना संभव नहीं था, जैसे मैदानी भागों अथवा नदियों के किनारे। नदी या समुद्र के समीप नगरों का विस्तार बड़े पैमाने पर होता है क्योंकि व्यावसायिक गतिविधियों को गति देने के लिए समुद्री या जल मार्ग यातायात अधिक सुविधाजनक और सस्ता पड़ता है।

3. भौगोलिक पर्यावरण या प्रकृति समाज को पूर्णरूपेण बदलकर रख देते हैं। ये बदलाव अपरिवर्तनीय होते हैं अर्थात् ये स्थायी होते हैं तथा वापस अपनी पूर्वस्थिति में नहीं आने देते हैं।

   उदाहरण– प्राकृतिक आपदाएँ जैसे भूकम्प, बाढ़, तूफान, सूखा, अकाल, महामारी आदि।

- **तकनीक व अर्थव्यवस्था और सामाजिक परिवर्तन**

1. भौतिक उद्देश्यों की पूर्ति के लिए व्यक्ति जिस उन्नत प्रविधि का प्रयोग करते है, उसी को प्रौद्योगिकी कहते हैं। जैसे– बल्ब, पहिया, वाष्प इंजन, रेलगाडी उपकरण, आदि जिनसे उत्पादन प्रणाली और अर्थव्यवस्था में भारी बदलाव आया तथा सामाजिक परिवर्तन हुआ।
2. तकनीकी क्रांति से औद्योगीकरण, नगरीकरण, उदारीकरण, जैसे क्षेत्रों को बढ़ावा मिला। उदाहरण– ब्रिटेन के कपड़ा उद्योग में होने वाले तकनीकी प्रयोग। नवीन सूत कातने तथा बुनने की मशीनों ने भारतीय उपमहाद्वीप से हथकरघा को नष्ट कर दिया जो पूरी दुनिया में सबसे व्यापक तथा उच्चस्तरीय था।
3. कई बार आर्थिक व्यवस्था में होने वाले परिवर्तन जो प्रत्यक्षः तकनीकी नहीं होते हैं, भी समाज को बदल सकते हैं। उदाहरण– रोपण कृषि, जहाँ बड़े पैमाने पर नकदी फसलों जैसे– गन्ना, चाय, कपास की खेती की जाती है, ने श्रम के लिए भारी माँग उत्पन्न की।
4. 17वीं से 19वीं शताब्दी में दासों का व्यापार प्रारम्भ किया हुआ।

- **राजनीतिक और सामाजिक परिवर्तन :**

1. राजनीतिक शक्ति ही सामाजिक परिवर्तन का कारण रही है।
2 विश्व के इतिहास में ऐसे अनेक उदाहरण हैं जब कोई देश दूसरे देश से युद्ध में विजयी होता था तो उसका पहला काम वहाँ की सामाजिक व्यवस्था को दुरूस्त करना होता था। अपने शासनकाल

के दौरान अमेरीका ने जापान में भूमि सुधार और औद्योगिक विकास के साथ–साथ अनेक परिवर्तन किए।

3. राजनीतिक परिवर्तन हम केवल अन्तर्राष्ट्रीय पटल पर ही नहीं अपितु अपने देश में भी देख सकते हैं।

उदाहरण

– भारत का ब्रिटिश शासन को बदल डालना एक निर्णायक सामाजिक परिवर्तन था।

– वर्ष 2006 में नेपाली जनता ने नेपाल में 'राजतंत्र' शासन व्यवस्था को ठुकरा दिया ।

– 'सार्वभौमिक वयस्क मताधिकार' राजनैतिक परिवर्तन के इतिहास में अकेला सर्वाधिक बड़ा परिवर्तन है। सार्वभौमिक वयस्क मताधिकारी अर्थात 18 या 18 वर्ष से ज्यादा उम्र के व्यक्तियों को मत देने का अधिकार है।

- **सँस्कृति और सामाजिक परिवर्तन :**

1. व्यक्ति के व्यवहारों या कार्यों में जब बदलाव आता है तो जीवन में साँस्कृतिक परिवर्तन होता है।
2. सामाजिक–साँस्कृतिक संस्था पर धर्म का प्रभाव विशेष रूप से देखने में आता है। उदाहरण– प्राचीन भारत के सामाजिक तथा राजनैतिक जीवन पर बौद्ध धर्म का प्रभाव।
3. धार्मिक मान्यताएँ तथा मानदंडों ने समाज को व्यवस्थित करने में मदद दी तथा यह बिल्कुल आश्चर्यजनक नहीं हैं कि इन मान्यताओं में परिवर्तन ने समाज को बदलने में मदद की।
4. समाज में महिलाओं की स्थिति को साँस्कृतिक उदाहरण के रूप में देखा जा सकता है जैसे– द्वितीय विश्वयुद्ध के समय पाश्चात्य देशों में महिलाओं ने कारखानों में काम करना प्रारंभ कर दिया जो पहले

कभी नहीं हुआ, महिलाएँ जहाज बना सकती थी, भारी मशीनों को चला सकती थी, हथियार आदि का निर्माण कर सकती थीं।

– 'दोहरी सँस्कृति' यह प्रचलित सामाजिक मानदंडो का विरोध अथवा अस्वीकृति है उदाहरण के लिए युवा असंतोष। इन विरोधों की विषयवस्तु बाल, वस्त्रों का फैशन आदि हो सकते हैं।

सामाजिक व्यवस्था :

1. सामाजिक परिवर्तन को सामाजिक व्यवस्था के साथ ही समझा जा सकता है। सामाजिक व्यवस्था तो व्यवस्था में एक प्रवृत्ति होती है जो परिवर्तन का विरोध करती है तथा उसे नियमित करती है।
2. सामाजिक व्यवस्था का अर्थ है किसी विशेष प्रकार के सामाजिक संबंधों, मूल्यों तथा परिमापों को तीव्रता से बनाकर रखना तथा उनको दोबारा बनाते रहना।
3. सामाजिक व्यवस्था को दो प्रकार से प्राप्त किया जा सकता है–
   – समाज में सदस्य अपनी इच्छा से नियमों तथा मूल्यो के अनुसार कार्य करें।
   – लोगों को अलग–अलग ढंग से इन नियमों तथा मूल्यों को मानने के लिए बाध्य किया जाए।

   (प्रत्येक समाज सामाजिक व्यवस्था को बनाये रखने के लिए इन दोनों प्रकारों के मिश्रण का प्रयोग करता है।)
4. सामाजिक व्यवस्था – प्रभाव, सत्ता, असहमति, अपराध, हिंसा, सहयोग तथा असहयोग प्रदान करने वाले तत्व।

प्रभाव , सत्ता तथा कानून :

1. मनुष्य की क्रियाएँ मानवीय संरचना के अनुसार ही होती हैं। हर समूह में सत्ता के तत्व मूल रूप से विद्यमान रहते हैं। संगठित समूह में कुछ साधारण सदस्य होते हैं और कुछ ऐसे सदस्य होते हैं जिनके पास जिम्मेदारी होती है उनके पास ही सत्ता भी होती हे। प्रभुत्ता का दूसरा

नाम शक्ति है।

2. मैक्स वेबर के अनुसार, "समाज में सत्ता विशेष रूप से आर्थिक आधारों पर ही आधारित होती है।" यद्यपि आर्थिक कारक सत्ता के निर्माण में एकमात्र नहीं कहा जाता है। जैसे उत्तर भारत की प्रभुत्ता सम्पन्न जातियाँ।

3. सत्ता, प्रभाव तथा कानून से गहरे रूप से संबंधित है।
   - कानून नियमों की एक व्यवस्था है जिसके द्वारा समाज में सदस्यों को नियंत्रित तथा उनके व्यवहारों को नियमित किया जाता है।
   - प्रभुत्व की धारणा शक्ति से संबंधित है तथा शक्ति सत्ता में निहित होती है।
   - सत्ता का एक महत्वपूर्ण कार्य कानून का निर्माण करना।

4. **सत्ता के प्रकार**
   - परम्परात्मक सत्ता – जो परम्परा से प्राप्त हो
   - कानूनी सत्ता – जो कानून से प्राप्त हो
   - करिश्माई सत्ता – पीर, जादूगर, कलाकार, धार्मिक गुरूओं को प्राप्त सत्ता

अपराध तथा हिंसा :

- अपराध वह कार्य होता है जो समाज में चल रहे प्रतिमानों तथा आदर्शो के विरूद्ध किया जाए। अपराधी वह व्यक्ति होता हे जो समाज द्वारा स्थापित नियमों के विरूद्ध कार्य करता है। जैसे गाँधी जी का नमक कानून तोड़ना ब्रिटिश सरकार की नजर में अपराध था।
- अपराध से समाज में विघटन आता है क्योंकि अपराध समाज तथा सामाजिक व्यवस्था के विरूद्ध किया गया कार्य है।
- हिंसा सामाजिक व्यवस्था का शत्रु है तथा विरोध का उग्र रूप है जो मात्र कानून की ही नहीं बल्कि महत्वपूर्ण सामाजिक मानदंडों का भी अतिक्रमण करती है। समाज में हिंसा सामाजिक तनाव का प्रतिफल है तथा गंभीर समस्याओं की उपस्थिति को दर्शाती है। यह राज्य की सत्ता को चुनौती भी है।

ग्रामीण तथा नगरीय समाज में सामाजिक परिवर्तन तथा युवा वर्ग में बढ़ते अपराध और हिंसा के कारण :

1. बढ़ती हुई महंगाई
2. बेरोजगारी
3. बदले की भावना
4. फिल्मों का प्रभाव
5. नशा
6. लोगों में भय पैदा करना

गाँव, कस्बों और नगरों में सामाजिक व्यवस्था में परिवर्तन :

- गाँव – जिस भौगोलिक क्षेत्र में जीवन कृषि पर आधारित होता है, जहाँ प्राथमिक संबंधों की भरमार होती है तथा जहाँ कम जनसंख्या के साथ सरलता होती है उसे गाँव कहते है।
- कस्बा – कस्बे को नगर का छोटा रूप कहा जाता हैः जो ग्रामीण क्षेत्र से बड़ा होता है परंतु नगर से छोटा होता है।
- नगर – नगर वह भौगोलिक क्षेत्र होता है जहाँ लोग कृषि के स्थान पर अनेक प्रकार के कार्य करते हैं। जहाँ द्वितीयक संबंधों की भरमार होती है। तथा अधिक जनसंख्या के साथ जटिल संबंध भी पाये जाते हैं।
- नगरीकरण – यह एक ऐसी प्रक्रिया है जिसमें जनसंख्या का बड़ा भाग गाँव को छोड़कर नगरों एंव कस्बों की ओर पलायन करता है।
- आर्थिक तथा प्रशासनिक शब्दों में ग्रामीण तथा नगरीय बनावट की दो मुख्य आधार हैं–
  1. जनसंख्या का घनत्व
  2. कृषि

ग्रामीण तथा नगरीय समुदायों में अन्तर :

ग्रामीण क्षेत्र	नगरीय क्षेत्र
1. गांव का आकार छोटा होता है।	1. नगर का आकार बड़ा होता है।
2. सम्बन्ध व्यक्तिगत होते हैं।	2. व्यक्तिगत सम्बन्ध नहीं होते हैं।
3. सामाजिक संस्थाएं जैसे–जाति, धर्म, प्रथाएं अधिक प्रभावशाली होती हैं।	3. सामाजिक संस्थाएं जैसे–जाति, धर्म, प्रथाएं अधिक प्रभावशाली नहीं होती हैं।
4. सामाजिक परिवर्तन धीमा होता है।	4. सामाजिक परिवर्तन तीव्र होता है।
5. जनसंख्या का घनत्व कम होता है।	5. जनसंख्या का घनत्व ज्यादा होता है
6. मुख्य व्यवसाय कृषि होता है।	6. कृषि के अलावा अन्य सभी व्यवसाय होते हैं।

ग्रामीण क्षेत्र और सामाजिक परिवर्तन :

1. संचार के नए साधनों के परिवर्तन से (गाँव व शहरों के बीच) साँस्कृतिक पिछड़ापन न के बराबर।
2. भू–स्वामित्व में परिवर्तन – प्रभावी / प्रबल जातियों का उदय।
3. प्रबल जाति– जो आर्थिक, सामाजिक तथा राजनीतिक रूप से समाज में शक्तिशाली।
4. कृषि की तकनीकी प्रणाली में परिवर्तन, नई मशीनरी के प्रयोग ने जमींदार तथा मजदूरों के बीच की खाई को बढ़ाया।
5. कृषि की कीमतों में उतार–चढ़ाव, सूखा तथा बाढ़ ने किसानों को आत्महत्या करने पर मजबूर कर दिया।
6. निर्धन ग्रामीणों के विकास के लिए सरकार ने 2005 में राष्ट्रीय ग्रामीण रोजगार गारंटी अधिनियम कार्यक्रम शुरू किया।

नगरीय क्षेत्र और सामाजिक परिवर्तन :

1. (क) प्राचीन नगर अर्थव्यवस्था को सहारा देते थे।
   उदाहरण– जो नगर पत्तन और बंदरगाहों के किनारे बसे थे व्यापार की दृष्टि से लाभ की स्थिति में थे।
   (ख) धार्मिक स्थल जैसे राजस्थान में अजमेर, उत्तरप्रदेश में वाराणसी अधिक प्रसिद्ध थे।
2. जनसंख्या का घनत्व अधिक होने से निम्नलिखित समस्याएं उत्पन्न होती हैं –
   – अप्रवास, बेरोजगारी, अपराध, जनस्वास्थ्य, गंदी बस्तियाँ, गंदगी, (सफाई, पानी, बिजली का अभाव), प्रदूषण।
3. नगरीय परिवहन – सरकारी परिवहनों की बजाय निजी संसाधनों का प्रयोग जिससे ट्रैफिक तथा प्रदूषण की समस्याएँ उत्पन्न होती हैं।

शब्दकोश

1. **पृथक्कीकरण** – यह एक प्रक्रिया है जिसमें समूह, प्रजाति, नृजाति, धर्म तथा अन्य कारकों द्वारा विभाजन होता है।
2. **घैटोकरण या बस्तीकरण** – सामान्यतः यह शब्द मध्य यूरोपीय शहरों में यहूदियों की बस्ती के लिए प्रयोग किया जाता है। आज के सन्दर्भ में यह विशिष्ट धर्म, नृजाति, जाति या समान पहचान वाले लोगों के साथ रहनें को दिखाता है। घैटोकरण की प्रक्रिया में मिश्रित विशेषताओं वाले पड़ोस के स्थान पर एक समुदाय पड़ोस में बदलाव का होना है।
3. **मॉस ट्रांजिट** – शहर में बड़ी संख्या में लोगों का तेजी से परिवहन के साधन द्वारा आवागमन।
4. **सीमाशुल्क शुल्क, टैरिफ** : किसी देश में प्रवेश करने या छोडने वाले सामानों पर लगाए कर, जो इसकी कीमत बढ़ाते है और घरेलू रूप से उत्पादित सामानों के सापेक्ष कम प्रतिस्पर्धी बनाते हैं।

5. **प्रभु–जाति** : एम. एन. श्री निवास के अनुसार, यह शब्द ज़मींदार मध्यवर्ती जाति समूहों को संदर्भित करता है जो संख्यात्मक रूप से बड़े है और इसलिए किसी दिए क्षेत्र में राजनीतिक प्रभुत्व का आनंद लेते हैं।

6. **गेटेड समुदाय** : शहरी इलाके (आमतौर पर ऊपरी वर्ग या समृद्धि) नियंत्रित प्रवेश और बाहर निकलने के साथ बाड़, दीवारों और द्वारों से घिरे हुए होते हैं।

7. **भद्रीकरण (Gentrification) :** शब्द एक निम्न वर्ग (शहरी) पड़ोस के बीच एक मध्यम या ऊपरी वर्ग पड़ोस में रूपांतरण का वर्णन करने के लिए प्रयोग किया जाता है।

8. **वैधता** : वैध बनाने की प्रक्रिया, या आधार जिस पर कुछ वैध माना जाता है यानी, उचित, सही, न्यायिक, ठीक इत्यादि।

1 अंक वाले प्रश्न

सही विकल्प चुनेः

1. प्रभु जाति शब्द किसके द्वारा गढ़ा गया था?
   (क) एम एन श्रीनिवास
   (ख) आंद्रे बेत्ते
   (ग) रामास्वामी
   (घ) ए. आर. देसाई

2. किस विचारक ने एक सिद्धांत का प्रस्ताव किया जहां जीवित जीव विकसित होते हैं या प्राकृतिक परिस्थितियों में खुद को ढ़ाल कर कई शताब्दियों या यहाँ तक कि सहस्राब्दियों तक धीरे–धीरे बदलते हैं।
   (क) स्पेंसर (ख) डार्विन
   (ग) आइंस्टीन (घ) कॉम्टे

3. घैटो बस्ती एक शब्द है जो मूल रूप से उस इलाके के लिए इस्तेमाल किया जाता है, जहाँ .....मध्यकालीन यूरोपीय शहरों में रहते थे।

(क) यहूदी

(ख) सिक्ख

(ग) हिन्दू

(घ) कोई नहीं

4. राजस्थान भारत में मेवाड़ के शासक परिवार, ... प्राधिकरण/सता का एक उदाहरण है।

(क) नौकरशाही

(ख) करिश्माई

(ग) पारंपरिक

(घ) कोई नहीं

5. नई कताई और बुनाई मशीनों ने ब्रिटेन में कपड़ा उद्योग में तकनीकी नवाचारों के साथ भारतीय उपमहाद्वीप के उद्योग.....को नष्ट कर दिया।

(क) परिवहन

(ख) हथकरधा

(ग) रेशम

(घ) कपास

खाली स्थान भरें:

1. दिसंबर 2004 में इंडोनेशिया, श्रीलंका, अंडमान द्वीप समूह और तमिलनाडु के कुछ हिस्सों में आई प्राकृतिक आपदा.....
2. "सामाजिक डार्विनवाद" एक सिद्धांत है जिसने ..... परिवर्तन के महत्व पर जोर दिया है।
3. फ्रांसिसी क्रांति (1789–93) और 1917 की सोवियत या रूसी क्रांति किस प्रकार के उदाहरण हैं.....
4. युवा विद्रोह .....संस्कृति का एक उदाहरण है।

5. ..... सामाजिक संबंधों और मूल्यों और मानदंडों के विशेष पैटर्न के सक्रिय रखरखाव और प्रजनन को संदर्भित करता है।

वाक्य को सही लिखें :

1. क्रांति एक प्रकार का परिवर्तन है जो लंबे समय तक धीरे–धीरे होता है।
2. चार्ल्स डार्विन एक सांस्कृतिक वैज्ञानिक थे, जिन्होंने 'योग्यतम के अस्तित्व' के सिद्धांत का प्रस्ताव रखा था
3. जब परिवर्तन का स्त्रोत राष्ट्र के बाहर होता है जैसेः पश्चिमीकरण इसे स्वदेशी परिवर्तन कहा जाता है।
4. नौकरशाही परंपरागत सत्ता के रूप में भी जानी जाती है।
5. राष्ट्रीय ग्रामीण रोजगार गारंटी अधिनियम वर्ष 2005 में लागू किया गया था।

वाक्य सही है या गलत?

1. सामाजिक परिवर्तन समाज के एक बड़े हिस्से को प्रभावित करता है। (सही / गलत)
2. मूल्यों तथा मान्यताओं में आया परिवर्तन सामाजिक परिवर्तन नहीं होता है। (सही / गलत)
3. अधिकतर आधुनिक समाज कुछ रूपों में संस्थागत तथा सामाजिक मानदंडो को बनाए रखने के लिए व्यक्ति तथा दबाव पर निर्भर होते हैं। (सही / गलत)
4. आधुनिक राज्य की एक विशेषता है कि वह अपने कार्य क्षेत्र में वैध हिंसा के प्रयोग पर एकाधिकार समझता है। (सही / गलत)
5. गाँव में शक्ति संरचना में होने वाला परिवर्तन बहुत तीव्र होता है। (सही / गलत)

2 अंक वाले प्रश्न

1. सामाजिक परिवर्तन से आप क्या समझते हैं ?

2. सामाजिक परिवर्तन के स्वरूप कौन–कौन से है ?
3. उद्‌विकास किसे कहते हैं ?
4. सामाजिक परिवर्तन के कारक कौन–कौन से हैं ?
5. प्राणिशास्त्रीय उद्‌विकास के सिद्धांत का सम्बन्ध किस सिद्धान्तकार से है।
6. कुछ प्राकृतिक आपदाओं के नाम लिखिए।
7. तकनीक/प्रौद्योगिकी से आप क्या समझते हैं ?
8. प्रौद्योगिक क्रांति से किन–किन क्षेत्रों को बढ़ावा मिला ?
9. सामाजिक परिवर्तन का उदाहरण दीजिए जो तकनीकी परिवर्तन द्वारा लाया गया।
10. 17वीं – 19वीं शताब्दी में जिस नकदी फसलों ने श्रम के लिए भारी माँग उत्पन्न की, उनके नाम बताइए।
11. "सार्वभौमिक वयस्क मताधिकार" किसे कहते हैं ?
12. सँस्कृति किसे कहते हैं ?
13. सामाजिक व्यवस्था क्या है ?
14. 'प्रभुता' से आप क्या समझते हैं ?
15. 'सत्ता' किसे कहते हैं ?
16. 'शक्ति' किसे कहते हैं ?
17. 'कानून' की परिभाषा दिजिए।
18. 'अपराध' से आप क्या समझते हैं ?
19. विश्वभर के समाजों को उनकी सामाजिक संरचना, संगठन एंव व्यवस्था के आधार पर किन दो भागों में विभाजित किया गया है ?
20. संरचनात्मक परिवर्तन से आप क्या समझते हैं ?

4 अंक वाले प्रश्न

1. ''पर्यावरण'' सामाजिक परिवर्तन का एक प्रमुख कारक है। संक्षेप में बताइए।
2. डार्विन के प्राणिशास्त्रीय उद्विकास के सिद्धान्त को समझना क्यों आवश्यक है ?
3. नगरीकरण ने किन–किन समस्याओं को जन्म दिया है ? संक्षेप में बताइए।
4. ''प्रभावी जातियाँ आर्थिक दृष्टि से बेहद शक्तिशाली हो गई हैं। ''इस कथन का आशय स्पष्ट कीजिए।
5. ''पत्तन और बंदरगाहों के किनारे बसे नगर लाभ की स्थिति में थे।'' इस कथन को समझाइए।
6. भारत में विभिन्न धर्मो के बीच सांप्रदायिक तनाव को उदाहरण सहित समझाइए।
7. ''जब परिवहन के साधन सामाजिक परिवर्तन ला सकते हैं।'' इस कथन को उदाहरण सहित स्पष्ट किजिए।
8. 'बाल श्रम' की उदाहरण सहित चर्चा किजिए।

6 अंक वाले प्रश्न

1. अपराध क्या है ? एक कृत्य कब अपराध माना जाता है ?
2. ''सत्ता की अवधारणा को स्पष्ट किजिए। यह प्रभुत्ता तथा कानून से किस प्रकार संबंधित है ?
3. हिंसा क्या है ? हिंसा की उत्पत्ति के कारणों पर संक्षेप में प्रकाश डालिए।
4. ग्रामीण क्षेत्रों की सामाजिक व्यवस्था तथा उनमें हुए सामाजिक परिवर्तनों का वर्णन कीजिए।

5. नगरीय सामाजिक व्यवस्था तथा उनमें हुए सामाजिक परिवर्तनों पर संक्षेप में प्रकाश डालिए।
6. ''नगरीय जीवन तथा आधुनिकता दोनों एक ही सिक्कें के दो पहलू हैं।''

   इस कथन का आशय स्पष्ट कीजिए।
7. गाँव, कस्बा तथा नगर एक–दूसरे से किस प्रकार भिन्न हैं ?
8. आधुनिक समाज में सामाजिक–सांस्कृतिक परिवर्तन के परिणामों की चर्चा कीजिए।

स्त्रोत / गंद्याश आधरित प्रश्न

प्र॰1 निम्न स्रोत को पढें तथा प्रश्नों का उत्तर दें।

मनुष्य के इतिहास का परिवर्तितचक्र

'पृथ्वी पर मनुष्य का अस्तित्व पचास लाख वर्षो से है। स्थायी जीवन की बुनियादी आवश्यकता कृषि, मात्र बारह हजार वर्ष से अधिक प्राचीन नही है। यदि हम मनुष्य के सम्पूर्ण अस्तित्व को एक दिन मान ले (अर्द्धरात्रि से अर्द्धरात्रि तक) तो कृषि 11:56 मिनट तथा सभ्यता 11:57 मिनट पर अस्तित्व में आई। आधुनिक समाजों का विकास 11:59 तथा 30 सैकेंड में हुआ। मनुष्य के दिन के अंतिम 30 सैकेंड में जितना परिवर्तन हुआ है, वह अब तक पूरे समय के योग के बराबर है।

(स्रोतः एन्थनी गिडेन्स, 2004 सोशयोलॉजी, चौथा संस्करण, पृष्ठ 4.)

(अ) स्थायी जीवन की बुनियादी आवश्यकता क्या है? यह कितनी पुरानी है। (1)

(ब) सामाजिक परिवर्तन की गति कैसी है? (1)

प्र॰2 निम्न स्रोत को पढें तथा प्रश्नों का उत्तर दें।

'द प्रोटेस्टेंट एथिक एण्ड द स्पीरिट ऑफ कैपिटलिज्म' दिखाता है कि पूँजीवादी सामाजिक प्रणाली की स्थापना में कुछ प्रोटेस्टेंट ईसाई संवर्ग

ने किस प्रकार मदद की। आर्थिक तथा सामाजिक परिवर्तन के प्रभाव का यह एक महत्वपूर्ण उदाहरण है। भारत में भी हम सामाजिक परिवर्तन के रूप में धर्म के कई उदाहरण देखते हैं। इनमें सबसे उत्कृष्ट उदाहरण प्राचीन भारत के सामाजिक तथा राजनैतिक जीवन पर बौद्ध धर्म का प्रभाव, तथा मध्यकालीन सामाजिक संरचना में अतिर्निहित जाति व्यवस्था के संदर्भ में व्यापक प्रभाव के रूप में देखा जा सकता है।

(स्रोतः मैक्स वैबर – 'द प्रोटेस्टेंट एथिक एण्ड द स्पीरिट ऑफ कैपिटल्जिम')

(अ) 'द प्रोटेस्टेट एथिक एण्ड द स्पीरिट ऑफ कैपिटल्जिम' के लेखक कौन हैं (1)

(ब) सामाजिक परिवर्तन में धर्म की क्या भूमिका है? (1)

अध्याय–3 DELETED CHAPTER

पर्यावरण और समाज

स्मरणीय बिन्दु :

- **पर्यावरण** : हम जिस वातावरण और परिवेश से चारों ओर से घिरे हैं उसे पर्यावरण कहते हैं।
- मुख्यतः पर्यावरण दो प्रकार का होता है :
  – प्राकृतिक पर्यावरण
  – मानव द्वारा निर्मित पर्यावरण
- पारिस्थितिकी शब्द का अर्थ एक ऐसे जाल से है जहाँ भौतिक और जैविक व्यवस्थाएँ तथा प्रक्रियाएँ घटित होती हैं तथा मनुष्य भी इसका एक अंग होता है। नदियाँ, पर्वत, सागर, मैदान, जीव–जंतु सभी पारिस्थितिकी के अंग हैं।
- वह विज्ञान जो पर्यावरण तथा जीवित वस्तुओं के बीच के संबंधों का अध्ययन करता है उसे सामाजिक पारिस्थितिकी कहते हैं।
- वह परितंत्र जिसका हिस्सा पशु, पौधे तथा पर्यावरण होते हैं, पारिस्थितिकी तंत्र कहलाता है।
- सामाजिक पर्यावरण का उद्‌भव जैव–भौतिक पारिस्थितिकी तथा मनुष्य के हस्तक्षेप की अंतःक्रिया के कारण होता है। यह दो–तरफा प्रक्रिया है जिस प्रकार से प्रकृति समाज को आकार देती है, ठीक उसी प्रकार से समाज भी प्रकृति को आकार देता है।

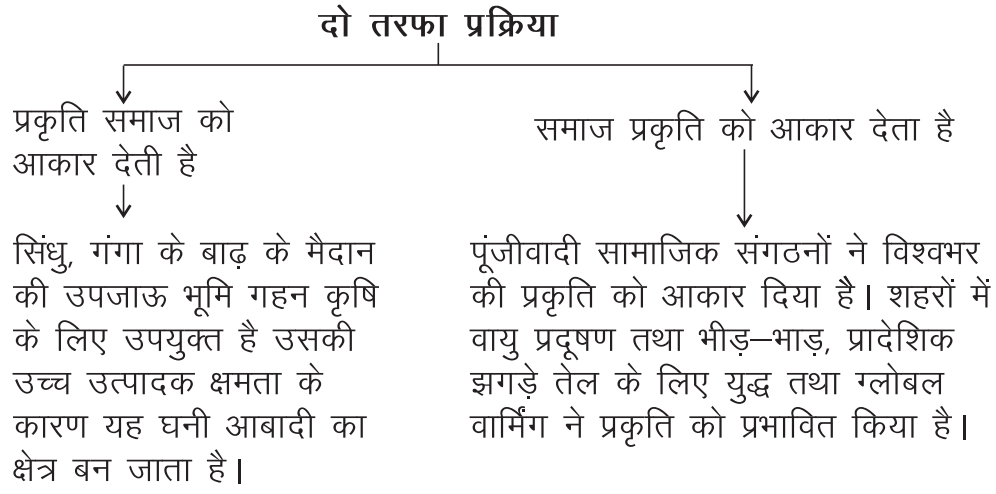

- सामाजिक संगठन कें द्वारा पर्यावरण तथा समाज की अंतः क्रिया को आकार प्रदान किया जाता है।

  उदाहरण के लिए, सम्पत्ति के संबंध यह निर्धारित करते हैं कि कैसे तथा किसके द्वारा प्राकृतिक संसाधनों का उपयोग किया जाएगा। यदि वनों पर सरकार का अधिकार है तो यह अधिकार भी सरकार के पास ही होगा कि वह यह निर्णय ले कि वनों को किसी कम्पनी को लीज पर दें अथवा ग्रामीणों को वन्य उत्पादों को वन्य उत्पादों को इकट्ठा करने का अधिकार दे।

- पर्यावरण तथा समाज के संबंध उसके सामाजिक मूल्यों तथा प्रतिमानों के अतिरिक्त उनके ज्ञान की व्यवस्था में भी प्रतिबिंबित होते हैं।

- हम जोखिम भरे समाज में रहते हैं जहां ऐसी तकनीकों तथा वस्तुओं का प्रयोग करते हैं जिनके बारे में हमें पूरी समझ नहीं है।

  नाभिकिय विपदा – जैसे भोपाल की औद्योगिक दुर्घटना तथा यूरोप में फैली मैडकाऊ बीमारी दर्शाती है कि हम जोखिम भरे समाज में रहते हैं।

पर्यावरण की प्रमुख समस्याएँ ओर जोखिम

- **संसाधनो की क्षीणता** : अस्वीकृत प्राकृतिक संसाधनो का प्रयोग करना

पर्यावरण की एक गंभीर समस्या है। भूजल के स्तर में लगातार कमी इसका एक उदाहरण है।

- **प्रदूषण** : पर्यावरण प्रदूषण आज के समय में एक बहुत बड़ी समस्या बनता जा रहा है। वायु प्रदूषण, जल प्रदूषण, भूमि प्रदूषण, ध्वनि प्रदूषण इत्यादि ऐसे प्रदूषण हैं जिन्होने हमारे पर्यावरण को इतना दूषित कर दिया है कि शुद्ध वायु और जल का मिलना असंभव हो गया है।
- **वैश्विक तापमान** : वृद्धि प्रदूषण की सबसे बड़ी समस्या हमारे सामने आ रही है वैश्विक तापमान वृद्धि के रूप में विश्वव्यापी तापीकरण के कारण हमारा पर्यावरण उलट–पलट हो गया है। अधिक गर्मी हो रही है जिससे ध्रुवों की बर्फ पिघल रही है तथा महासागरों में पानी की मात्रा बढ़ रही है। इससे कई द्वीपों के डूबने का खतरा उत्पन्न हो गया है।
- **जैनेटिकल मोडिफाइड आर्गेनिज़्म्स** : वैज्ञानिक जीन स्पेलिसिंग की नई तकनीकों के द्वारा एक किस्म के गुणों को दूसरी किस्म में डालते हैं ताकि बेहतरीन गुणों से भरपूर वस्तु का निर्माण किया जा सके।
  उदाहरण– बैसिलस के जीन को कपास की प्रजातियाँ में डाला गया है।
- **प्राकृतिक तथा मानव निर्मित पर्यावरण विनाश** :
  प्राकृतिक आपदा उदाहरण– सुनामी।
  मानव निर्मित आपदा – भोपाल औद्योगिक दुर्घटना।

पर्यावरण की समस्याएँ सामाजिक समस्याएँ भी हैं

- पर्यावरण की समस्याएँ सामाजिक समस्याएँ भी हैं क्योंकि पर्यावरण प्रत्यक्ष रूप से समाज को प्रभावित करता है। मनुष्य अपने निजी स्वार्थ के लिए पर्यावरण को काफी समय से प्रदूषित करता आ रहा है तथा प्राकृतिक संसाधनों का दोहन करता आ रहा है। मनुष्यों के इन कृत्यों के कारण ही प्रकृति विनाश की तरफ बढ़ रही है तथा मनुष्य को कई प्रकार की पर्यावरण संबंधी समस्याओं का सामना करना पड़ रहा है।

पर्यावरण से संबंधित कुछ विवादास्पद मुद्दे

- चिपको आन्दोलन (उत्तराखण्ड)
- नर्मदा बचाओं आंदोलन (एम पी और गुजरात)
- भोपाल औद्योगिक दुर्घटना (मध्य प्रदेश)

पर्यावरण संरक्षण की आवश्यकता

- पर्यावरण के संरक्षण की बहु आवश्यकता है क्योंकि जीवन जीने के लिए पर्यावरण सबसे महत्वपूर्ण कारण है। अगर वायु प्रदूषित हो गयी तो हम स्वस्थ जीवन नहीं जी पाएँगें और भावी पीढ़ी के लिए प्राकृतिक संसाधनों की कमी हो जाएगी।

ग्रीन हाउस

- पौधों को जलवायु की अधिक ठंड से बचाने के लिए ढका हुआ ढांचा जिसे हरितगृह भी कहते हैं। इसमें बाहर की तुलना में अंदर का तापमान अधिक होता है।

प्रदूषण के प्रकार :–

1) वायु प्रदूषण – उद्योगो तथा वाहनों से निकलने वाली जहरीली गैसे तथा घरेलू उपयोग के लिए लकड़ी तथा कोयले को जलाने से।
2) जल प्रदूषण – घरेलू नालियाँ, फैक्ट्री से निकलने वाले व्यर्थ पदार्थ, नदियों तथा जलाशयों में नहाना तथा कूड़ा कर्कट डालना।
3) ध्वनि प्रदूषण – लाउडस्पीकर, वाहनों के हार्न, यातायात के साधनों का शोर, मनोरंजन के साधनों से निकलने वाली आवाजें, पटाखे आदि।
4) भूमि प्रदूषण – खेतों में कीटनाशक दवाओं, रसायनिक खादों का प्रयोग, शहरी कूड़ा कर्कट, सीवरेज, तेजाबी वर्षा से रसायनिक पदार्थो का मिट्टी में मिलना।

5) परमाणु प्रदूषण – परमाणु परीक्षण से निकलने वाली किरणें।

वायु प्रदूषण		जल प्रदूषण	
	ध्वनि प्रदूषण		भूमि प्रदूषण
	परमाणु प्रदूषण		

शब्दकोश

- **आर्द्रता विज्ञान** : पानी तथा उसके प्रवाह का विज्ञान या किसी देश या क्षेत्र में जल संसाधनों की व्यापक संरचना का अध्ययन।
- **वनों की कटाई** : पेड़ों को काटने और /अन्य प्रयोजनों के लिए भूमि अधिग्रहण के कारण वन का नुकसान आमतौर पर खेती के लिए।
- **ग्रीन हाउस** : आमतौर पर अत्यधिक ठंड से जलवायु की चरम सीमा से पौधें की रक्षा के लिए एक ढंकी संरचना, एक हरा–घर (जिसे गर्म घर भी कहा जाता है) बाहरी तापमान की तुलना में गर्म तापमान बनाए रखता है।
- **उत्सर्जन** : मानव द्वारा शुरू की गई प्रक्रिया आमतौर पर उद्योगों या वाहनों के सदंर्भ में दिए गए अपशिष्ट गैसों को छोड़ देना।
- **अपशिष्ट** : औद्योगिक प्रक्रियाओं से उत्पादित तरल पदार्थ में अपशिष्ट सामग्री।
- **एक्वाफर्स / जलवाही स्तर** : एक क्षेत्र के भूविज्ञान में प्राकृतिक भूमिगत संरचनाएं जहां पानी संग्रहित हो जाता है।
- **मोनोकल्चर** : जब एक इलाके या क्षेत्र में पौधे का जीवन एक ही विविधता में कम हो जाता है।

1 अंक वाले प्रश्न

सही विकल्प चुनेः

1. जब एक इलाके या क्षेत्र में पौधे का जीवन एक ही किस्म में कम हो जाता है, तो इसे
   ..... के रूप में जाना जाता है।
   (क) मोनोकल्चर
   (ख) सेरीकल्चर
   (ग) मल्टीकल्चर
   (घ) दोहरी संस्कृति

2. भारत और .....विश्व कार्बन और ग्रीनहाउस गैस उत्सर्जन में महत्वपूर्ण योगदान देते हैं।

(क) जापान

(ख) पाकिस्तान

(ग) चीन

(घ) बर्मा

3. सामाजिक पर्यावरण किस प्रकार की प्रक्रिया हैं ?

(क) एक तरफा

(ख) दो तरफा

(ग) तीन तरफा

(घ) चार तरफा

4. चिपको आन्दोलन किस राज्य में हुआ था ?

(क) उत्तराखंड

(ख) पंजाब

(ग) हरियाणा

(घ) गुजरात

5. परमाणु प्रदूषण किस प्रकार होता हैं.

(क) गाड़ी के धुएं से

(ख) परमाणु परीक्षण से

(ग) जल प्रदुषण से

(घ) कारखाने के शोर से

खाली स्थान भरें:

1. पर्यावरणीय संकटो की जड़ें हैं .....

2. .....एक क्षेत्र के भूविज्ञान में प्राकृतिक भूमिगत संरचनाएं है जहां पानी जमा हो जाता है।

3. जल और उसके प्रवाह का विज्ञान है .....
4. ग्रीन हाउस को एक ..... भी कहा जाता है
5. औद्योगिक प्रक्रिया से उत्पन्न द्रव रूपों में अपशिष्ट पदार्थों को कहा जाता है .....

वाक्य सही करें:

1. यूनियन कार्बाइड उद्योग भोपाल में औद्योगिक आपदा के लिए जिम्मेदार हैं।
2. हम उन तकनीकों और उत्पादों का उपयोग करके जिन्हें हम पूरी तरह से समझते हैं जोखिम समाज में रहते हैं।
3. पर्यावरण के साथ मानवीय संबंध तेजी से सरल हो गए हैं।
4. मैड काउ रोग भारत में शुरू हुआ।
5. सामाजिक स्थिति और शक्ति यह निर्धारित करती है कि लोग पर्यावरणीय संकटों से खुद को किस हद तक दूर कर सकते हैं या इससे उबर सकते हैं।

वाक्य सही है या गलत:

1. बढ़ते औद्योगीकरण के कारण संसाधनों का दोहन बड़े पैमाने पर अत्यंत तीव्र गति से हो रहा है। (सही / गलत)
2. सतत विकास वह विकास है जो केवल भविष्य की जरूरतों को ध्यान में रखकर कार्य करता है। (सही / गलत)
3. कुछ पर्यावरण चिंतन कभी–कभी सार्वभौमिक चिंतन बन जाते हैं जब इनका संबंध किसी विशेष सामाजिक वर्ग से नहीं रह जाते। (सही / गलत)
4. सामाजिक पारिस्थितिकी की विचारधारा यह बताती है कि सामाजिक संबंध मुख्य रूप से संपत्ति तथा उत्पादन के संगठन पर्यावरण की सोच व प्रयास को आकार देते हैं। (सही / गलत)

5. तकनीकों और वस्तुओं जिनकी हमें पूरी जानकारी नहीं है, के प्रयोग से हम जोखिम भरे समाज में रहते हैं। (सही / गलत)

2 अंक वाले प्रश्न

1. पारिस्थितिकी क्या है?
2. सामाजिक पारिस्थितिकी से आप क्या समझते है?
3. पर्यावरण क्या होता है?
4. प्राकृतिक और सामाजिक पर्यावरण मे क्या अंतर है?
5. जल प्रदूषण क्या है?
6. विश्व तापीकरण से क्या तात्पर्य है?
7. ग्रीन हाउस का क्या अर्थ है?
8. पर्यावरण प्रदूषण से आप क्या समझते हैं?

4 अंक वाले प्रश्न

1. उस दोहरी प्रक्रिया का वर्णन करें जिसके कारण सामाजिक पर्यावरण का उद्‌भव हुआ ?
2. सामाजिक संस्थाएँ कैसे तथा किस प्रकार से पर्यावरण तथा समाज के आपसी रिश्तों को आकार देती है ?
3. ''पर्यावरण की समस्याएँ सामाजिक समस्याएँ भी है'' – स्पष्ट कीजिए।
4. ''पर्यावरण प्रदूषण के बहुत हानिकारक परिणाम हो सकते हैं'' – इस कथन की व्याख्या करें।
5. पर्यायवरण संरक्षण की आवश्यकता पर प्रकाश डालिए।

6 अंक वाले प्रश्न

1. पर्यावरण की प्रमुख समस्याओं का उल्लेख कीजिए।
2. पर्यावरण प्रबन्ध एक कठिन कार्य है – भोपाल औद्योगिक दुर्घटना का उदाहरण देकर स्पष्ट कीजिए।

3. ''आज हम एक जोखिम भरे समाज में रहते है'' – इस कथन को उदाहरणों सहित समझाइए।
4. पर्यावरण से संबंधित कुछ विवादास्पद मुद्दों का उल्लेख कीजिए।
5. पर्यावरण क्या है ? पर्यावरण का व्यक्ति के जीवन से क्या संबंध है? स्पष्ट कीजिए।
6. विभिन्न प्रकार के प्रदूषण, उनके कारणों और उन्हें रोकने के उपायों का उल्लेख कीजिए।

अध्याय-4

पाश्चात्य समाजशास्त्री - एक परिचय

इस पाठ में हम जानेंगें:

- समाजशास्त्र के अभ्युदय का संदर्भ
  - ज्ञानोदय अथवा वैज्ञानिक क्रान्ति
  - फ्रांसिसी क्रान्ति
  - औद्योगिक क्रान्ति
- कार्ल मार्क्स का समाजशास्त्र में योगदान
- एमिल दुर्खाइम का समाजशास्त्र में योगदान
- मैक्स वेबर का समाजशास्त्र में योगदान

- समाजशास्त्र के अभ्युदय में तीन क्रांतियों का महत्वपूर्ण हाथ है –
  - ज्ञानोदय अथवा वैज्ञानिक क्रान्ति (विवेक का युग)
  - फ्रांसिसी क्रांति, तथा
  - औद्योगिक क्रांति

- **ज्ञानोदय**

  17वीं शताब्दी के उत्तरार्द्ध व 18वीं शताब्दी के पश्चिमी यूरोप में संसार के बारे में सोचनें – विचारने के बिलकुल नए व मौलिक दृष्टिकोण का जन्म हुआ। ज्ञानोदय या प्रबोधन के नाम से जाने गए इस नए दर्शन ने जहाँ एक तरफ मनुष्य को संपूर्ण ब्राह्याड के केन्द्र बिन्दु के रूप में स्थापित किया, वहीं दूसरी तरफ विवेक को मनुष्य की मुख्य विशिष्टता का दर्जा दिया।

- इसका तात्पर्य यह है कि ज्ञानोदय को एक संभावना से वास्तविक यथार्थ में बदलने में उन वैचारिक प्रवृत्तियों का हाथ है जिन्हें आज 'धर्मनिरपेक्षता', वैज्ञानिक सोच 'व' 'मानवतावादी सोच' की संज्ञा देते हैं।

- इस मानव व्यक्ति को 'ज्ञान का पात्र' की उपाधि भी दी गई। केवल उन्हीं व्यक्तियों को पूर्ण रूप से मनुष्य माना गया जो विवेकपूर्ण ढंग से सोच–विचार कर सकते हों जो इस काबिल नहीं समझे गए उन्हें आदिमानव या बर्बर मानव कहा गया।
- **फ्रांसिसी क्रांति (1789)** ने व्यक्ति तथा राष्ट्र–राज्य के स्तर पर राजनीतिक संप्रभुत्ता के आगमन की घोषणा की।
  - मानवाधिकार के घोषणापत्र ने सभी नागरिकों की समानता पर बल दिया तथा जन्मजात विशेषाधिकारों की वैधता पर प्रश्न उठाया।
  - इसने व्यक्ति को धार्मिक अत्याचारी शासन से मुक्त किया, जो फ्रांस की क्रांति के पहले वहाँ अपना वर्चस्व बनाए हुए था।
  - फ्रांसिसी क्रान्ति के सिद्धान्त – स्वतंत्रता, समानता तथा बंधुत्व–आधुनिक राज्य के नए नारे बने।

औद्योगिक क्रांति

- आधुनिक उद्योगों की नींव औद्योगिक क्रांति के द्वारा रखी गई, जिसकी शुरूआत ब्रिटेन में 18वीं शताब्दी के उतरार्द्ध तथा 19वीं शताब्दी के प्रारंभ में हुई।
- इसके दो प्रमुख पहलू थे

(i) पहला, विज्ञान तथा तकनीकी का औद्योगिक उत्पादन मे व्यवस्थित प्रयोग

(ii) दूसरा औद्योगिक क्रांति ने श्रम तथा बाजार को नए ढंग से व बड़े पैमाने पर संगठित करने के तरीके विकसित किए , जैसे कि पहले कभी नहीं हुआ।

• औद्योगिक क्रांति के कारण सामाजिक परिवर्तन –

- शहरी इलाको में बसें हुए उद्योगों को चलाने के लिए मजदूरों की माँग को उन विस्थापित लोगों ने पूरा किया जो ग्रामीण इलाकों को

छोड़, श्रम की तलाश में शहर आकर बस गए थे।

– कम तनख्वाह मिलने के कारण अपनी जीविका चलाने के लिए पुरूषों और स्त्रियों को ही नहीं बल्कि बच्चों को भी लंबे समय तक खतरनाक परिस्थितियों में काम करना पड़ता था।

– आधुनिक उद्योगों ने शहरों को देहात पर हावी होने में मदद की।

– आधुनिक शासन पद्धतियों के अनुसार राजतंत्र को सार्वजनिक सामूहिक जिम्मेदारियाँ उठानी पडी और इनके लिए नए प्रकार की जानकारी व ज्ञान की आवश्यकता महसूस हुई।

• **कार्ल मार्क्स**

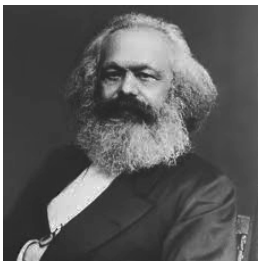

– मार्क्स का कहना था कि समाज ने विभिन्न चरणों में उन्नति की है। ये चरण हैं– 1. आदिम सामन्तवाद, 2. दासता, 3. सामन्तवाद व्यवस्था, 4. पूँजीवाद तथा 5. समाजवाद।
उनका मानना था कि बहुत जल्दी ही पूँजीवाद का स्थान समाजवाद ले लेगा।

अलगावः– पूँजीवादी समाज में व्यक्ति स्वयं को दूसरों से तथा अपने उत्पाद से दूर पाता है इसे अलगाव कहा जाता है।

– पूँजीवाद समाज में मनुष्य प्रकृति से भी अपने आपको काफी अलग–थलग पाता है।

– परंतु फिर भी मार्क्स का यह मानना था कि पूँजीवाद, मानव इतिहास में एक आवश्यक तथा प्रगतिशील चरण रहा क्योंकि इसने ऐसा वातावरण तैयार किया जो समान अधिकारों की वकालत करने तथा शोषण और गरीबी को समाप्त करने के लिए आवश्यक है।

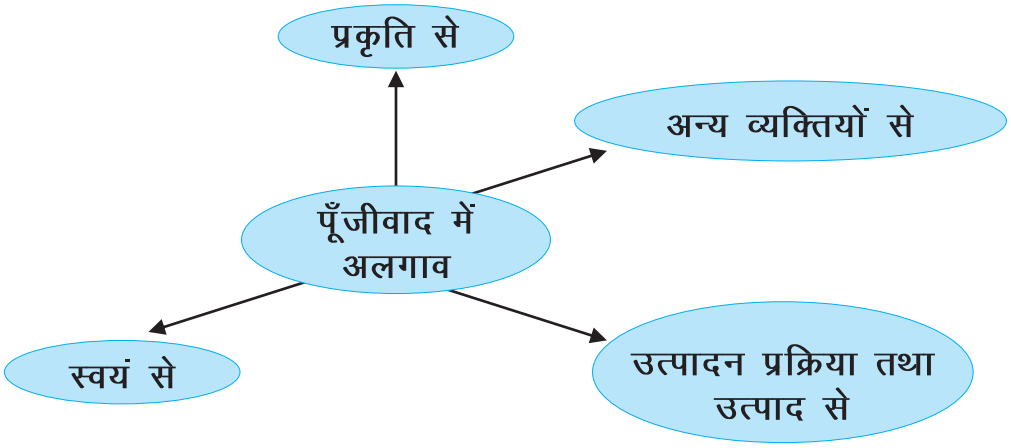

अर्थव्यवस्था के बारे में मार्क्स की धारणा

– अर्थव्यवस्था के बारे में मार्क्स की धारणा थी कि यह उत्पादन के तरीकों पर आधारित होती है। उत्पादन शक्तियों से तात्पर्य उत्पादन के उन सभी साधनों से है, जैसे – भूमि, मजदूर, तकनीक, ऊर्जा के विभिन्न साधन।

- उत्पादन की व्यवस्था को एक इमारत की तरह ले सकते है जिसका एक आधार/नींव होती है तथा ऊपर एक ढाँचा होता है।
- अर्थव्यवस्था का आधार प्राथमिक तौर पर आर्थिक होता है। और इसमें उत्पादक शक्तियाँ और उत्पादन संबंध शामिल होते है।
- यहाँ उत्पादन के साधनों से तात्पर्य भूमि, मजदूर, तकनीक आदि से है और उत्पादन संबंध के अन्तर्गत वे सभी आर्थिक संबंध आते है जो मजदूर संगठन के रूप में उत्पादन मे भाग लेते हैं।

– मार्क्स ने आर्थिक संरचनाओं और प्रक्रियाओं पर अधिक बल दिया क्योंकि उनका विश्वास था कि मानव इतिहास में ये प्रत्येक सामाजिक व्यवस्था की नींव होते हैं।

- **वर्ग संघर्ष**

– जब उत्पादन के साधनों में परिवर्तन आता है तब विभिन्न वर्गो में

संघर्ष बढ़ जाता है। मार्क्स का यह मानना था कि ''वर्ग संघर्ष सामाजिक परिवर्तन लाने वाली मुख्य ताकत होती है''। मार्क्स वर्ग संघर्ष के प्रतिपादक थे।

– पूँजीवादी व्यवस्था में उत्पादन के सभी साधनों पर पूँजीवादी वर्ग का अधिकार होता है श्रमिक वर्ग का उत्पादन के सभी साधनों पर से अधिकार समाप्त हो गया।

– संघर्ष होने के लिए यह आवश्यक है कि वर्ग/समूह अपने वर्ग हित तथा हित पहचान के प्रति जागरूक हों।

– इस प्रकार की 'वर्ग चेतना' के विकसित होने के उपरांत उनके द्वारा शासक वर्ग को उखाड़ फेंका जाता है जो पहले से शासित अथवा अधीनस्थ वर्ग होता है– इसे ही क्रांति कहते हैं।

- **एमिल दुर्खाइम**

– दुर्खाइम की दृष्टि में समाजशास्त्र की विषय वस्तु – सामाजिक तथ्यों का अध्ययन दूसरे विज्ञानों से तुलनात्मक रूप से भिन्न है।

– अन्य प्राकृतिक विज्ञानों की तरह इसे भी आनुभाविक विषय होना चाहिए था।

सामाजिक तथ्य

– दुर्खाइम के लिए समाज एक सामाजिक तथ्य था जिसका अस्तित्व नैतिक समुदाय रूप में व्यक्ति के ऊपर था।

– सामाजिक तथ्य वस्तुओं की तरह होते हैं। वे व्यक्ति के लिए बाहय होते हैं परन्तु उनके आचरण को बाधित करते हैं।

– कानून, शिक्षा तथा धर्म जैसी संस्थाएँ सामूहिक तथ्यों का गठन करती है।

– ये व्यक्ति विशिष्ट के लिए न होकर सामान्य प्रकृति के होते है और व्यक्तियों से स्वतंत्र होते हैं।

समाज का वर्गीकरण

1. **यांत्रिक एकता** : दुर्खाइम के अनुसार, परम्परागत संस्कृतियों का आधार व्यक्तिगत एकरूपता होती है तथा यह कम जनसंख्या वाले समाजों में पाई जाती है।

2. **सावयवी एकता** : यह सदस्यों की विषमताओं पर आधारित होती है। पारस्परिक निर्भरता सावयवी एकता का सार है इसमें आर्थिक अन्तः निर्भरता बनी रहती है।

यांत्रिक एकता	सावयवी एकता
1. यह आदिम समाज में पायी जाती है।	1. यह आधुनिक समाज में पायी जाती है।
2. यह कम जनसंख्या वाले समाज में पाई जाती है।	2. यह बृहत जनसंख्या वाले समाज में पाई जाती है।
3. इसका आधार व्यक्तिगत एकरूपता होती है।	3. यह सदस्यो की विषमताओं पर आधारित होती है।
4. यह विशिष्ट रूप से विभिन्न स्वावलंबित समूह हैं।	4. यह स्वावलंबी न होकर अपने उत्तरजीवी की दूसरी इकाई अथवा समूह पर आश्रित होती है।
5. यांत्रिक एकता व्यक्ति तथा समाज के बीच प्रत्यक्ष सम्बन्ध स्थपित करती है।	5. सावयवी एकता में समाज के साथ व्यक्ति का प्रत्यक्ष सम्बन्ध नहीं होता।
6. यात्रिक एकता समानताओं पर आधारित होती है।	6. सावयवी एकता का आधार श्रम विभाजन है।
7. यान्त्रिक एकता को हम दमनकारी कानूनों में देख सकते हैं।	7. सावयवी एकता वाले समाजों में प्रतिकारी तथा सहकारी कानूनों की प्रमुखता दिखाई देती है।
8. यान्त्रिक एकता की शक्ति सामूहिक चेतना की शक्ति में होती है।	8. सावयवी एकता की शक्ति/ उत्पत्ति कार्यात्मक भिन्नता पर आधारित है।

दुर्खाइम द्वारा – दमनकारी कानून तथा क्षतिपूरक कानून में अंतर

दमनकारी कानून	क्षतिपूर्वक कानून
1. दमनकारी समाज में कानून द्वारा गलत कार्य करने वालों को सजा दी जाती थी जो एक प्रकार से उसके कृत्यों के लिए सामूहिक प्रतिशोध होता था।	1. आधुनिक समाज में कानून का मुख्य उद्देश्य अपराधी कृत्यों में सुधार लाना या उसे ठीक करना है।
2. आदिम समाज में व्यक्ति पूर्ण रूप से सामूहिकता में लिप्त था।	2. आधुनिक समाज में व्यक्ति को स्वायत्त शासन की कुछ छूट है।
3. आदिम समाज में व्यक्ति तथा समाज मूल्यों व आचरण की मान्यताओं को संजोये रखने के लिए आपस में जुड़े रहते थे।	3. आधुनिक समाज में समान उद्देश्य वाले व्यक्ति स्वैच्छिक रूप से एक दूसरे के करीब आकर संगठन बना लेते है।

मैक्स वेबर

– वेबर पहले व्यक्ति थे जिन्होने विशेष तथा जटिल प्रकार की 'वस्तुनिष्ठा' की शुरूआत की जिसे सामाजिक विज्ञान को अपनाना था।

– 'समानुभूति समझ' के लिए यह आवश्यक है कि समाजशास्त्री, बिना स्वयं की निजी मान्यताओं तथा प्रक्रिया से प्रभावित हुए, पूर्णरूपेण विषयगत अर्थो तथा सामाजिक कर्ताओं की अभिप्रेरणाओं को ईमानदारी पूर्वक विषयगत अर्थो तथा सामाजिक कर्ताओं की अभिप्रेरणाओं को ईमानदारीपूर्वक अभिलिखित करें।

– आदर्श प्रारूपः एक पद्धतिशास्त्रीय उपकरण है

- आदर्श प्रारूप मॉडल की ही तरह एक मानसिक रचना है जिसका उपयोग सम्पूर्ण घटना या समस्त व्यवहार या क्रिया की वास्तविकता को व्यक्त करने के लिए किया गया।

- ये विश्लेषण में मदद करते हैं। वेबर ने आदर्श प्रारूपों का प्रयोग सत्ता को परिभाषित करने के लिए किया।

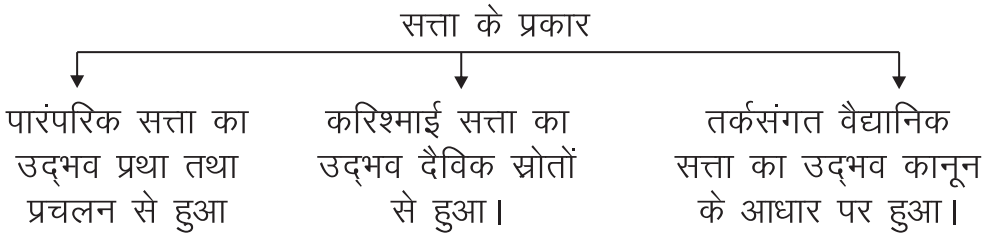

नौकरशाही

– नौकरशाही संगठन का वह साधन था जो घरेलू दुनिया को सार्वजनिक दुनिया से अलग करने पर आधारित था।

नौकरशाही सत्ता की विशेषताएँ निम्न है :–

1. अधिकारियों के प्रकार्य
2. पदों का सोपानिक क्रम
3. लिखित दस्तावेजों की विश्वसनीयता
4. कार्यालय का प्रबंधन
5. कार्यालयी आचरण

1. **अधिकारियों के प्रकार्य** – अधिकारियों में कार्य विभाजन प्रशासनीय नियमों के अनुसार किया जाता है। उनका चयन लिखित परीक्षा के आधार पर होता है।
2. **पदों का सोपनिक क्रम** – उच्च अधिकारियों के अधीन निम्न पदाधिकारियों का काम करने की एक संस्तरणात्मक व्यवस्था होती है। उच्च अधिकारी निम्न अधिकारियों को आदेश देते है। निम्न अधिकारी उसका पालन करते हैं।
3. **लिखित दस्तावेज** – कार्यालय के सारे कार्य को लिखित रूप में किया जाता है ताकि विश्वसनीयता बनी रहे। फाइलों को सम्भाल कर रखा जाता है।
4. **कार्यालय का प्रबंधन** – कार्यालय का प्रबंध साधारण नियमों के अनुसार होता है। दफ्तर का कार्य अब एक पेशा बन गया है। अतः प्रबंधन अधिकारी कार्यालय को सुचारू रूप से चलाने की व्यवस्था करते हैं।

5. **कार्यालय का आचरण** – प्रत्येक कार्यालय के कुछ नियम होते हैं जिसका सबको पालन करना पड़ता है।

शब्दकोश

- **उत्पादन का तरीका** : यह भौतिक उत्पादन की एक प्रणाली है जो लंबे समय तक बनी रहती है। उत्पादन के प्रत्येक तरीके को उत्पादन के साधनों (उदाहरण : प्रौद्योगिकी और उत्पादन संगठन के रूप) और उत्पादन के संबंधों (जैसेः दासता, मजदूरी, श्रम) द्वारा प्रतिष्ठित किया जाता है।
- **कार्यालय** : नौकशाही के सदंर्भ में निर्दिष्ट शक्तियों और जिम्मेदारियों के साथ एक सार्वजनिक पद या अवैयक्तिक और औपचारिक प्राध्किरण की स्थिति।
- **पुनर्जागरण काल** : 18 वीं शताब्दी में यूरोप की अवधि जब दार्शनिकों ने धार्मिक सिद्धांतों की सर्वोच्चयता को खारिज कर दिया, सच्चाई के साधन के रूप में स्थापित कारण, और मानव के एकमात्र वाहक के रूप में स्थापित किया।

अलगाववाद

– पूँजीवाद समाज में यह ऐसी प्रक्रिया है जिसके अन्तर्गत मनुष्य प्रकृति, अन्य मनुष्य, उनके कार्य तथा उत्पाद से स्वयं को दूर महसूस करता है तथा अपने को अकेला पाता है, उसे अलगाववाद कहते हैं।

सामाजिक तथ्य

– सामाजिक वास्तविकता का एक पक्ष जो आचरण तथा मान्यताओं के सामाजिक प्रतिमान से सम्बन्धित है जो व्यक्ति द्वारा बनाया नही जाता परन्तु उनके व्यवहार पर दबाव डालता है।

1 अंक वाले प्रश्न

सही विकल्प चुनें :

1. तीन क्रांतियों ने समाजशास्त्र के उदभव का मार्ग प्रशस्त कियाः वे थी———

   (क) वैज्ञानिक क्रांति, फ्रांसिसी क्रांति; औद्योगिक क्रांति

   (ख) फ्रांसिसी क्रांति, अमेरिकी क्रांति, वैज्ञानिक क्रांति

   (ग) अमेरिकी क्रांति, वैज्ञानिक क्रांति, औद्योगिक क्रांति।

   (घ) इनमें से कोई भी नहीं।

2. आधुनिक उद्योग की नींव औद्योगिक क्रांति द्वारा रखी गई थी, जो सबसे पहले शुरू हुई थी.....

   (क) ब्रिटेन में

   (ख) फ्रांस में

   (ग) जापान में

   (घ) जर्मनी में

3. किस समाजशास्त्री ने समाज का वर्गीकरण यांत्रिक एकता और सावयवी एकता में किया है.

   (क) मार्क्स

   (ख) वेबर

   (ग) दुर्खाइम

   (घ) काम्टे

4. आदर्श प्रारूप सिद्धांत किस समाजशास्त्री द्वारा दिया गया है.

   (क) मार्क्स

   (ख) काम्टे

   (ग) वेबर

   (घ) दुर्खाइम

5. फ्रांसिसी क्रांति की आधुनिक विश्व को महत्वपूर्ण देन हैं.
   क) समानता एवं स्वतंत्रता
   (ख) बंधुत्व एवं समानता
   (ग) समानता
   (घ) स्वतंत्रता, समानता एवं बंधुत्व

खाली स्थान भरें:

1. वेबर के अनुसार ..... संगठन का एक तरीका है, जिसने घरेलू दुनिया को सार्वजनिक दुनिया से अलग होने का आधार बनाया ।
2. भारत के नागरिक स्वतंत्रता, समानता और बंधुत्व का आनंद लेते हैं, ... क्रांति द्वारा दिए गए आधुनिक राज्य के शब्दों को देखते हैं।
3. कम्युनिस्ट घोषणापत्र (1848) ..... और ..... द्वारा लिख गया था
4. सामाजिक तथ्य ..... हैं, जो लोगों के जुड़ाव से निकलते हैं।
5. वेबर के वर्गीकरण के अनुसार, इंदिरा गांधी में पायी गयी सत्ता, ... सत्ता की प्रकार थी।

वाक्य सही करें:

1. मैक्स वेबर द्वारा लिखी गई किताब है 'द एलीमेंट्री फॉर्म्स ऑफ रिलिजियस लाइफ'।
2. आपके और आपके सहपाठियों द्वारा गठित समूह मार्क्सवादी अर्थो में एक वर्ग है।
3. ऐतिहासिक भौतिकवाद की अवधारणा को मैक्स वेबर ने आगे रखा।
4. समाज की वैज्ञानिक समझ जिसे दुर्खाइम ने विकसित करने की मांग की, वह वैज्ञानिक तथ्यों की मान्यता पर आधारित थी।

5. ऐसा समाज जिसमें सामाजिक संबंध औपचारिक, अवैयक्तिक व स्वार्थपूर्ण उद्देश्यों से बनाए जाते हैं, वहाँ यांत्रिक एकता पाई जाती है।

वाक्य सही है या गलत?

1. औद्योगिक क्रान्ति ने श्रम व बाजार को नए ढंग से व बड़े पैमाने पर संगठित किया। (सही/गलत)
2. आधुनिक समाज में नियमों की प्रकृति दमनकारी होती है। (सही/गलत)
3. मार्क्स के अनुसार पूँजीवाद मानव इतिहास में एक आवश्यक तथा प्रगतिशील चरण रहा। (सही/गलत)
4. एमिल दुर्खाइम को समाजशास्त्र के औपचारिक संकाय का संस्थापक माना जाता है। (सही/गलत)
5. 'आदर्श प्रारूप' वास्तविकता को हू–ब–हू दर्शाता है। (सही/गलत)

2 अंक वाले प्रश्न

1. 'ज्ञानोदय' शब्द अर्थ बताएँ।
2. कार्ल मार्क्स के अनुसार समाज के विकास के विभिन्न स्तर क्या थे ?
3. नौकरशाही से आप क्या समझाते हैं ?
4. परंपरागत सत्ता करिश्माई सत्ता से किस प्रकार भिन्न है ?
5. सामाजिक तथ्य क्या है ?
6. तीन क्रांतियों के नाम लिखें जिनके कारण समाजशास्त्र का अभ्युदय हुआ।

4 अंक वाले प्रश्न

1. फ्रांसिसी क्रांति पर संक्षेप में लिखें।

2. सामाजिक जीवन पर औद्योगीकरण के प्रभाव का वर्णन करें।
3. अलगाव की प्रक्रिया का उल्लेख करें।
4. वर्ग संघर्ष पर कार्ल मार्क्स के दृष्टिकोण बताएँ ।
5. दुर्खाइम की समाजशास्त्रीय विचारधारा का उल्लेख करें।
6. यांत्रिक एकता के आधार पर समाज की विशेषताएँ बतायें।,
7. 'सावयवी एकता आधुनिक समाज की पहचान है'। व्याख्या करें।
8. वेबर के अनुसार आदर्श प्रारूप क्या हैं?

6 अंक वाले प्रश्न

1. समाजशास्त्र में कार्ल मार्क्स के उच्च योगदान का संक्षिप्त वर्णन करें।
2. नौकरशाही की प्रमुख विशेषताओं का उल्लेख कीजिए।
3. समाजशास्त्र में मैक्स वेबर के योगदान पर प्रकाश डालें।
4. समाजशास्त्र मे एमिल दुर्खाइम के योगदान पर चर्चा करें।

गद्यांश आधरित प्रश्न

निम्नलिखित गद्यांश को पढें तथा निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दें।

अगर दो वर्ग सिद्धान्ततः एक दूसरे के विरोधी भी हो तो भी वे स्वतः संघर्ष में नही पड़ते हैं। संघर्ष होने के लिए यह आवश्यक है कि वे अपने वर्ग हित तथा पहचान के प्रति जागरूक हों साथ ही अपने विरोधी के हितों तथा पहचान के प्रति सजग रहें। इस प्रकार की वर्ग चेतना के विकसित होने के उपरांत राजनैतिक गोलबंदी के तहत वर्ग संघर्ष होते हैं।

प्र॰1 मार्क्स के अनुसार दो वर्गो में संघर्ष की अनिवार्य दशा क्या है?

प्र॰2 मार्क्स के अनुसार वर्ग संघर्ष क्यों होता है?

निम्नलिखित गद्यांश को पढें तथा निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दें।

आधुनिक समाज की एक मुख्य विशेषता 'सावयवी एकता' है और यह सदस्यों की विषमताओं पर आधरित होती है। यह वृहत् जनसंख्या वाले समाज में पाई

जाती है जहाँ अधिकतर सामाजिक संबंध अवैयक्तिक होते हैं। इस प्रकार के समाज का आधार संस्थाएँ होती है और इसका प्रत्येक घटक अथवा इकाई अपने आप में स्वावलंबी न होकर अपने उत्तरजीवी की दूसरी इकाई अथवा समूह पर आश्रित होते हैं। पारस्परिक निर्भरता सावयवी एकता का सार है।

प्र॰1 आधुनिक समाजों में संस्थाओ में पाई जाने वाली एकता का सार क्या होता है?

प्र॰2 परंपरागत समाजों में कौन से प्रकार की एकता पाई जाती है?

अध्याय-5

भारतीय समाजशास्त्री

इस पाठ में हम जानेंगे:

- अकस्मात व अग्रणीय मानवविज्ञानियों का भारतीय समाजशास्त्र में योगदान
- भारत में समाजशास्त्र शिक्षण व शोधकार्य का आरंभ
- मुख्य चार भारतीय समाजशास्त्रियों (जी.एस. धुर्ये, डी.पी. मुकर्जी, ए.आर. देसाई व एम. एन. श्री निवास) का योगदान

भारतीय समाजशास्त्र में अकस्मात् व अग्रणीय मानवविज्ञानियों का योगदान

अनन्तकृष्ण अय्यर (1861 – 1937)

- सर्वप्रथम सामाजिक मानवविज्ञानी व महाविद्यालय में शिक्षक थे।
- अनन्तकृष्ण अय्यर को 1902 में कोचीन के दीवान ने राज्य के नृजातीय सर्वेक्षण के लिए कहा क्योंकि ब्रिटिश सरकार सभी रजवाडों में नृजातीय सर्वेक्षण कराना चाहती थी।
- उन्होनें इस कार्य को स्वयंसेवी के रूप में पूर्ण किया ।
- कोचीन रजवाडे की तरफ से उन्हे राय बहादुर तथा दीवान बहादुर की उपाधि से सम्मानित किया गया।
- उन्हे Indian Science Congress के नृजातीय विभाग का अध्यक्ष चुना गया।

शरदचन्द्र राय (1871 – 1942)

- यह एक अग्रणी मानवविज्ञानी थे।
- इन्होंने ईसाई मिशनरी विद्यालय में अंग्रेजी के शिक्षक के रूप में कार्य किया।
- ये 44 वर्ष तक रांची रहे तथा छोटा नागपुर (झारखण्ड़) में रहनें वाली जनजातियों की संस्कृति तथा समाज के विशेषज्ञ बने।

- उन्होंने जनजातीय क्षेत्रों का व्यापक भ्रमण किया तथा उनके बीच रहकर गहन क्षेत्रीय अध्ययन किया।
- बाद में उन्हे सरकारी दुभाषिए के रूप में रांची की अदालत में नियुक्त किया गया। उनके द्वारा ओराँव, मुंडा तथा खरिया जनजातियों पर किया गया लेखन कार्य भी प्रकाशित हुआ।

1. जाति तथा प्रजाति पर धूर्ये के विचार –

जाति एंव प्रजाति :

- हर्बर्ट रिजले के अनुसार मनुष्य का विभाजन उसकी शारीरिक विशिष्टताओं को ध्यान में रखते हुए (जैसे खोपड़ी की चौड़ाई, नाक की लम्बाई अथवा कपाल का भार आदि) किया गया है तथा उसे भिन्न प्रजातियों मे बाँटा गया है।
- रिजले की यह मान्यता थी कि भारत विभिन्न प्रजातियों के अध्ययन की एक 'प्रयोगशाला' था क्योंकि जातीय अंतर्विवाह निषिद्ध था। उनके अनुसार जाति का उद्भव प्रजाति से हुआ होगा। क्योंकि विभिन्न जाति समूह किसी विशिष्ट प्रजाति से संबधित लगते है।

- सामान्य रूप से भारतीय उच्च जातियाँ, आर्य प्रजाति की विशिष्टताओं से मिलती हैं। जबकि निम्न जातियों में अनार्य प्रजातियो के गुण देखने को मिलते हैं
- उन्होने सुझाव दिया कि निम्न जातियों ही भारत की वास्तविक आदि निवासी हैं। उन्हें आर्यो द्वारा दबाया गया।
- धूर्ये ने यह सुझाव दिया कि रिजले का तर्क व्यापक रूप से केवल उत्तरी भारत के लिए ही सही है। भारत के अन्य भागों में, अंतर समूहों की विभिन्नताएँ व्यापक नहीं हैं।

- अतः 'प्रजातीय शुद्धता' केवल उत्तर भारत में ही बची हुई थी क्योंकि वहाँ अंतर्विवाह निषिद्ध था। शेष भारत में अंतःविवाह का प्रचलन उन वर्गों में हुआ जो प्रजातीय स्तर पर वैसे ही भिन्न थे।

धूर्ये के अनुसार जाति की विशेषताएँ :

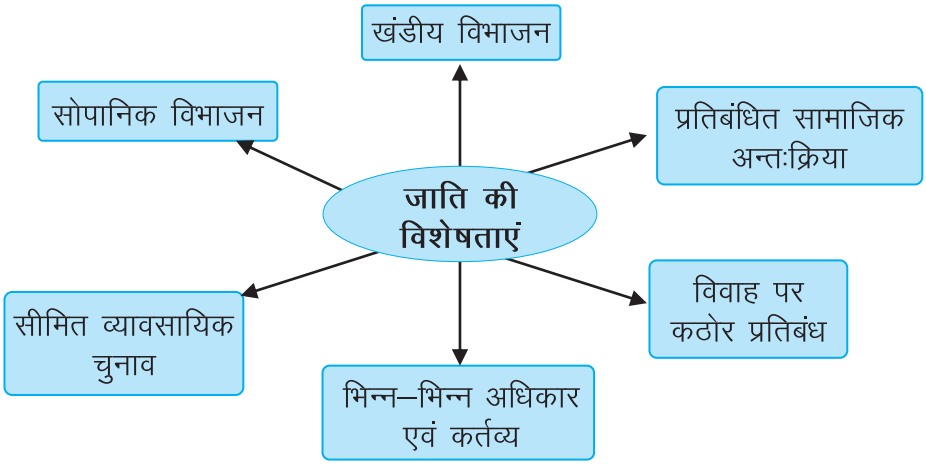

- खंडीय विभाजन पर आधारित : समाज कई बंद पारस्पारिक अनन्य खंडों में बँटा है। जो जन्म से निर्धारित होते है
- सोपनिक विभाजन पर आधारित : प्रत्येक जाति दूसरी जाति की तुलना में असमान होती है। कोई भी दो जातियाँ समान नही होती।
- सामाजिक अंतःक्रिया पर प्रतिबंध लगाती है, विशेषकर साथ बैठकर भोजन करने पर।
- भिन्न–भिन्न अधिकार तथा कर्तव्य निर्धारित होते है।
- जन्म पर आधारित तथा वंशानुगत होती है। श्रम विभाजन में कठोरता दिखाती है तथा विशिष्ट व्यवसाय कुछ विशिष्ट जातियों को ही दिये जाते हैं।
- विवाह पर कठोर प्रतिबंध लगाती है। अंतः विवाह (जाति में ही विवाह) के नियम पर बल दिया जाता है।

'संरक्षणवादियों' व 'राष्ट्रवादियों' के बीच जनजातीय संस्कृति पर विवाद :

संरक्षणवादी :–

- ब्रिटिश मानवविज्ञानी भारतीय जनजातियों के अध्ययन में रूचि रखते थे। और इन्हें 'आदिम लोग' मानते थे जिनकी अपनी विशिष्ट संस्कृति थी जो हिन्दू मुख्यधारा से काफी अलग थी।
- उनका यह मानना था कि जनजातियों के मुख्यधारा की हिन्दू संस्कृति में समायोजन से वे शोषित होगें। उन पर लगातार दबाब रहेगा कि वे हिन्दू संस्कृति की मुख्य धारा में स्वयं को मिला लें। इसके परिणामस्वरूप उनकी संस्कृति व जीवन पद्धति में परिवर्तन आएगा और वे अपनी विशिष्टता खो देंगे।
- राज्य को यह कर्तव्य है कि वह इनकी संस्कृति को बचाए संरक्षित रखे।

राष्ट्रवादी :–

- भारत की एकता और भारतीय संस्कृति को आधुनिक बनाने में विश्वास रखते थे।
- उनका यह मानना था कि जनजातीय संस्कृति के संरक्षण के प्रयास दिशाहीन थे और आदिम संस्कृति को बचाने का कार्य वास्तव में गुमराह करने की कोशिश थी।
- धूर्ये तथा अन्य राष्ट्रवादियों का मानना था कि जनजातियों को पिछडे 'हिन्दू समूह' माना जाए न कि एक भिन्न सांस्कृतिक समूह के रूप में।

2. परंपरा एंव परिवर्तन पर डी. पी. मुखर्जी के विचार –

परंपरा :

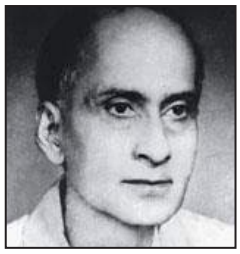

- डी. पी. मुखर्जी का मानना था कि भारत की सामाजिक व्यवस्था ही उसका निर्णायक लक्षण है और इसलिए यह आवश्यक है कि सामाजिक परंपरा का अध्ययन हो।
- मुखर्जी का अध्ययन केवल भूतकाल तक ही सीमित नहीं था बल्कि वह परिवर्तन की संवेदनशील से भी जुड़ा हुआ था।
- जीवंत परंपरा : परंपरा जिसने अपने आपको भूतकाल से जोड़ने के साथ ही साथ वर्तमान के अनुरूप भी ढाला था और इस प्रकार समय के साथ अपने आपको विकसित किया।
- मुखर्जी ने तर्क दिया कि भारतीय संस्कृति व्यक्तिवादी नही है, इसकी दिशा समूह, संप्रदाय तथा जाति के क्रियाकलापों द्वारा निर्धारित होती है।
- ' परंपरा ' शब्द का मूल अर्थ संचरित या प्रेषित करना है। परंपरा की मजबूत जड़ें भूतकाल में होती हैं और उन्हें कहानियों तथा मिथकों द्वारा कहकर और सुनकर जीवित रखा जाता है।

परिवर्तन :

- परिवर्तन के तीन सिद्धांत – श्रुति, स्मृति तथा अनुभव (व्यक्तिगत अनुभव क्रांतिकारी सिद्धांत हैं)।
- भारतीय समाज में परिवर्तन का सर्वप्रथम सिद्धांत सामान्यीकृत अनुभव अथवा सामूहिक अनुभव था।
- डी. पी. मुखर्जी के अनुसार, ''भारतीय संदर्भ में बुद्धि–विचार, परिवर्तन के लिए प्रभावशाली शक्ति नहीं है बल्कि अनुभव और प्रेम परिवर्तन के उत्कृष्ट कारक है।''

- संघर्ष तथा विद्रोह सामूहिक अनुभवों के आधार पर कार्य करते हैं।
- परंपरा का लचीलापन इसका ध्यान रखता है कि संघर्ष का दबाव परंपराओं को बिना तोड़े उनमें परिवर्तन लाए।

3. राज्य पर ए. आर. देसाई के विचार –

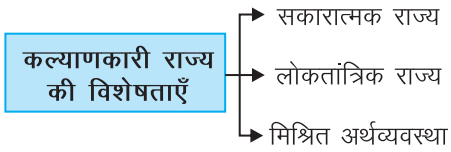

कल्याणकारी राज्य की विशेषताएँ :

- कल्याणकारी राज्य एक सकारात्मक राज्य होता है।
- कल्याणकारी राज्य केवल न्यूनतम कार्य ही नहीं करता जो कानून तथा व्यवस्था को बनाए रखने के लिए आवश्यक होते है।
- यह हस्तक्षेपीय राज्य होता है और समाज की बेहतरी के लिए सामाजिक नीतियों को लागू करने के लिए अपनी शक्तियों का प्रयोग करता है।
- यह एक लोकतांत्रिक राज्य होता है।
- लोकतंत्र की एक अनिवार्य दशा होती है।
- औपचारिक लोकतांत्रिक संस्थाएँ जैसे बहुपार्टी चुनाव इसकी विशेषता समझी जाती है।
- इसकी अर्थव्यवस्था मिश्रित होती है।
- मिश्रित अर्थव्यवस्था ऐसी अर्थव्यवस्था है जहाँ निजी पूँजीवादी कंपनियाँ तथा राज्य दोनों साथ–साथ काम करती हैं।
- कल्याणकारी राज्य न तो पूँजीवादी बाजार को खत्म करता है और न ही यह जनता को निवेश करने से रोकता है।

कल्याणकारी राज्य के कार्य परीक्षण के आधार :

- यह गरीबी, सामाजिक भेदभाव से मुक्ति तथा अपने सभी नागरिकों की सुरक्षा का ध्यान रखता है।
- यह आय सम्बन्धी असमानताओं को दूर करने के लिए कुछ महत्वपूर्ण कदम उठाता है।
- अर्थव्यवस्था को इस प्रकार से परिवर्तित करता है जहाँ पूँजीवादियों की अधिक से अधिक लाभ कमाने की प्रवृत्ति पर रोक लगाता है।
- स्थायी विकास के लिए आर्थिक मंदी तथा तेजी से मुक्त व्यवस्था का ध्यान रखा जाता है।
- सबके लिए रोजगार उपलब्ध कराता है।

कल्याणकारी राज्य के आधार :

- अधिकांश आधुनिक पूँजीवादी राज्य अपने नागरिकों को निम्नतम आर्थिक तथा सामाजिक सुरक्षा देने में असफल रहे हैं।
- आर्थिक असमानताओं को कम करने में सफल नहीं हो पायें हैं।
- बाजार के उतार – चढ़ाव से मुक्त स्थायी विकास करने में असफल रहे हैं।
- अतिरिक्त धन की उपस्थिति तथ अत्यधिक बेरोजगारी इसकी कुछ अन्य असफलताएँ हैं।

4. एम. एन. श्रीनिवास के गाँव संबंधी विचार –

एम. एन. श्रीनिवास के लेख :

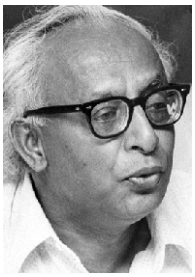

- गाँव पर श्रीनिवास द्वारा लिखे गए लेख मुख्यतः दो प्रकार के है।

  सर्वप्रथम, गाँवों में किए गए क्षेत्रीय कार्यो का नृजातीय ब्यौरा।

द्वितीय, भारतीय गाँव का सामाजिक विश्लेषण और उस पर ऐतिहासिक तथा अवधारणात्मक परिचर्चाएँ ।

5. **गाँव पर लुई ड्यूमों का दृष्टिकोण –**

- उनका मानना थ कि गाँव को एक श्रेणी के रूप में महत्व देना गुमराह करने वाला हो सकता है।
- लुई का मानना था कि जाति जैसी संस्थाएँ गाँव की तुलना में अधिक महत्वपूर्ण होती है।
- उनका मानना था कि लोग एक/अपने गाँव को छोड़कर दूसरे गाँव को जा सकते हैं, लेकिन उनकी सामाजिक संस्थाएँ सदैव उनके साथ रहती हैं।
- उन्होने भारतीय गाँवो का चित्रण स्थिर, आत्मनिर्भर व छोटे गणतंत्रों के रूप में किया।

ड्यूमो के दृष्टिकोण की श्री निवास द्वारा आलोचना

- श्री निवास का मानना था कि गाँव एक आवश्यक सामाजिक पहचान है और ऐतिहासिक साक्ष्य यह दर्शाते है कि गाँवों ने अपनी एक एकीकृत पहचान बनाई है।
- उन्होने लुई ड्यूमों के इस विचार 'कि गाँव स्थिर, आत्मनिर्भर व छोटे गणराज्य है', की आलोचना की। उन्होने दिखाया कि वास्तव में गाँवों में काफी महत्वपूर्ण परिवर्तन आए है।
- गाँव कभी आत्मनिर्भर नही थे और विभिन्न प्रकार के आर्थिक, सामाजिक तथा राजनीतिक संबंधों से क्षेत्रीय स्तर पर जुडे हुए थे।

गाँव का महत्व

- गाँव ग्रामीण शोधकार्यों के स्थल के रूप में भारतीय समाजशास्त्र को लाभान्वित करते हैं।

- इसने नृजातिय शोधकार्य की पद्धति के महत्व से परिचित कराने का मौका दिया।
- सामाजिक परिवर्तन के बारे में आँखों देखी जानकारी दी।
- भारत के आंतरिक हिस्सों में क्या हो रहा था, उसकी पूर्ण जानकारी दी।
- अतः यह कहा जा सकता है कि गाँव के अध्ययन से ही संपूर्ण भारत का विकास हुआ तथा समाजशास्त्रियों को कार्य क्षेत्र मिला।

शब्दकोश

- **प्रशासक–नृशास्त्री** : यह पद उन ब्रिटिश प्रशासकों के लिए प्रयोग में लाया जाता था जो 19वी तथा प्रारंभिक ब्रिटिश भारतीय सरकार के भाग थे तथा जिन्होने नृजातीय अनुसंधानों को प्रारंभ करने में रूचि ली विशेषकर सर्वे व जनगणना करने में। इनमें प्रमुख नाम विलियम क्रूक, हरबर्ट रिजले व जे.एच. हट्टन है।
- **मानवमिति** : नृशास्त्र का एक विभाग जो मनुष्य की प्रजाति का अध्ययन उसके शरीर के माप विशेषकर उसकी खोपडी के भार, सिर को चौड़ाई व नाक की लम्बाई के आधार पर करता है।
- **समायोजन** : वह प्रक्रिया जिसमें एक बडी या प्रभावी संस्कृति दूसरी संस्कृति को अपने अंदर समा लेती है तथा पहली संस्कृति में मिल जाती है।
- **अंतर्विवाह** : सामाजिक संस्था जहाँ वैवाहिक रिश्ते केवल अपनी ही बिरादरी में किए जाते हैं, इस सीमांकित वर्ग के बाहर विवाह निषेध होते हैं। उदाहरण के लिए जाति विवाह – जहाँ विवाह अपनी ही जाति के व्यक्ति से होता है।
- **बर्हिविवाह** : सामाजिक संस्था जहाँ कुछ वर्गो में वैवाहिक संबंध निषिद्व होते है। विवाह इन निषिद्व वर्गो के बाहर होना चाहिए। उदाहरण के लिए एक ही गाँव अथवा क्षेत्र में विवाह निषेध (गाँव/क्षेत्र बर्हिविवाह) है।

- **मुक्त व्यापार (लेसेज फेयर)** : अर्थव्यवस्था अथवा आर्थिक संबंधों में राज्य कम से कम हस्तक्षेप करता है।

1 अंक वाले प्रश्न

सही विकल्प चुनेः

1. G. S. धूर्ये ने भारत की जनजातियों को विशिष्ट सांस्कृतिक समूहों के बजाय ..... के रूप चित्रित किया।

   (क) पिछड़ा वर्ग

   (ख) पिछड़ी जाति

   (ग) पिछड़े हिंदू

   (घ) पिछड़ी जनजाति

2. .....का मानना था कि जनजातियों के आत्मसात करने से आदिवासियों का गंभीर शोषण और सांस्कृतिक विलुप्ति होगी

   (क) राष्ट्रवादियों

   (ख) संरक्षणवादियों

   (ग) एकतावादियों

   (घ) विकासवादियों

3. जाति अर्न्तविवाह विवाह है केवल जाति के ..... ।

   (क) बाहर

   (ख) भीतर

   (ग) पार

   (घ) जाति के बाहर

4. डी. पी. मुखर्जी का मानना था कि भारतीय परंपराओं में मान्यता प्राप्त परिवर्तन के तीन सिद्धांत थे;.....

   (क) श्रुति, स्मृति और शुभ।

(ख) श्रुति, कृति और शुभ।

(ग) श्रुति, स्मृति और अनुभव।

(घ) उपरोक्त में से कोई नहीं।

5. एक ऐसी अर्थव्यवस्था है जहां निजी पूँजीवादी उद्यम और राज्य या सार्वजनिक स्वामित्व वाले उद्यम दोनों मौजूद हैं।

(क) निजी अर्थव्यवस्था

(ख) सार्वजनिक अर्थव्यवस्था

(ग) मिश्रित अर्थव्यवस्था

(घ) विकेंद्रीकृत अर्थव्यवस्था

खाली स्थान भरें:

1. एक कल्याणकारी राज्य..... बाजार को खत्म करने की मांग नहीं करता है।
2. किसने ..... 'Caste and Race in India' पुस्तक लिखी है।
3. सूफियों ने पवित्र ग्रंथो के बजाय..... और..... पर जोर दिया है, जो महत्वपूर्ण बदलाव लाने के बारे में हैं।
4. ऐथिया शब्द, मूल रूप से किधर से आया हैं .....
5. एल. के. अनंत कृष्णा अय्यर को कोचीन राज्य द्वारा..... और .... के खिताब से सम्मानित किया।

वाक्य सही करें:

1. भारत में 'जाति और नस्ल' शरत चंद्र रॉय द्वारा लिखी गई थी।
2. एल. के. अनंत कृष्ण अय्यर भारत में सामाजिक नृविज्ञान के शुरूआती और सबसे प्रसिद्ध अग्रदूत थे।
3. जाति व्यवसाय चुनने के विकल्प को प्रतिबंधित करती है।
4. सामाजिक मानवविज्ञानी लुई ड्यूमों के अनुसार जाति जैसी सामाजिक संस्थाएं एक गाँव से अधिक महत्वपूर्ण है।

5. कल्याणकारी राज्य एक हस्तक्षेपकर्ता राज्य है और समाज की भलाई के लिए सामाजिक नीतियों को डिजाइन और कार्यान्वित करने के लिए अपनी शक्तियों का सक्रिय रूप से उपयोग करता है।

वाक्य सही है या गलत?

1. धूर्ये जनजातियों को एक भिन्न सांस्कृतिक समूह के रूप में पहचानने के समर्थक थे। (सही / गलत)
2. रिजले का तर्क था कि जाति का उद्‌भव प्रजाति से हुआ होगा। (सही / गलत)
3. डी.पी. मुखर्जी यह मानते थे कि भारतीय संस्कृति तथा समाज पाश्चात्य अर्थ में व्यक्तिवादी नहीं हैं। (सही / गलत)
4. एक कल्याणकारी राज्य सकारात्मक व लोकतांत्रिक होता है। (सही / गलत)
5. श्री निवास ने अपने शोध में दर्शाया कि भारतीय गाँव 'स्थिर', 'आत्मनिर्भर' व 'छोटे गणराज्य' हैं। (सही / गलत)

2 अंक वाले प्रश्न

1. भारत के किन्हीं दो सामाजिक नृविज्ञानियों के नाम लिखें।
2. भारत में धूर्ये को संस्थापकीय समाजशास्त्र का संस्थापक क्यों समझा जाता है।
3. जाति अंतर्विवाह से आप क्या समझते हैं ?
4. 'जीवंत परंपरा' से आप क्या समझते हैं ?
5. डी. पी. मुखर्जी का परिवर्तन सिद्धान्त क्या है ?
6. कल्याणकारी राज्य का क्या तात्पर्य है ?
7. भारतीय गाँव पर लुई डयूमो के क्या दृष्टिकोण थे ?
8. 'परंपरा' से आप क्या समझते हैं ?

4 अंक वाले प्रश्न

1. भारतीय आदिवासियों के प्रति धूर्ये के विचार लिखें।
2. भारत में जाति तथा प्रजाति के मध्य सम्बन्ध पर हर्बर्ट रिजले एंव धूर्ये के मतों की व्याख्या करें।
3. डी. पी. मुखर्जी ने भारतीय समाजशास्त्रीय परम्पराओं पर ध्यान देने पर क्यों बल दिया ?
4. डी. पी. मुखर्जी के अनुसार परिवर्तन के सिद्धांत की व्याख्या कीजिए।
5. ए. आर देसाई के अनुसार एक कल्याणकारी राज्य की क्या विशेषताएं है?
6. क्या कल्याणकारी राज्य की सोच एक मिथ्या या सच्चाई है ? अपने उत्तर की पुष्टि उदाहरण सहित कीजिए।
7. भारतीय समाजशास्त्र के इतिहास में ग्रामीण अध्ययनों का महत्व स्पष्ट कीजिए।

6 अंक वाले प्रश्न

1. धूर्ये के अनुसार जाति के लक्षणों का उल्लेख कीजिए।
2. परंपरा तथा आधुनिकता के विषय में डी. पी. मुखर्जी के विचारों का उल्लेख कीजिए।
3. कल्याणकारी राज्य क्या है? ए. आर. देसाई का इस विषय में समीक्षात्मक दृष्टिकोण स्पष्ट कीजिए।
4. भारतीय समाजशास्त्र में ग्रामीण अध्ययन को आगे बढ़ाने में एम. एन. श्रीनिवास की भूमिका का उल्लेख कीजिए।
5. ग्राम को समाजशास्त्रीय अनुसंधान का विषय बनाने के संदर्भ में तर्क–वितर्क दीजिए।

निम्नलिखित गद्यांश को पढें तथा प्रश्नों के उत्तर दें।

सन 1930 और 1940 के दशकों मे इस विषय पर काफी वाद–विवाद हुआ कि भारत में जनजातीय समाज का क्या स्थान हो और राज्य उनसे किस प्रकार का व्यवहार करे। कई ब्रिटिश प्रशासक मानव विज्ञानी भारतीय जनजातियों में रूचि रखते थे और उनका मानना था कि ये आदिम लोग थे जिनकी अपनी विशिष्ट संस्कृति थी जो हिन्दू मुख्यधारा से काफी अलग थी।

प्र॰ 1 ब्रिटिश मानवशास्त्री व प्रशासक भारतीय जनजातियों की संस्कृति के प्रति क्या सोच रखते थे (1)

प्र॰ 2 भारतीय जनजातियों के समाज में स्थान को लेकर किन दो दृष्टिकोणों में वाद–विवाद था? (1)

निम्नलिखित गद्यांश को पढें तथा प्रश्नों के उत्तर दें।

द्वितीय प्रकार के लेखन में गाँव की एक अवधारणा के रूप में उपयोगिता के प्रश्न पर श्रीनिवास का विवाद हुआ। ग्रामीण अध्ययन के खिलाफ कुछ सामाजिक मानवशास्त्रियों जैसे लुई डयूमो का मानना था कि जाति जैसी सामाजिक संस्थाएँ गाँव की तुलना में अधिक महत्वपूर्ण थी क्योंकि गाँव केवल कुछ लोगों का समूह था जो एक विशेष स्थान पर रहते थे।

प्र॰ 1 लुई ड्यूमों का गांव के अध्ययन पर क्या दृष्टिकोण था? (1)

प्र॰ 2 श्री निवास के अनुसार गाँव का अध्ययन क्यों महत्वपूर्ण है? (1)

उत्तरमाला

अध्याय–1 समाज में सामाजिक संरचना, स्तरीकरण और सामाजिक प्रक्रियाएँ

सही विकल्प चुनें :–

1. (क) संरचित
2. (ख) दुर्खीम
3. (ख) स्तरीकृत
4. (ग) विशेषाधिकार समूह
5. (घ) उपर्युक्त सभी

खाली स्थान भरें :–

1. सामाजिक स्तर
2. प्रकट संघर्ष
3. मानवीय क्रियाएं, रिश्ते / संबंध
4. सामाजिक संस्था
5. सामाजिक स्तरीकरण

वाक्य को सही लिखें :–

1. ऐसी एकता जो पारंपरिक संस्कृति में पाई जाती है, जहाँ श्रम का निम्न विभाजन होता है, अधिक सहयोग और कम जनसंख्या होती है, उसे यांत्रिक एकता कहते हैं।
2. स्वार्थ या स्वहित के बिना दूसरों को लाभ पहुँचाने के लिए कार्य का सिद्धांत परार्थवाद (अल्ट्रइजम) है।
3. सरकार द्वारा अर्थव्यवस्था में अहस्तक्षेप के सामान्य सिद्धांत पर आधारित एक राजनीतिक एवं आर्थिक दृष्टिकोण लेस–ए–फेयर उदारवाद है।

4. यह कथन सही है।

5. यह कथन सही है।

वाक्य सही है या गलत :–

1. सही
2. सही
3. गलत
4. गलत
5. सही

अध्याय–2 ग्रामीण तथा नगरीय समाज में सामाजिक परिवर्तन एवं सामाजिक व्यवस्था

सही विकल्प चुनें :–

1. (क) एम एन श्रीनिवास
2. (ख) डार्विन
3. (क) यहूदी
4. (ग) पारंपरिक
5. (ख) हथकरघा

खाली स्थान भरें :–

1. सुनामी
2. अनुकूली
3. क्रान्तिकारी परिवर्तन
4. प्रति / दोहरी
5. सामाजिक व्यवस्था

वाक्य को सही लिखें :–

1. <u>उद्विकास</u> एक प्रकार का परिवर्तन है जो लम्बे समय तक धीरे–धीरे होता है।

2. चार्ल्स डार्विन एक प्राकृतिक वैज्ञानिक थे, जिन्होनें 'योग्यतम के अस्तित्व' के सिद्धान्त का प्रस्ताव रखा था।
3. जब परिवर्तन का स्रोत राष्ट्र से बाहर होता है जैसे पश्चिमीकरण, इसे बहिर्जात परिवर्तन कहा जाता है।
4. नौकरशाही तर्कसंगत वैधानिक सत्ता के रूप में भी जानी जाती है।
5. यह कथन सही है।

वाक्य सही है या गलत :–

1. सही
2. गलत
3. सही
4. सही
5. गलत

अध्याय–3 पर्यावरण और समाज

सही विकल्प चुनें :–

1. (क) मोनोकल्चर
2. (ग) चीन
3. (ख) दो तरफा
4. (क) उत्तराखंड
5. (ख) परमाणु परीक्षण से

खाली स्थान भरें :–

1. सामाजिक असमानताओं में
2. जल प्रवाही स्तर
3. आर्द्रता विज्ञान

4. गर्मघर
5. बहिःप्रवाह धारा

वाक्य सही करें :–

1. यह कथन सही है।
2. हम उन तकनीकों और उत्पादों का उपयोग करके जिन्हें हम पूरी तरह से समझ नहीं पाते हैं, जोखिम समाज में रहते हैं।
3. पर्यावरण के साथ मानवीय संबंध जटिल हो गए हैं।
4. मेडकाउ रोग यूरोप में शुरु हुआ।
5. यह कथन सही है।

वाक्य सही है या गलत :–

1. सही
2. गलत
3. सही
4. सही
5. सही

अध्याय–4 पाश्चात्य समाजशास्त्री

सही विकल्प चुनें :–

1. (क) वैज्ञानिक क्रान्ति, फ्रांसिसी क्रान्ति, औद्योगिक क्रान्ति
2. (क) ब्रिटेन में
3. (ग) दुर्खाइम
4. (ग) वेबर
5. (घ) स्वतंत्रता, समानता एवं बंधुत्व

खाली स्थान भरें :–

1. नौकरशाही
2. फ्रांसिसी
3. मार्क्स, एंगेल्स
4. सामूहिक अस्तित्व
5. करिश्माई

वाक्य सही करें :–

1. इमाईल दुर्खाइम द्वारा लिखी गई है– 'द ऐलीमेंट्री फॉर्म्स ऑफ रिलिजियस लाईफ'।
2. आपके और आपके सहपाठियों द्वारा गठित समूह मार्क्सवादी अर्थों में एक वर्ग नहीं है, क्योंकि वर्गहित व वर्गचेतना का विकास नहीं हुआ है।
3. ऐतिहासिक भौतिकवाद की अवधारणा कार्ल मार्क्स ने आगे रखी।
4. वाक्य सही है।
5. ऐसा समाज जिसमें सामाजिक संबंध औपचारिक अवैयक्तिक व स्वार्थपूर्ण उद्देश्यों से बनाए जाते हैं, वहाँ यांत्रिक एकता पाई जाती है।

वाक्य सही है या गलत :–

1. सही
2. गलत
3. सही
4. सही
5. गलत

अध्याय–5 भारतीय समाजशास्त्री

सही विकल्प चुनें :–

1. (ग) पिछड़े हिंदू
2. (ख) संरक्षणवादियों
3. (ख) भीतर
4. (ग) श्रुति, स्मृति और अनुभव।
5. (ग) मिश्रित अर्थव्यवस्था

खाली स्थान भरें :–

1. पूँजीवादी
2. जी. एस. धूर्ये
3. प्रेम, अनुभव
4. इतिहास
5. राय बहादुर, दीवान बहादुर

वाक्य सही करें :–

1. भारत में जाति और नस्ल जी.एस. धूर्ये द्वारा लिखी गई थी।
2. शरत चंद्र रॉय भारत में सामाजिक नृविज्ञान के शुरुआती और सबसे प्रसिद्ध अग्रदूत थे।
3. वाक्य सही है।
4. वाक्य सही है।
5. वाक्य सही है।

वाक्य सही है या गलत :–

1. गलत
2. सही
3. सही
4. सही
5. गलत

Annexure - A

समाजशास्त्र - XI

गद्यांश आधारित प्रश्न

पुस्तक 1 – समाजशास्त्र एक परिचय

गद्यांश पढ़ें और अनुसरण करने वाले प्रश्नों का उत्तर दें :–

क. "पुनर्जागरण काल, 17वीं और 18वीं शताब्दी के उत्तर्राध में एक यूरोपीय बौद्धिक आंदोलन ने कारण और व्यक्तित्व पर बल दिया। वैज्ञानिक ज्ञान और बढती दृढ़ता की भी बड़ी प्रगति थीं कि प्राकृतिक विज्ञान के तरीकों को मानव मामलों के अध्ययन में बढ़ाया जाना चाहिए और बढ़ाया जा सकता है। उदाहरण के लिए गरीबों, जिसे अब तक 'प्राकृतिक घटना' के रूप में देखा जाता है, को मानव अज्ञानता या शोषण के कारण सामाजिक समस्या क रूप में देखा जाना शुरू हुआ। इसलिए गरीबी का अध्ययन किया जा सकता है।"

1. दो तरीकों का उल्लेख करें जिससे गरीबी का निवारण किया जा सके? 2
2. 'पुनर्जागरण' को समझाओ। 4

ख. "सामाजिक संरचना यहाँ व्यक्तियों या समूहों के बीच नियमित और दोहराव की बातचीत के पैटर्न को संदर्भित करती है। इस प्रकार एक सामाजिक समूह निरंतर बातचीत करने वाले व्यक्तियों के संग्रह को संदर्भित करता है जो किसी दिए गए समाज के भीतर आम रुचि, संस्कृति, मूल्यों और मानदंड़ों को साझा करते है।"

1. सामाजिक संरचना क्या है? 2
2. सामाजिक समूह की चार विशेषताओं का उल्लेख करें। 4

ग. "यह एक प्रकार का प्राथमिक समूह है, आमतौर पर उन व्यक्तियों के

बीच गठित होता है जो समान आयु के है या जो एक आम पेशेवर समूह में है। सहकर्मी दबाब किसी के साथियों द्वारा किए जाने वाले सामाजिक दबाब को संदर्भित करता है, जिसे किसी को करना चाहिए या नहीं।"

1. गद्यांश में 'यह' क्यों उपयोग हुआ है। इसे परिभाषित करें। 2
2. सहकर्मी दबाब क्या है? क्या यह उचित है। कारण बताइये। 4

घ. "लोगों के किसी भी समूह के लिए हमेशा ऐसे अन्य समूह होते हैं जिन्हें वे देखना चाहते हैं और ऐसा होने की इच्छा रखते है। जिन समूहों की जीवनशैली अनुकरण की जाती है उन्हें संदर्भ के रूप में जाना जाता है। हम अपने संदर्भ समूहों से संबंधित नहीं है, लेकिन हम उन समूह के साथ खुद को पहचानते हैं। संदर्भ समूह संस्कृति, जीवनशैली, आंकाक्षा और लक्ष्य उपलब्धियों के बारे में जानकारी के महत्वपूर्ण स्रोत है।"

1. संदर्भ समूह को परिभाषित करें। 2
2. संदर्भ समूह कैसे महत्वपूर्ण है? 4

ड. "भूमिका संघर्ष एक या एक से अधिक स्थिति के अनुरूप भूमिकाओं के बीच असंगतता है। ऐसा तब होता है जब विपरीत अपेक्षाए दो या दो से अधिक भूमिकाओं से उत्पन्न होती है।"

1. भूमिका संघर्ष क्या है? 2
2. 'ऐसा तब होता है जब विपरीत अपेक्षाएं उत्पन्न होती है।' उदाहरण के साथ इस कथन को सिद्ध करे। 4

ढ. "प्रजाति केंद्रिकता विश्वबंधुत्त्व के विपरीत है, जो कि उनके अंतर के लिए अन्य संस्कृतियों को महत्व देता है। एक विश्वव्यापी दृष्टिकोण किसी के अनुसार अन्य लोगों के मूल्यों और मान्यताओं का मूल्यांकन नहीं करना चाहता है। यह अपने गुणों के भीतर विभिन्न सांस्कृतिक आदान–प्रदान को बढ़ावा देता है और अपनी संस्कृति को समृद्ध करने के लिए उधार देता है।"

1. प्रजाति केंद्रिकता और विश्वबंधुत्त्व के बीच क्या अंतर है? 2
2. विश्वबंधुत्त्व की विशेषताओं का उल्लेख करें। 2

पुस्तक 2 – समाज का बोध

गद्यांश पढ़ें और अनुसरण करने वाले प्रश्नों का उत्तर दें :–

क. ''शोध के स्थल के रूप में गांव ने भारतीय समाजशास्त्र के लिए कई फायदे दिए। इसने मानवशास्त्र अनुसंधान विधियों के महत्व को दर्शाने का अवसर प्रदान किया। भारतीय ग्रामीण इलाकों में होने वाले तेजी से सामाजिक परिवर्तन के आंखों के गवाह खातों की पेशकश की क्योकि नए स्वतंत्रा राष्ट्र ने योजना विकास का कार्यक्रम शुरू किया था। उस समय गांव भारत के इन ज्वलंत विवरणों की बहुत सराहना की गई थी क्योंकि शहरी भारतीयों के साथ–साथ नीति निर्माता भारत के दिल में क्या चल रहा था, इस पर छाप बनाने में सक्षम थे। इस प्रकार ग्राम अध्ययनों ने एक स्वतन्त्र राष्ट्र के संदर्भ में समाजशास्त्र जैसे अनुसंधान क लिए एक नई भूमिका प्रदान की।''

1. भारतीय समाजशास्त्री का नाम दें जिन्होने गांव की अवधारणा पर अपना प्रमुख शोधकार्य किय था। 2
2. अनुसंधान के स्थल के रूप में गांव ने भारतीय समाजशास्त्र के कई फायदे पेश किए। किसी भी चार फायदों की सूची। 4

ख. ''पूँजीवादी समाज को कई स्तरों पर चलने वाले अलगांव की एक सतत प्रक्रिया द्वारा चिंहित किया गया था। सबसे पहले, आधुनिक पूंजीवादी समाज वह है जहां मनुष्य पहले से कहीं अधिक प्रकृति से अलग हो जाते है; दूसरा, मनुष्य एक–दूसरे से अलग हो जाते है क्योकि पूंजीवादी पहले सामाजिक रूपों को व्यक्त करता है, और रिश्ते अधिक से अधिक बाजार–मध्यस्थ होते हैं। तीसरा काम करने वाले लोगों का बड़ा हिस्सा अपने श्रम के फल से अलग हो गया है क्योकि श्रमिकों के पास उनके

द्वारा उत्पादित उत्पादों का स्वामित्व नहीं है। इसके अलावा, श्रमिकों के पास कार्य प्रक्रिया पर कोई नियंत्रण नहीं है– उन दिनों के विपरीत जब कुशल कारीगर ने अपने श्रम को नियंत्रित किया, आज कारखाने कार्यकर्ता के कार्य–दिवस की सामग्री प्रबंधन द्वारा तय की जाती है। आखिरकार, इन सभी अलगांवों के संयुक्त परिणाम के रूप में, मनुष्य भी खुद से अलग हो जाते है और अपने जीवन को एक प्रणाली में सार्थक में सार्थक बनाने के लिए संघर्ष करते है जहां वे दोनों अधिक स्वतन्त्र होते है लेकिन इससे पहले भी उनके जीवन के नियंत्रण में अधिक अलगांव और कम होते हैं।''

1. 'अलगाव' को परिभाषित करें। 2
2. श्रमिकों द्वारा सामना किए गए अलगाव के विभिन्न स्तरो को बताएं। 4

ग. ''ब्रिटेन में औद्योगिक क्रांति के परिस्थितिकीय प्रभाव पूरे विश्व में महसूस किए गए थे। दक्षिणी उत्तरी अमेरिका और कैरीबियाई के बड़े क्षेत्रों को लंकाशायर की मिलों मे कपास की मांग को पूरा करने के लिए वृक्षारोपण में परिवर्तन कर दिया गया था। वृक्षारोपण पर दास श्रम के रूप मे काम करने के लिए युवा पश्चिम अफ्रिका जबरन अमेरिका पहुंचे थे। पश्चिम अफ्रिका के जनसंख्या हास ने अपनी कृषि अर्थवयवसथा में गिरावट का कारण बना दिया, खेतों में गिरावट आई थी। ब्रिटेन में कोयला जलने वाली मिलों के धुएँ ने हवा को फहराया। ग्रामीण इलाकों से विस्थापित किसानों और मजदूर काम केलिए शहरों में आए और खराब परिस्थितियों में रहते थे। कपास उद्योग के पारिस्थितिक पदचिह्न शहरी औैर ग्रामीण वातावरण में पाए जा सकते हैं।''

1. परिस्थितिकी परिभाषित करें। 2
2. ब्रिटेन में औद्यौगिक क्रांति के परिस्थितिक प्रभावों का उल्लेख करें। 4

घ. ''नदियां भी क्षतिग्रस्त हो गई और बदली गई, जिससे पानी घाटी के पारिस्थितिक तंत्र को अपरिवर्तनीय क्षति हुई। परिदृश्य के प्राकृतिक जल निकासी को नष्ट करने शहरी क्षेत्रों में कई जल निकायों को भर दिया गया है। और बनाया गया है। भूजल की तरह, टॉपसिल भी हजारों वर्षों से बनाया गया है। गरीब कृषि प्रबंधन के कारण क्षरण, जल–लॉगिंग और लवणीकरण के कारण यह कृषि संसाधन भी नष्ट हो रहा है। घरों क निर्माण के लिए ईंटों का उत्पादन शीर्षस्थल के नुकसान का एक और कारण है।''

1. पर्यावरण प्रबंधन क्या है? 2
2. नदियों को भी क्षतिग्रस्त और बाँट दिया गया है, जिसे अपरिवर्तननीय क्षति
   हुई है– चार कारण बताकर बयान को सिद्ध करें ? 4

ङ. ''शहरों और शहरों में सामाजिक आदेशों के अधिकांश महत्वपूर्ण है। मुद्दे और समस्याएं अंतरिक्ष के प्रश्न से संबंधित है। उच्च जनसंख्या घनत्व पर एक महान प्रीमियम रखता है और रसद की जटिल समस्याएं पैदा करता है। यह शहर की स्थानिक व्यवहार्यता करने के लिए शहरी सामाजिक आदेश का प्राथमिक कार्य है। इसका मतलब है कि चीजों का संगठन और प्रबंधन जैसे आवास और आवासीय पैटर्न बड़ी संख्या में श्रमिकों को काम से और परिवहन के लिए बड़े पैमाने पर आगमन प्रणालीय आवासीय सार्वजनिक और औद्योगिक भूमिगत क्षेत्रों के सह–अस्तित्व की व्यवस्थाः और सभी सार्वजनिक स्वास्थ्य, स्वच्छता, पुलिस, सार्वजनिक सुरक्षा और शहरी शासन की निगरानी आवश्यकताओं की आवश्यकता है।''

1. सामाजिक व्यवस्था क्या है? 2
2. शहर में कई चुनौतियों का सामना करना पड़ता है। किसी भी चुनौती
   का वर्णन करें। 4

च. ''शास्त्रीय समाजशास्त्रीय विचारक जैसे एमिले और कार्ल मार्क्स ने आधुनिक समाजों में क्रमशः व्यक्तिगतता और प्रतिस्पर्धा के विकास पर ध्यान दिया है। दोनों विकास आधुनिक पूंजीवादी समाज के कार्यों के लिए आंतरिक है। तनाव अधिक दक्षता और अधिक लाभ अधिकतमता पर है। पूंजीवादी की अंतनिर्हित धारणाएँ है – 1. व्यापार का विस्तार, 2. श्रम विभाजन, (3) विशेषज्ञता और (4) इसलिए बढ़ती उत्पादकता।''

1. पूंजीवाद को परिभाषित करें। 2
2. पूंजीवाद की अंतर्निहित मान्यताओं की व्याख्या करें। 4

Annexure - B

समाजशास्त्र - XI

अभ्यास प्रश्न पत्र - 1

समय : 3 घंटे **M. M.: 80**

(1) सभी प्रश्न अनिवार्य हैं।
(2) प्रश्न 1 से 14 तक प्रत्येक प्रश्न के 2 अंक हैं।
(3) प्रश्न 15 से 21 तक प्रत्येक प्रश्न के 4 अंक हैं।
(4) प्रश्न 22 से 25 तक प्रत्येक प्रश्न के 6 अंक हैं।

---

1. List two difference between human and animals society.
   मानव तथा पशु समाज में दो अंतर बताइए।
2. What is material culture.
   भौतिक संस्कृति का क्या अर्थ है।
3. What is meant by Fraternal Polyandry.
   भ्रातृ बहुपति विवाह का अर्थ बताइए।
4. Give meaning of social structure.
   सामाजिक संरचना का क्या अर्थ है ।
5. What is cultural lag.
   सास्कृतिक विलम्बना अथवा संस्कृति का पिछड़न का क्या अर्थ है ?
6. What is society ?
   समाज का अर्थ बताइए।
7. Give meaning of social change ?
   सामाजिक परिवर्तन का अर्थ बताइए।
8. When and where did the teaching of sociology began in India ?
   भारत में सर्वप्रथम समाजशास्त्र का अध्यापन कब और कहाँ हुआ ?
9. What is meant by 'Role'?
   भूमिका से क्या अभिप्राय है ?
10. What is meant by water pollution ?
    जल प्रदूषण किसे कहते हैं ?

11. Describe in your own words what do you understand by term 'ecology'.
'पारिस्थितिकी' शब्द से क्या तात्पर्य है ? अपने शब्दों में वर्णन किजिए।

12. Which two classes are given by Karin Marx ?
कार्ल मार्क्स के अनुसार संसार में कौन – कौन से दो वर्ग होते हैं।

13. What do you mean by Ideal types ?
आदर्श प्रारूप से आप क्या समझते हैं ?

14. What is theory of alienation ?
अलगाव का सिद्धांत क्या है ?

15. What is the need to conserve the environment ?
पर्यावरण के संरक्षण की क्या आवश्यकता है ?

16. What are the characteristics of Bureaucracy ?
नौकरशाही की बुनियादी विशेषताएँ क्या हैं ?

17. What are the main functions of a family ?
परिवार के कार्यो का वर्णन किजिए ?

18. How does an individual become a criminal ?
व्यक्ति अपराधी किस तरह बनता है ?

19. What changes are coming in religion ?
धर्म मे कौन–कौन से परिवर्तन आ रहे हैं ?

20. Describe the two way process by which social environments emerge.
उस दोहरी प्रक्रिया का वर्णन कीजिए जिसके कारण सामाजिक पर्यावरण का उद्‌भव होता है।

21. What do you thinks is the most effective agent of socialisation for your generation? How do you think it was different before?
आपके अनुसार आपकी पीढ़ी के लिए समाजीकरण का सबसे प्रभावी अभिकरण क्या है ? यह पहले अलग कैसे था, आप इस बारे में क्या सोचते हैं ?

22. Discuss the different tasks that demand cooperation with references to agriculture or industrial operation.
कृषि तथा उद्योग के संदर्भ में सहयोग के विभिन्न कार्यो की आवश्यकता की चर्चा कीजिए।

23. What changes are coming in the forms of family? Explian.
परिवार के स्वरूप में परिवर्तन आने के क्या कारण हैं ? व्याख्या किजिए।

24. Explain the types of authority given by Max Weber.
मैक्स वेबर द्वारा दिए गए सत्ता के प्रकारों का वर्णन कीजिए।

25. Read the passage carefully and answer the questions that follow:

We boys used the streets for so many different things - as a place to stand around watching, to run around and play, try out the maneuverability of our bikes, Not so for girls. As we noticed all the time, for girls the street was simply a means to get straight home from school. And even for this limited use of the street, they always went in clusters, perhaps because behind their purposeful demeanor they carried the worst fears of being assaulted. (Kumar 1986).

(a) What does the passage convey about the society where the above observation has been made ?

(b) What normative dimension of culture does it express ?

(c) Is the socialization process gendered ? Justify with reference to the above passage.

निम्नलिखित गद्यांश को पढ़े तथा निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दो :

हम लड़के गलियों का प्रयोग अनेक वस्तुओं के लिए करते हैं– एक स्थान की तरह, जहाँ खड़े होकर आस–पास देखते हैं। दौड़ने तथा खेलने के लिए, अपनी मोटरसाईकिलों पर विभिन्न करतब करने के लिए। लड़कियों के लिए ऐसा नहीं है। जैसा कि हम हर समय देखते हैं, लड़कियों के लिए गलियाँ विद्यालयों से सीधे घर जाने के लिए है। तथा गली के इस सीमित प्रयोग के लिए भी वे सदा झुंड में जाती हैं, शायद इसके पीछे उनके मौजूद छेड़खानी का भय है (कुमार 1986)

(क) ऊपर दिए गए गद्यांश से सामाजिक दृष्टिकोण को समझाए।

(ख) संस्कृति के किस मानकीय पक्ष को दर्शाया गया है ?

(ग) क्या समाजीकरण लिंगवादी है ? अपने विचार प्रस्तुत करें।

समाजशास्त्र - XI

अभ्यास प्रश्न पत्र - 2

समय : 3 घंटे **M. M.: 80**

(1) सभी प्रश्न अनिवार्य हैं।
(2) प्रश्न 1 से 14 तक प्रत्येक प्रश्न के 2 अंक हैं।
(3) प्रश्न 15 से 21 तक प्रत्येक प्रश्न के 4 अंक हैं।
(4) प्रश्न 22 से 25 तक प्रत्येक प्रश्न के 6 अंक हैं।

---

1. What are the different social processes of the society ?
   समाज की विभिन्न सामाजिक प्रक्रियाएँ कौन–कौन सी हैं ?
2. Give the defination of culture.
   संस्कृति की परिभाषा दीजिए ?
3. What do you mean by female headed households ?
   महिला प्रधान घर से आप क्या समझते हैं ?
4. What are the different sources of elements in the process of production.
   उत्पादन के तरीकों के विभिन्न घटक कौन – कौन से हैं ?
5. What do you mean by socialisation ?
   समाजीकरण से आप क्या समझते हैं ?
6. What is complex society?
   जटिल समाज क्या है ?
7. Explain Evolution ?
   ''उद्विकास'' को समझाएँ।
8. When and where did the teaching of sociology begin in India ?
   भारत में सर्वप्रथम समाजशास्त्र का अध्यापन कब और कहाँ प्रारंभ हुआ ?
9. What do you mean by 'Role Conflict ?
   'भूमिका संघर्ष' आप क्या समझते हैं ?
10. What do you mean by "ecology" ?
    ''पारिस्थितिकी'' से आपका क्या अभिप्राय है ?

11. Give examples of natural and man made environment depletion.
प्राकृतिक तथा मानव निर्मित पर्यावरण विनाश के उदाहरण दीजिए।

12. Explain capitalism.
पूँजीवाद को समझाएँ।

13. According to Max Weber, What is "authority" ?
मैक्स वेबर के अनुसार ''सत्ता'' क्या है ?

14. What do you mean by welfare state ?
कल्याणकारी राज्य से आप क्या समझते हैं ?

15. "Environment problems are also social problems. "How ?
''पर्यावरण की समस्याएँ सामाजिक समस्याएँ भी हैं।'' कैसे ? स्पष्ट कीजिए।

16. According to Karl Marx, Why does conflict exist between different classes ?
मार्क्स के अनुसार विभिन्न वर्गो में संघर्ष क्यों होता है ?

17. Discuss the important functions of the family ?
परिवार के महत्वपूर्ण कार्यो की चर्चा कीजिए।

18. Give your views regarding the problems of urban areas.
नगरीय क्षेत्रों की समस्याओं पर अपने विचार लिखिए।

19. Explain 'stateless society' ?
'राज्यविहीन समाज' को स्पष्ट कीजिए ?

20. Discuss in detail the various problems of environment.
पर्यावरण की प्रमुख समस्याओं की विस्तार से चर्चा कीजिए।

21. What do you mean by global warming ? Discuss the effects of global warming.
ग्लोबल वार्मिंग से आप क्या समझते हैं ? इसके प्रभावों की चर्चा कीजिए ।

22. Explain in detail the different agents of socialization.
समाजीकरण के विभिन्न अभिकरणों को विस्तार से समझाइए।

23. Competition, co-operation and conflict are related to each other. Explain giving examples.

''प्रतियोगिता, सहयोग और संघर्ष का आपस में संबंध है।'' उदाहरण सहित चर्चा कीजिए।

24. According to the Durkheim explain "Division of labour."
दुर्खाइम के अनुसार 'समाज के श्रम विभाजन' को समझाए।

25. Read the following passage carefully and answer the question that follow:

Developing countries are today arenas for conflict between the old and the new. The old order is no longer able to meet the new forces, nor the new wants and aspirations of the people. The conflicts produces much unseemly argument, discord, confusion, and on occasion, even bloodshed.

But a moment's reflection should convience him that the old order was not conflict - free and that it prepetrated in human cruelities on vast sections of the population.

Source : Srinivas M.N., 1972 Social

1. What do you understand by 'new and old order ? Why is it a source of conflict in developing countries ?
2. Why is conflict essential for any society ?

समाजशास्त्र - XI

अभ्यास प्रश्न पत्र - 3

समय : 3 घंटे **M. M.: 80**

(1) सभी प्रश्न अनिवार्य हैं।
(2) प्रश्न 1 से 14 तक प्रत्येक प्रश्न के 2 अंक हैं।
(3) प्रश्न 15 से 21 तक प्रत्येक प्रश्न के 4 अंक हैं।
(4) प्रश्न 22 से 25 तक प्रत्येक प्रश्न के 6 अंक हैं।

---

1. What is the social stratification ?
   सामाजिक स्तरीकरण से क्या अभिप्राय है ?
2. What do you mean by 'Ethnicity' ?
   'नृजातीयता' से आप क्या समझते हैं ?
3. What do you mean by 'Endogamy' ?
   अंतर्विवाह से आप क्या समझते हैं ?
4. Define capitalism.
   पूँजीवाद को समझाएँ।
5. What is sub - culture ?
   उप–संस्कृति से क्या अभिप्राय है ?
6. Why is the study of sociology necessary?
   समाजशास्त्र का अध्ययन क्यों आवश्यक है ?
7. Write the reasons of social change.
   सामाजिक परिवर्तन के कारण लिखें।
8. When and where did the teaching of sociology begin in India ?
   भारत में सर्वप्रथम समाजशास्त्र का अध्यापन कब और कहाँ प्रारंभ हुआ ?
9. What do you mean by 'social status' ?
   सामाजिक प्रस्थिति से आप क्या समझते हैं ?
10. Explain 'Social Ecology' ?' .
    सामाजिक पारिस्थितिकी को समझाइएँ।

11. Write examples of man made environment destruction.
मानव–निर्मित पर्यावरण विनाश के उदाहरण दीजिए।

12. Which two classes are given by Karl Marx ?
कार्ल मार्क्स के अनुसार संसार में कौन से दो वर्ग होते हैं ?

13. Differentiate between ascribed and achieved status.
पर्यावरण पर प्रौद्योगिकीय प्रभावों का उल्लेख कीजिए।

14. What are the different forms of natural disasters related to pollution ?
प्रदूषण संबंधित प्राकृतिक विपदाओं के मुख्य रूप कौन–कौन से हैं ?

15. Distinguish between Mechanical and Organic Solidarity?
यांत्रिक एवं जैविक सद्भाव में अंतर स्पष्ट कीजिए ?

16. Discuss the changing forms of the family.
परिवार के बदलते स्वरूपों की चर्चा कीजिए।

17. Explain briefly the different agencies of socialisation ?
समाजीकरण के विभिन्न अभिकरणों का संक्षेप में उल्लेख करें ?

18. Write the characteristics found in all the religions.
सभी धर्मों मे पाई जाने वाली विशेषताएँ लिखिए।

19. Discuss the implications of 'Genetically Modified Farming'.
'जैविक रूपांतरित खेती' के परिणामों की चर्चा कीजिए।

20. Family is the effective agent of Socialisation. Discuss.
''परिवार समाजीकरण का प्रभावी अभिकरण है। ''चर्चा कीजिए।

21. Discuss with examples, "co-operation" with reference to modern society.
आधुनिक समाज के संदर्भ में ''सहयोग'' को उदाहरण सहित चर्चा कीजिए।

22. Write about the achievements of M.N. Srinivas.
एम. एन. श्रीनिवास का जीवन परिचय एवं मुख्य उपलब्धियाँ लिखिए।

23. Discuss in detail about Material Dimensions of culture.
संस्कृति के भौतिक पक्ष विस्तार से चर्चा कीजिए।

24. Read the passage given below and answer the question that follow:

When men migrate to urban areas, women have to plough and manage the agriculture fields. Many a time they become the sole providers of their families.

Such households are known as female headed households. Widowhood too might create such familial arrangement, Or it may happen when men get remarried and stop spending remittance to their wives, children and other dependents. In such a situation, women have to ensure the maintenance of the family. Among the Kolams, a tribal community in south - eastern Maharashtra and northern Andhra Pradesh, a female headed household is an accepted norm.

1. What is understood by 'feminisation of agriculture' ? 2
2. State any two causes of 'feminisation'. Name the states where this norm is practised. 2+2

समाजशास्त्र - XI

अभ्यास प्रश्न पत्र - 4

समय : 3 घंटे **M. M.: 80**

(1) सभी प्रश्न अनिवार्य हैं।
(2) प्रश्न 1 से 14 तक प्रत्येक प्रश्न के 2 अंक हैं।
(3) प्रश्न 15 से 21 तक प्रत्येक प्रश्न के 4 अंक हैं।
(4) प्रश्न 22 से 25 तक प्रत्येक प्रश्न के 6 अंक हैं।

---

1. श्रम विभाजन क्या है ?
2. परम्परागत सत्ता क्या है ?
3. प्राथमिक समूह की परिभाषा बताओ।
4. संस्कृति के प्रकार बताओ ।
5. गलोबल वार्मिंग क्या है ?
6. पारिस्थितिकी से आप क्या समझते है ?
7. वायु प्रदूषण किन कारणों से होता है ?
8. सामाजिक स्तरीकरण क्या है ?
9. अन्तः विवाह तथा बर्हिविवाह में अन्तर स्पष्ट करो।
10. कल्याणकारी राज्य का अर्थ सपष्ट करो।
11. सामाजिक नियन्त्रण से आप क्या समझते हैं।
12. सन्दर्भ समूह का अर्थ बताओ।
13. शिक्षा के दो उद्देश्य बताओ।
14. अलगाववाद क्या है ?
15. युवावर्ग में बढ़ती हिंसा और अपराध के कारण बताओ।
16. परिवार के कार्य बताओ।

या

पारिवारिक संरचना में होने वाले परिवर्तनो की व्याख्या करो।

17. समाज शास्त्र और इतिहास एक दूसरे के पूरक है कैसे ?

18. वर्ग संघर्ष के कारणों की व्याख्या करो।

19. नातेदारी क्या है यह कितने प्रकार की होती है।

20. यांत्रिक एकता और सावयवी एकता में अन्तर बताओ।

21. एम. एन. श्रीनिवास के अनुसार ग्रामीण समुदाय के अध्ययन के महत्व को विस्तार से समझाओ।

या

पर्यावरण संरक्षण क्यो आवश्यक है विस्तार से बताओ।

22. नौकरशाही संरक्षण क्यों आवश्यक है विस्तार से बताओं

23. नौकरशाही के कार्यो का उल्लेख करो।

24. धूर्ये द्वारा जाति की विशेषताओं का वर्णन करो।

25. निम्न गद्यांश पढ़कर नीचे लिखे प्रश्नों के उत्तर दो।

एक आधुनिक समाज सांस्कृतिक विभिन्नता का प्रशंसक होता है तथा बाहर से पड़ने वाले सांस्कृतिक प्रभावों के लिए अपने दरवाजे बंद नही करता परन्तु ऐसे सभी प्रभावो को सदैव इस प्रकार शामिल किया है कि ये देशीय संस्कृति के साथ मिल सके। विदेशी शब्दों को शामिल करने के बावजूद अंग्रेजी अलग भाषा नही बन सकी ही हिन्दी फिल्मों के संगीत ने अन्य जगहों से उधार लेने बावजूद अपना स्वरूप खोया विविध शैलियों रूपों श्रव्यों तथा कलाकृतियों को शामिल करने से विश्वव्यापी संस्कृति की पहचान प्राप्त होती है। आज विश्व में जहाँ संचार के आधुनिक साधनों से विश्वव्यापी पर्यवेक्षण प्रत्येक व्यक्ति को अपनी संस्कृति को विभिन्न प्रभावों द्वारा सशक्त की मुख्य विशेषता क्या है।

1. आधुनिक समाज की मुख्य विशेषता क्या है ?

2. विश्वव्यापी संस्कृति की पहचान क्या है ?

समाजशास्त्र - XI

अभ्यास प्रश्न पत्र - 5

समय : 3 घंटे **M. M.: 80**

(1) सभी प्रश्न अनिवार्य हैं।
(2) प्रश्न 1 से 14 तक प्रत्येक प्रश्न के 2 अंक हैं।
(3) प्रश्न 15 से 21 तक प्रत्येक प्रश्न के 4 अंक हैं।
(4) प्रश्न 22 से 25 तक प्रत्येक प्रश्न के 6 अंक हैं।

---

1. समाज गतिशील है कैसे ?
2. अर्न्तसमूह क्या है ? उदाहरण सहित स्पष्ट करें।
3. पूँजीवाद के लक्षण बताओ।
4. लिंग के आधार पर सामाजिक स्तरीकरण की व्याख्या करें।
5. 'ग्रीन हाउस का क्या अर्थ है ?
6. पारिवारिक व्यवस्था में हुए बदलावों पर अपने विचार लिखें।
7. प्रजातीय श्रेष्ठता क्या है ?
8. जजमानी प्रथा क्या है ?
9. अपने समाज में विवाह के कौन से नियमों का पालन किया जाता है ?
10. समाज शास्त्र इतिहास पर कैसे आधारित है ?
11. आगस्ट कॉम्ट को समाज शास्त्र का जनक क्यों कहा जाता है ?
12. अलगाववाद का सिद्धान्त क्या है ?
13. यूरोप में समाजशास्त्र का उद्‌गम और विकास का अध्ययन क्यों महत्वपूर्ण है ?
14. भौतिक संस्कृति तथा अभौतिक संस्कृति में अन्तर स्पष्ट करें।
15. गाँव कस्बे और शहर किस प्रकार से भिन्न हैं।
16. किन्ही दो धर्मों में समानता व अन्तर बताएँ जैसे हिन्दु और मुस्लिम सिख इत्यादि

17. प्रदत्त प्रस्थिति तथा अर्जित प्रस्थिति में क्या अन्तर स्पष्ट करें।

अथवा

पद और भूमिका एक ही सिक्के के दो पहलु हैं। स्पष्ट करें।

18. प्रतियोगिता व संघर्ष में अन्तर स्पष्ट करें।

19. सामाजिक परिवर्तन के प्रकार लिखें।

20. वायु प्रदूषण से होने वाली समस्याओं को रोकने के लिए दिल्ली सरकार द्वारा नए–नए कदम तथा प्रभाव/परिणामों पर चर्चा करें।

21. समाज में बढते हुए 'किशोर अपराध' के मुख्य कारणों पर चर्चा करें।

22. समाज क्या होता है। तथा उसकी विशेषताओं का वर्ण्न करें।

23. कार्ल मॉर्क्स के वर्ग संघर्ष के सिद्धान्त के बारे में लिखो।

अथवा

मैक्स वेबर ने नौकरशाही को लोकतंत्र की रीढ़ की हडडी क्यों कहा है ? स्पष्ट करें।

24. नगरीय क्षेत्रों की सामाजिक व्यवस्था के सामने कौन सी चुनौतियाँ है ?

25. नीचे दिए गए गद्यांश को ध्यान से पढ़े तथा प्रश्नों के उत्तर दें।

अंतरजातीय विवाह करने पर भाई ने बहन की हत्या की

पुलिस के अनूसार 19 वर्षीय एक लड़की... जब अस्पताल में सो रही थी तब उसके बड़े भाई ने उसका सिर कलम कर उसकी हत्या कर दी जिसे 'इज्ज़त के लिए हत्या (ऑनर किलिंग) कहा जाता है।

उन्होने कहा कि लड़की..... द्वारा जाति के बाहर विवाह करने के बाद 16 दिसंबर को उसके भाई.... ने उस पर चाकू से हमला किया था और उसका अस्पताल में इलाज चल रहा था उन्होने बताया कि वह और उसका प्रेमी 10 दिसंबर को घर से भाग गए थे और शादी करने के बाद

16 दिसंबर को अपने घर वापिस आ गए थे। उसके अभिभावको ने इस विवाह का विरोध किया था।

पंचायत ने भी युगल पर दबाव डालने की कोशिश की थी, पर उन्होने अलग रहने से मना कर दिया था।

1. सम्मान रक्षा हेतु से आप क्या समझते हैं ? तथा जाति से बाहर विवाह कोरोकने समबन्धी नियम बताएँ। 2
2. सामाजिक नियंत्रण की विभिन्न संस्थाओं का वर्णन करें। 4

समाजशास्त्र - XI

अभ्यास प्रश्न पत्र - 6 (हल सहित)

समय : 3 घंटे **M. M.: 80**

(1) सभी प्रश्न अनिवार्य हैं।
(2) प्रश्न 1 से 14 तक प्रत्येक प्रश्न के 2 अंक हैं।
(3) प्रश्न 15 से 21 तक प्रत्येक प्रश्न के 4 अंक हैं।
(4) प्रश्न 22 से 25 तक प्रत्येक प्रश्न के 6 अंक हैं।

प्र0 1. समाज की विभिन्न सामाजिक प्रक्रियाएँ क्या हैं ?

उत्तर– सामाजिक प्रक्रियाएँ – सहयोग, प्रतिस्पर्धा, संघर्ष।

प्र0 2. संस्कृति की परिभाषा दीजिए।

उत्तर– **सँस्कृति** – सँस्कृति या सभ्यता अपने व्यापक नृजातीय अर्थ में एक जटिल समग्र हैं जिसमें ज्ञान, आस्था, कला, नैतिकता, कानून, प्रथा तथा मनुष्य के समाज के सदस्य के रूप में होने के फलस्वरूप प्राप्त अन्य क्षमताएँ तथ आदतें शामिल हैं

प्र0 3. निकटाभिगमन निषेध का क्या अर्थ है ?

उत्तर– प्राथमिक नातेदारों के बीच यौन सम्बन्धों पर प्रतिबंध, नियमों का उल्लंघन करने पर सजा दी जाती है।

प्र0 4. श्रम विभाजन को समझाइये।

उत्तर– श्रम विभाजन – कार्य को विशिष्टीकरण जिसके माध्यम से विभिन्न रोजगार प्रणाली से जुड़े होते हैं।

प्र0 5. सँस्कृति के पिछड़ेपन से आप क्या समझते हैं ?

उत्तर– जब भौतिक या तकनीकी आयाम तेजी से बदलते हैं तो मूल्यों तथा मानको की दृष्टि से अभौतिक पक्ष पिछड़ सकते है। इससे सँस्कृति की पिछड़ेपन को स्थित उत्पन्न हो सकती है।

प्र0 6. समाज का अर्थ बताइए।

उत्तर– मैकाइवर और पेज के अनुसार, समाज, सामाजिक संबन्धों का एक जाल है (कोई अन्य परिभाषा)

प्र0 7. उद्‌विकास किसे कहते हैं ?

उत्तर– परिवर्तन जब धीरे–धीरे सरल से जटिलता की ओर होता है तो उसे उद्‌विकास कहते हैं।

प्र0 8. पूँजीवाद की परिभाषा दीजिए।

उत्तर– आर्थिक उद्यम की एक व्याख्या, जो कि बाजार विनिमय पर आधारित है। यह व्यवस्था उत्पादन के संसाधनों और सम्पत्तियों के निजी स्वामित्व पर आधरित है।

प्र0 9. उत्पादन के साधन से आप क्या समझते हैं ?

उत्तर– उत्पादन के साधन – वे साधन जिसके द्वारा समाज में भैतिक वस्तुओं का उत्पादन किया जाता है। जिनमें न केवल तकनीक बल्कि उत्पादकों के परस्पर सम्बन्ध भी शामिल हैं।

प्र0 10. पर्यावरण की प्रमुख समस्याएँ और जोखिम कौन – कौन से हैं ?

उत्तर– संसाधनों की क्षीणता (कमी) प्रदूषण, वैश्विक तापमान वृद्धि, प्राकृतिक तथा मानव निर्मित पर्यावरण विनाश।

प्र0 11. ग्लोबल वार्मिंग से आप क्या समझते हैं ?

उत्तर– ग्लोबल वार्मिंग – विश्व के औसत तापमान (ग्रीन हाउस गैसों) में होने वाले वृद्धि ग्लोबल वार्मिंग कहलाती है।

प्र0 12. समाजशास्त्र के उद्‌गम मे कौन –से तीन क्रांतिकारी परिवर्तनों के हाथ हैं ?

उत्तर– ज्ञानोदय या वैज्ञानिक क्रांति, फ्रांसिसी क्रांति तथा औद्योगिक क्रांति।

प्र0 13. भारत में सर्वप्रथम समाजशास्त्र का अध्ययन कब और कहाँ प्रारम्भ हुआ ?

उत्तर– 1919 ई. में मुम्बई विश्व विद्यालय में प्रारम्भ हुआ।

प्र0 14. ''यांत्रिक और ''सावयवी'' एकता में कोई दो अंतर लिखिए।

उत्तर–

यांत्रिक एकता	सावयवी एकता
1. श्रम विभाजन सरल होता है।	1. श्रम विभाजन अत्यन्त जटिल होता है।
2. एकरूपता पर आधारित है	2. एकरूपता पर आधारित नही है
3. कम जनसंख्या वाले समाजों में पाई जाती है।	3. अधिक जनसंख्या वाले समाजों में पाई जाती है।
4. सामाजिक सम्बन्ध व्यक्तिगत होते हैं।	4. सामाजिक सम्बन्ध अवैयक्तिक होते है।

प्र0 15. संसाधनो की क्षीणता से सम्बंधित पर्यावरण के प्रमुख मुद्दे कौन से हैं ?

उत्तर– 1. पानी तथा भूमि में क्षीणता बहुत तेजी से आ रही है।

2. नदियों के बहाव को जाने के कारण जल बेसिन को क्षति पहुँची है। शहरी केन्द्रों की बढ़ती माँग के कारण।

3. निर्माण कार्य होने के कारण प्राकृतिक निकासी के साधनों को नष्ट किया जा रहा है।

4. भवन निर्माण के लिए मृदा का ऊपरी सतह का नाश।

5. जैविक विविध – आवासों जैसे घास, जंगल समाप्ति के कगार पर खड़े हैं।

प्र0 16. नौकरशाही की बुनियादी विशेषताएँ क्या हैं ? समझाइये।

अथवा

डी. पी. मुकर्जी के अनुसार भारतीय समाजशास्त्री के क्या कर्तव्य है

उत्तर– 1. अधिकारियों के प्रकार्य (कार्य)

2. पदों का सोपनिक क्रम

3. लिखित दस्तावेजों को विश्वसनीयता।

4. कार्यालय का प्रबंधन।

5. कार्यालय आचरण।

अथवा

1. भारतीय समाजशास्त्री का प्रथम कर्त्तव्य है कि वह सामाजिक परम्पराओं के बारे में पढ़े तथा जाने।

2. एक भारतीय होना।

3. भाषा को सीखना।

4. संस्कृति की पहचान।

प्र0 17. नातेदारी क्या है ? समरक्त नातेदारी तथा वैवाहिक नातेदारी में अन्तर लिखिए।

उत्तर– नातेदारी – ''इस व्यवस्था में समाज द्वारा मान्यता प्राप्त वे समबन्ध आ जाते हैं जो कि अनुमति और वास्तविक वंशावली सम्बन्धों पर आधारित हैं।

समरक्त नातेदारी	वैवाहिक नातेदारी
1. रक्त के माध्यम से बने नातेदारों को समरक्त नातेदार कहते हैं। 2. जैसे – माता–पिता, भाई–बहन आदि।	1. विवाह के माध्यम से बने नातेदारों को वैवाहिक नातेदारी कहते हैं। 2. जैसे – सास, ससुर, देवर, जेठ आदि।

प्र0 18. जन परिवहन किस प्रकार नगरों में सामाजिक परिवर्तन ला सकते हैं ?

उत्तर– 1. नगरों की आर्थिक स्थिति को प्रभावित करते है।

2. सामाजिक रूप को भी आकार प्रदान करते हैं।

3. नगरीकरण में तीव्र गति।

4. उदाहरण– दिल्ली की मैट्रो रेल ने शहर के सामाजिक जीवन को बदल दिया है।

प्र0 19. धर्म क्या है ? सभी की समान विशेषताएँ क्या हैं ?

उत्तर– धर्म – पवित्र वस्तुओं से सम्बन्धित अनेक विश्वासों और व्यवहारों की एक ऐसी संगठित व्यवस्था है जो उन व्यक्तियों को एक नैतिक समुदाय की भावना में बाँधती है जो उसी प्रकार के विश्वासों और व्यवहारों को अभिव्यक्त करते हैं।

विशेषताएँ

1. प्रतीकों का समुच्चय
2. श्रद्धा या सम्मान की भावनाएँ।
3. अनुष्ठान सा समारोह।
4. विश्वासकर्ताओं का एक समुदाय।

प्र0 20. प्रदूषण से आप क्या समझते हैं ? विभिन्न प्रकार के प्रदूषण किस प्रकार हमें प्रभावित करते हैं ?

उत्तर– प्रदूषण– विभिन्न कारणों से वातावरण कर का दूषित होना प्रदूषण कहलाता है।

विभिन्न प्रकार के प्रदूषण

1 वायु प्रदूषण– उद्योगों तथा वाहनों से विकलने वाली जहरीली गैसें तथा घरेलू उपाय के लिए लकड़ी तथा कोयले के प्रयोग से सेहत पर बुरा असर पड़ता है।

2. जल प्रदूषण– घरेलु नालियों और फैक्ट्री से निकलने वाले पदार्थो तथा जलाशयों का प्रदूषण विशेष समस्या है।

3. ध्वनि प्रदूषण– लाउडस्पीकर, राजनीतिक प्रचार, वाहनों के हॉर्न और यातायात निर्माण उद्योग प्रभावित करते है।

प्र0 21. संस्कृति के विभिन्न आयामों को समझाइये।

उत्तर– 1. संज्ञानात्मक (व्याख्या सहित)

2. मानकीय (व्याख्या सहित)

3. भौतिक (व्याख्या सहित)

प्र022. संघर्ष किसे कहते हैं ? संघर्ष के परिणामों की चर्चा कीजिए।

उत्तर– संघर्ष – वह सामाजिक प्रक्रिया है, जिसमें व्यक्ति या समूह अपने विरोधी को प्रत्यक्ष तौर पर हिंसा या हिंसा की चुनौती देकर अपने उद्देश्यों को पूर्ति करना चाहते हैं।

1. अनीति, धोखाघड़ी तथा भय का बोलबाला होता है।
2. सांप्रदायिक दंगे भड़क सकते हैं।
3. समाज की एकता में दरार आती है।
4. सार्वजनिक हित को ताक पर रख दिया जाता है।

कोई अन्य बिन्दु

प्र0 23. परिवार के सम्बन्धों में परिवर्तन आने के क्या कारण हैं ? व्याख्या कीजिए।

उत्तर– 1. औद्योगिकरण (व्याख्या सहित)

2. स्त्रियों को आर्थिक निर्भरता (व्याख्या सहित)
3. उच्च जीवन स्तर (व्याख्या सहित)
4. नगरीकरण (व्याख्या सहित)
5. व्यावसायिक मनोरंजन (व्याख्या सहित)
6. युवावर्ग में क्रान्ति (व्याख्या सहित)

प्र0 24. वेबर के अनुसार आदर्श प्रारूप क्या है ?

प्रारूप को ध्यान रखते हुए विभिन्न प्रकार की सत्ता को परिभाषित कीजिए।

अथवा

एम. एन श्रीनिवास को जीवन–परिचय एवं मुख्य उपलब्धियाँ लिखिए।

उत्तर– आदर्श प्रारूप – यह सामाजिक घटना का तर्किक एकि स्थायी मंडल है जो इसकी सबसे महत्वपूर्ण विशेषताओं को रेखांकित करता है।

आदर्श प्रारूप का प्रयोग तीन विभिन्न प्रकार की सत्ता को परिभाषित करने के लिए किया –

1. पारम्पारिक सत्ता (व्याख्या सहित)
2. करिश्माई सत्ता (व्याख्या सहित)
3. तर्क–संगत, वैधानिक सत्ता (व्याख्या सहित)

अथवा

1. जीवन परिचय (व्याख्या सहित)
2. उपलब्धियाँ (व्याख्या सहित)

प्र0 25. नीचे दिए गए अवतरण को ध्यानपूर्वक पढ़ें और प्रश्नों के उत्तर दें।

उत्तर– हम लड़के गलियों का प्रयोग अनेक वस्तुओं के लिए करते हैं – एक स्थान की तरह, जहाँ खड़े होकर आप–पास देखे हैं, दौड़ने तथा खेलने के लिए हैं तथा खेलने के लिए, अपनी मोटरसाइकिलों पर विभिन्न करतब करने के लिए लडकियों के लिए ऐसा नहीं है । जैसा कि हम हर समय देखते हैं, लड़कियों के लिए गलियाँ विद्यालय से सीधे जाने के लिए हैं तथा गली के इस सीमित प्रयोग के लिए वे सदा झुंड में जाती हैं, शायद इसके पीछे उनमें मौजूद छेड़खानी का भय है (कुमार 1986)

1. समाजीकरण से आप क्या समझते हैं ?
2. समाजीकरण के विभिन्न अभिकरण क्या है ?
3. परिवार किस तरह लिंगवादी होता है ?

समाजशास्त्र - XI

अभ्यास प्रश्न पत्र - 7 (हल सहित)

समय : 3 घंटे M. M.: 80

(1) सभी प्रश्न अनिवार्य हैं।
(2) प्रश्न 1 से 14 तक प्रत्येक प्रश्न के 2 अंक हैं।
(3) प्रश्न 15 से 21 तक प्रत्येक प्रश्न के 4 अंक हैं।
(4) प्रश्न 22 से 25 तक प्रत्येक प्रश्न के 6 अंक हैं।

प्र०1. पर–सँस्कृति ग्रहण का अर्थ बताइए?

उ० पर–सँस्कृति ग्रहण एक प्रक्रिया है जिसने दो सँस्कृतियों के लोग एक–दूसरे के सम्पर्क में आते हैं तथा वह एक दूसरे के सभी नहीं तो बहुत सारे तत्वों को ग्रहण करते हैं। इस तत्व को ग्रहण करने की प्रक्रिया के साथ दोनों संस्कृतियों में एक दूसरे के प्रभावों को अधीन काफी परिवर्तन आ जाता है।

प्र०2. करिश्माई सत्ता किसे कहते है?

उ० समाज में यह सत्ता किसी व्यक्ति के अति विशिष्ट गुण या चमत्कार पर आधारित होती है। जैसे– धर्मिक गुरु, राजनीतिक नेता, कलाकार, खिलाड़ी आदि।

प्र०3. परहितवाद किसे कहते हैं?

उ० परहितवाद एक ऐसी प्रवृति है जिसमें एक व्यक्ति यह अनुभव करता है कि दूसरों की आवश्यकताएं उसके स्वयं की आवश्यकताओं से अधिक महत्वपूर्ण है। इसलिए वह दूसरों के लिए अपनी आवश्यकताओं का उत्सर्ग कर देता है।

प्र०4. समष्टि समाजशास्त्र किसे कहते हैं?

उ० समाजशास्त्र की उस शाखा को 'समष्टि समाजशास्त्र' कहते हैं जिसमें बड़े समूहों, संगठनों या सामाजिक व्यवस्थाओं का अध्ययन किया जाता है।

प्र०5. शिक्षा के दो मुख्य उद्देश्य बताइए?

उ० (1) बालक में सामाजिक अनुकूलन की क्षमता उत्पन्न करना।
(2) भाषा लिखने, बोलने, पढ़ने तथा व्याकरण व गणित का ज्ञान प्रदान करना।

प्र०6. प्रतिलोम विवाह से आप क्या समझते हैं?

उ० निम्न जाति के पुरुष का उच्च जाति की कन्या से विवाह करना प्रतिलोम विवाह कहलाता है। हिन्दू सामाजिक व्यवस्था ऐसे विवाह की अनुमति नहीं देता है।

प्र०7. सामाजिक विचलन से आप क्या समझते हैं?

उ० जब व्यक्ति सामाजिक नियमों का या स्वीकृति व्यवहार प्रतिमानों के विरुद्ध व्यवहार करता है, तो उस स्थिति को 'सामाजिक विचलन' कहते हैं। सामाजिक विचलन अपराध प्रवृति को बढ़ावा देता है।

प्र०8. मार्क्स के अनुसार समाजवाद का अर्थ स्पष्ट कीजिए?

उ० मार्क्स समाजवादी समाज के निर्माता के रुप में सर्वहारा–वर्ग की ऐतिहासिक भूमिका को उभारकर सामने लाते हैं। सर्वहारा वर्ग ही स्थायी रुप से पूँजीवाद का विरोध कर सकता है और समाजवाद को ला सकता है।

प्र०9. श्रम विभाजन से क्या तात्पर्य है?

उ० श्रम विभाजन एक ऐसी व्यवस्था है जिसमें लोगों के कार्यों का बटवारा उनकी योग्यता, प्रतिभा, क्षमता आदि के अनुसार होता है। आज की औद्योगिक अर्थव्यवस्था में श्रम विभाजन का बहुत महत्व है।

प्र०10. ग्लोबल वार्मिंग क्या है?

उ० विश्व के औसत तापमान (ग्रीन हाउस गैसों) में होने वाली वृद्धि ''ग्लोबल वार्मिंग'' कहलाती है। यह एक विश्वव्यापी पर्यावरणीय समस्या है।

प्र०11. जाति और वर्ग में अन्तर बताओ।

उ०

जाति	वर्ग
1. जाति जन्म पर आधारित है।	1. वर्ग सामाजिक परिस्थिति पर आधारित है।
2. जाति एक बन्द समूह है।	2. वर्ग एक खुली व्यवस्था है।
3. यह प्रजातन्त्र व राष्ट्रवाद के प्रतिकूल है।	3. प्रजातन्त्र और राष्ट्रवाद में बाधक नहीं है।
4. विवाह, खानपान आदि के कठोर नियम है।	4. वर्ग में कठोरता नहीं है।

प्र०12. जजमानी प्रथा किसे कहते हैं?

उ० ग्रामीण समाज में कुछ जातियाँ जैसे ब्राह्मण, लुहार, बढ़ई, धोबी, नाई, कुम्हार आदि अपने परम्परागत व्यवसाय द्वारा अन्य जातियों को अपनी सेवाएं प्रदान करती हैं। इस प्रथा को जजमानी प्रथा कहते हैं।

प्र०13. औपचारिक समूह से आप क्या समझते हैं?

उ० औपचारिक समूह वह समूह है जो व्यवस्थित एवं संगठित होता है। इस समूह का आकार, स्थान, उद्देश्य, नेता, सदस्य आदि पूर्व निश्चित होते हैं।

प्र०14. जल प्रदूषण के कारण बताओ।

उ० नदियों और जलाश्यों में गन्दे नालों, उद्योगों से निकलने वाला कैमिकल युक्त जल के मिल जाने से और मृत पशुओं को नदियों में बहाने से जल प्रदुषित हो जाता है।

प्र०15. परिवार के बदलते स्वरुपों की चर्चा कीजिए।

उ० परिवार के बदलते स्वरुपों को निम्न भागों में बांटा जा सकता है–

आर्थिक स्वरुप में परिवर्तन : स्त्रियों की आर्थिक निर्भरता को परिणामस्वरुप परिवार के पूर्व निश्चित कार्यों में क्रान्तिकारी परिवर्तन आए हैं। अब बच्चों का पालन पोशण शिशु–गृह में होने लगा है। डिनर रेस्टोरेंट से मंगाया जाने लगा है।

पार्टी–क्लब संस्कृति विकसित हुई है। उच्च जीवन स्तर में पैसों का महत्व बढ़ा है।

सामाजिक स्वरुप में परिवर्तन : उच्च शिक्षा पाकर नव–युवतियां अपने अधिकारों के प्रति जागरुक हुई है। विवाह की आयु बढ़ी है। व्यवसायिक गतिशीलता के कारण पारिवारिक जीवन की रुपरेखा बदल गई है। युवावर्ग पारिवारिक मान्यताओं को चुनौती दे रहा है।

राजनीतिक स्वरुप में परिवर्तन : मताधिकार के कारण पारिवारिक जीवन में गतिशीलता आ गई है। सवैंधानिक व्यवस्थाओं के कारण विवाह एक धार्मिक संस्कार की बजाय एक समझौता बन गया है। ऐसी स्थिति में पारिवारिक परिवर्तनों को टाला नहीं जा सकता है। आधुनिक युग में विवाह सम्बन्धी नैतिकता बदल गई है। प्रेम–विवाह विवाह विच्छेद अब कपड़े बदलने की भान्ति हो गई है।

प्र०16. समाजशास्त्र कैसे एक विज्ञान है?

उ० समाजशास्त्र एक विज्ञान है क्योंकि इसमें (i) वैज्ञानिक पद्धति का प्रयोग होता है। (ii) समाजशास्त्रीय ज्ञान प्रमाण पर आधारित है। (iii) इसमें समस्या को 'केवल क्या है' के बारे में ही नहीं बल्कि 'क्यों' व 'कैसे' का भी अध्ययन होता है। (iv) तथ्यों का वर्गीकरण एवं विश्लेषण किया जाता है। (v) कार्यकरण सम्बन्धों की व्याख्या की जाती है। (vi) सामान्यकरणी या सिद्धान्त–निर्माण का प्रयास किया जाता है, सामाजिक सिद्धान्तों को पुर्नपरीक्षा की जाती है। (vii) भविष्यवाणी करने की क्षमता है।

अथवा

प्र०. समाजशास्त्र तथा अर्थशास्त्र में अन्तर बताओ।

उ०

समाजशास्त्र	अर्थशास्त्र
1. सामाजिक सम्बन्धों का अध्ययन समाजशास्त्र करता है।	1. अर्थशास्त्र आर्थिक सम्बन्धों का अध्ययन करता है।
2. एक विस्तृत विज्ञान है।	2. आर्थिक पहलू से सम्बन्धित होने के कारण विशेष विज्ञान है।
3. समाजशास्त्र का दृष्टिकोण व्यापक है।	3. अर्थशास्त्र का दृष्टिकोण मुख्यतया आर्थिक है।
4. समाजशास्त्र के अध्ययन की प्रकृति समूहवादी है।	4. अर्थशास्त्र के अध्ययन की प्रकृति आर्थिक है।
5. समाजशास्त्र में अनेक गुणात्मक व पद्धतियों का अनुसरण किया जाता है।	5. अर्थशास्त्र में आगमन व निगमन पद्धतियों द्वारा अध्ययन किया जाता है।
6. समाजशास्त्र के नियम सामाजिक व्यवहार से सम्बन्धित होते हैं।	6. अर्थशास्त्र के नियमों में आर्थिक क्रियाओं को आधार माना जाता है।

प्र०17. संस्कृति की विशेषताओं का वर्णन करो।

उ० संस्कृति की विशेशताएं हैं :– (i) संस्कृति सीखी जाती है। (ii) संस्कृति हस्तांरित होती है। (iii) संस्कृति सामाजिक होती है। (iv) संस्कृति का स्वरुप स्थायी नहीं होता है। (v) संस्कृति मानव की आवश्यकताओं की पूर्ति करती है। (vi) संस्कृति आदर्श होती है। (vii) संस्कृति सार्वभौमिक होती है। (viii) संस्कृति में अनुकूलन का गुण होता है। (ix) संस्कृति संचयी होती है। (x) संस्कृति एक जटिल पूर्णता है।

प्र०18. अनुसंधान पद्धति के रुप में साक्षात्कार के प्रमुख लक्षणों का वर्णन करें।

उ० साक्षात्कार का अर्थ उस विधि से है जिसमें घटना के प्रत्यक्षदर्शी से प्रभावपूर्ण तथा औपचारिक वार्तालाप एवं विचार–विमर्श करने से होता है जो किसी विशेष घटना से प्रत्यक्ष रुप से सम्बन्धित होता है तथा किसी विशष उद्देश्य के लिए होता है। परन्तु यह पूर्व नियोजित तथा किसी निश्चित क्षेत्र तक ही सीमित होता है।

इनके लक्षण निम्न प्रकार है –

(i) इसमें घटना से सम्बन्धित व्यक्ति से वह सूचना प्राप्त की जाती है जो और किसी साधन से प्राप्त नहीं हो सकती। इसके लिए साक्षात्कारकर्त्ता एक विषय का चुनाव कर लेता है और साक्षी उसके बारे वर्णन करता है।

(ii) साक्षात्कार प्रविधि से इस बात का पता किया जाता है कि कोई व्यक्ति विशेष किसी विशेष परिस्थिति में किस प्रकार व्यवहार करता है। इसके लिए साक्षात्कार के समय साक्षी के हावभाव व्यवहार का ध्यान रखा जाता है।

(iii) यह विधि उन घटनाओं का अध्ययन करने में भी सक्षम है जो प्रत्यक्ष अवलोकन के आयोग्य है तथा जिनके बारे में साक्षी के अतिरिक्त किसी और को पता नहीं होता है।

(iv) इस विधि की सहायता से भूतकाल में हुई घटनाओं तथा उनके प्रभावों का भी अध्ययन हो सकता है क्योंकि बहुत–सी घटनाएं ऐसी होती है जो दोबारा नहीं हो सकती है।

प्र०19. संघर्ष क्या है? संघर्ष के परिणामों की चर्चा कीजिए।

उ० संघर्ष वह सामाजिक प्रक्रिया है ''जिसमें व्यक्ति या समूह अपने विरोधी को प्रत्यक्ष तौर पर हिंसा या हिंसा की चुनौती देकर अपने उद्देश्यों की पूर्ती करना चाहता है'' गिलीन व गिलिन द्वारा।

निरन्तर संघर्ष के परिणामस्वरुप समाज की एकता में दरार आती है। संघर्ष के कारण जटिल मुद्दे और भी जटिल हो जाते हैं। उद्योगों तथा कार्यालयों में हड़ताल होती है। मिल मालिक और मजदूर संगठन अपनी–अपनी मांगों पर अडे रहते हैं। हड़ताल के कारण हजारों कर्मचारी बेकार हो जाते हैं और उत्पादन प्रक्रिया ठप हो जाती है जिससे दिनो दिन और भी कई प्रकार की समस्याएं उत्पन्न हो जाती है।

इसी प्रकार जाति संघर्ष के कारण अब गांवों में अन्तर्जातीय सम्बन्ध तथा एकता समाप्त हो गई है। सौहार्द समाप्त हो जाने से देशवासियों के विकास में

बाधा आती है। यद्यपि संघर्ष एक विघटनकारी प्रक्रिया है। फिर भी, सामाजिक जीवन में संघर्ष के महत्व को अस्वीकार नहीं किया जा सकता।

प्र०20. 'समाजीकरण की प्रक्रिया एक जरुरी है' – वर्णन करो।

उ० समाजीकरण वह प्रक्रिया है जिसके द्वारा व्यक्ति, एक समाज का सदस्य होने के नाते, अपनी संस्कृति के आदर्श, मूल्य, आचार और व्यवहार के तरीके सीखता है। व्यक्ति सबसे अधिक अपने निकटतम लोगों से सीखता है, जैसे– पारिवारिक सदस्य, अभिन्न मित्र तथा स्कूल के अध्यापक तथा सहपाठी। व्यक्ति दूसरे लोगों के अनुकरण पत्र–पत्रिकाओं, टी०वी०, सिनेमा और आजकल इंटरनेट से भी बहुत कुछ सीखता है।

समाजीकरण सीखने के प्रक्रिया एक जरुरी प्रक्रिया है क्योंकि बच्चा एक हाड–मांस के जीव के रुप में जन्म लेता है, सबसे पहले वह माँ के सम्पर्क में आता है और माँ के स्पर्श व प्यार–दुलार से सीखता है। फिर भाई–बहनों से सीखता है। इस प्रकार व सामाजिक गुणों या विशेषताओं का अर्जित करता है और एक सामाजिक प्राणी कहे जाने की योग्यता प्राप्त करता है।

प्र०21. पर्यावरण संकट क्या है? इससे कैसे बचा जा सकता है?

उ० वायु प्रदूषण, ध्वनि प्रदूषण, वनों का कटना, ग्लोबल वार्मिंग, अम्ल वर्षा आदि का सामूहिक नाम पर्यावरण संकट है।

पर्यावरण एक संकट एक सार्वभौमिक पर्यावरणीय समस्या है। इस समस्या से बचने के लिए निम्नलिखित उपायों को सख्ती से लागू किया जाना चाहिए।

(i) **कानूनी उपाय** : सख्त कानून बनाए जाने चाहिए, जाँच व सुरक्षा समिति गठित की जानी चाहिए।

(ii) **सार्वजनिक हित अभियोजना** : प्रदूषण फैलाने वाली औद्योगिक इकाइयों के विरुद्ध लोकहित मुकदमें दायर किए जाने चाहिए।

(iii) **जन शिक्षा** : जन संचार माध्यमों द्वारा जनता को पर्यावरणीय खतरों से आगाह करना चाहिए जिससे वे प्रदूषण न फैलाएं।

(iv) **स्वैच्छिक संगठन** : पर्यावरणीय सुरक्षा के लिए स्वैच्छिक संगठनों को आगे आना चाहिए।

(v) **अनेक अन्तर्राष्ट्रीय एवं राष्ट्रीय संगठनों के प्रयास** : पर्यावरणीय सुरक्षा के लिए विभिन्न एजेसियां प्रयासरत है।

प्र०22. 'जनजातीय समुदायों को कैसे जोड़ा जाएं' इस विवाद के दोनों पक्षों के क्या तर्क है?

उ० ब्रिटिश प्रशासन मानव–विज्ञानियों का मानना था कि जनजातिय समुदाय की अपनी विशेष संस्कृति है जो हिन्दू मुख्यधारा से काफी अलग है। उनका मानना था कि सीधे–सादे जनजातीय लोग हिन्दू समाज तथा संस्कृति से न केवल शोशित होगें बल्कि सांस्कृतिक रुप से भी उनका पतन होगा। इस कारण को ध्यान में रखते हुए उन्हें लगा कि यह राज्य का कर्तव्य है कि वह जनजातियों को संरक्षण दें

ताकि वे अपनी जीवन पद्धति तथा संस्कृति की मुख्यधारा में आपने आप को मिला लें।

परन्तु राष्ट्रवादी भारतीय मानते थे कि जनजातीय संरक्षण के जो भी प्रयास हो रहे है वह दिशाहीन है तथा वास्तव में उनकी संस्कृति को बचाने का कार्य गुमराह करने का प्रयास था। इस कारण ही जनजातियों के पिछड़ेपन को आदिम संस्कृति के संग्रहालय के रुप में ही बना कर ही रखा गया था। वे हिन्दू समाज की कई विशेषताओं को पिछड़ा हुआ मानते थे तथा जिन्हें सुधारा जाना आवश्यक था। उन्हें लगता था कि जनजातियों को भी विकसित किए जाने की आवश्यकता है।

प्र०23. ग्रामीण क्षेत्र में सामाजिक व्यवस्था की विशेषताएं बताइए।

उ० भारतीय ग्रमीण क्षेत्र में सामाजिक व्यवस्था की विशेषताओं को निम्नलिखित बिन्दुओं के आधार पर समझा जा सकता है–

(I) **कृषि व्यवसाय** : ग्रामीण क्षेत्र के अधिकांश निवासी कृषि और इससे सम्बन्धित व्यवसाय पर आधारित होते हैं।

(ii) **संयुक्त परिवार की प्रधानता** : ग्रामीण समाज में परिवार के सभी सदस्य एक ही छत के नीचे रहते हैं और एक ही रसोई का बना खाना खाते हैं।

(iii) **प्रकृति से प्रत्यक्ष सम्बन्ध** : प्रकृति पर आश्रित रहते हुए ग्रामीण समाज के सदस्य प्रकृति से संघर्ष करते हुए सामंजस्य स्थापित करते हैं।

(iv) **कम जनसंख्या घनत्व** : ग्रामीण क्षेत्र हरा भरा और खुला रहता है, उसमें नगरों जैसी भीड़–भाड़ नहीं होती है, इसलिए जनसंख्या घनत्व कम होता है।

(v) **सजातीयता** : ग्रामीण क्षेत्र के सदस्यों की जीवन–पद्धति, रहन–सहन, खानपान, रीति–रिवाज, धार्मिक विश्वास, व्यवसाय आदि लगभग एक जैसे होते हैं।

(vi) **सामाजिक गतिशीलता का अभाव** : ग्रामीण क्षेत्रों में पीढ़ी–दर–पीढ़ी एक व्यवसाय होने के कारण सामाजिक गतिशीलता का अभाव पाया जाता है।

(vii) **अधिक स्थायी जीवन** : परम्परागत आदर्शों, अंधविश्वासों व धर्म की प्रधानता के कारण सामाजिक परिवर्तन का प्रभाव न्यूनतम होता है।

(viii) **भाग्यवादिता एवं अशिक्षा** : शारीरिक श्रम को अधिक महत्व के कारण शिक्षा पर ध्यान नहीं दिया जाता है। जीवन की घटनाओं को भाग्य का कारण माना जाता है।

(ix) **स्त्रियों की निम्न स्थिति** : स्त्रियां घर की चारदिवारी में ही उत्पादन के कार्यों में योगदान देती है। इनकी स्थिति दास के समान होती है। बहुविवाह और बाल विवाह के कारण इनकी स्थिति निम्न दर्जे की होती है।

प्र०24. मैक्स वेबर द्वारा दिए गए सत्ता के प्रकारों का वर्णन करो।

उ० मैक्स वेबर ने सत्ता के निम्नलिखित प्रकार बताए हैं–

(i) **परम्पराग सत्ता** : पुरोहित, महाजन, वैद्य, नरेश, राजा रानी, पंच, प्रधान,

चौधरी आदि पद कुछ लोगों को सत्ता की परम्परा से प्राप्त होते हैं। यह विरासत एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी को हस्तांरित होती है।

(ii) **बौद्धिक एवं कानूनी सत्ता** : आधुनिक नौकरशाही के सत्ता के इसी रुप के दर्शन होते हैं जिसमें व्यक्ति किसी सवैधानिक या बौद्धिक वैधानिक सत्ता के पद पर होता है। जैसे– मुख्यमंत्री, प्रधानमंत्री, जज, अध्यक्ष, सरपंच, प्रशासनिक अधिकारी आदि।

(iii) **करिश्माई सत्ता** : समाज में कुछ व्यक्तियों को यह सत्ता किसी विशिष्ट, करिश्मा या चमत्कार के द्वारा प्राप्त होती है। पीर, पैंगम्बर, शंकराचार्य, जादूगर, कलाकार, खिलाड़ी, धार्मिक गुरु, राजनीतिक नेता, आदि इस सत्ता के अन्तर्गत आते हैं। उदहारणार्थ, महात्मा गाँधी एक करिशमाई नेता थे।

अथवा

प्र० नौकरशाही की अवधारणा किस समाजशास्त्री ने दी? नौकरशाही की विशेषताओं का वर्णन करो।

उ० नौकरशाही की अवधारणा मैक्स वेबर ने दी है। नौकरशाही की प्रमुख विशेषताएं इस प्रकार है–

(i) नौकरशाही में कर्मचारियों और अधिकारियों के कार्यक्षेत्र निश्चित होते हैं।

(ii) नौकरशाही में उच्च पदाधिकारियों के अधीन निम्न कर्मचारी के काम करने की एक संस्तरणात्मक व्यवस्था होती है।

(iii) आधुनिक नौकरशाही में दफ्तरों का कार्य संचालन लिखित दस्तावेजों या फाइलों के माध्यम से होता है। फाइलों को सुरक्षित रखने के लिए क्लर्क, फाइल कीपर आदि होते हैं।

(iv) आधुनिक नौकरशाही में दफ्तरों का कामकाज जटिल व विशिश्ट प्रकार का होता है इसलिए विशिष्ट प्रशिक्षण की आवश्यकता होती है।

(v) नौकरशाही में दफ्तरों का प्रबन्ध सामान्य नियमों के अनुसार होता है जोकि कुछ स्थिर तथा विस्तृत होते हैं। दफ्तर के प्रबन्ध का प्रशिक्षण लेना होता है।

(vi) नौकरशाही व्यवस्था में प्रत्येक अधिकारी और कर्मचारी को प्रतिमाह एक निश्चित धनराशि वेतन के रुप में मिलती है। वेतन कार्य के अनुसार न होकर पद के अनुरुप होता है। इसके अलावा सेवानिवृत्ति पर पेंशन दी जाती है तथा पी.एफ., मेडिकल आदि के अन्य लाभ भी मिलते हैं। प्रजातन्त्र में नौकरशाही का विकास हुआ है।

प्र०25. निम्नलिखित अनुच्छेद को पढ़िये और पूछे गए प्रश्नों के उत्तर दें।

शिक्षित होने के लिए साक्षर होना जरुरी है और साक्षरता शक्ति सम्पन्न होने का महत्वपूर्ण साधन है। जनसंख्या जितनी साक्षर होगी आजीविका के विकल्पों के बारे में उससे उतनी ही अधिक जागरुकता उत्पन्न होगी और लोग ज्ञान आधारित अर्थव्यवस्था में उतना ही अधिक भाग ले सकेंगे। इसके अलावा साक्षरता से स्वास्थ्य के प्रति जागरुकता आती हैं और समुदाय के सदस्यों की सांस्कृतिक और आर्थिक कल्याण कार्यों में सहभागिता बढ़ती है। स्वतन्त्रता प्राप्ति बाद साक्षरता के

स्तरों में काफी सुधार आया है एवं हमारी जनसंख्या का एक तिहाई हिस्सा अब साक्षर है। फिर भी साक्षरता दर को भारत की जनसंख्या संवृद्धि दर के साथ मुकाबला करने के लिए संघर्ष करना पड़ रहा है क्योंकि हमारी जनसंख्या वृद्धि दर अब भी काफी ऊँची बनी हुई है। इसलिए नई पीढ़ियों को साक्षर बनाने की आवश्यकता है।

(i) साक्षरता क्या है? जनसंख्या पर इसका क्या प्रभाव पड़ता है?

उ० जनगणना 2011 में उस व्यक्ति को भी साक्षर माना गया है, जो किसी भी भाषा को लिख–पढ अथवा समझ सकता हो। साक्षरता स्वास्थ्य के प्रति जागरुकता पैदा करती है। अतः साक्षर व्यक्ति **'छोटा परिवार सुखी परिवार'** के सिद्धान्त पर चलता है जिससे जनसंख्या नियंत्रित होती है।

(ii) स्वतन्त्रता के बाद साक्षरता की स्थिति बताइए।

उ० स्वतन्त्रता के बाद साक्षरता की दर में यद्यपि वृद्धि हुई है। परन्तु यह भी आशा के अनुरुप नहीं कही जा सकती है। 2011 की जनगणना के अनुसार भारत की साक्षरता दर 73% है। केवल केरल राज्य ही ऐसा है जहां साक्षरता दर 93.9% है। बिहार की स्थिति सबसे खराब है जहां की साक्षरता दर 63.82% है। इसलिए नई पीढ़ियों को साक्षर बनाने की आवश्यकता है जिससे जनसंख्या संवृद्धि को नियंत्रित किया जा सके।

समाजशास्त्र - XI

अभ्यास प्रश्न पत्र - 8 (हल सहित)

समय : 3 घंटे **M. M.: 80**

(1) सभी प्रश्न अनिवार्य हैं।

(2) प्रश्न 1 से 14 तक प्रत्येक प्रश्न के 2 अंक हैं।

(3) प्रश्न 15 से 21 तक प्रत्येक प्रश्न के 4 अंक हैं।

(4) प्रश्न 22 से 25 तक प्रत्येक प्रश्न के 6 अंक हैं।

प्र०1. राज्यविहीन समाज का अर्थ बताओ।

उ० ऐसा समाज जिसमें सरकार की औपचारिक संस्थाओं का अभाव हो।

प्र०2. अलगाव की स्थिति से आप क्या समझते हैं?

उ० अपने कार्य के प्रति रूचि न होना, काम में मन न लगना अलगाव की स्थिति है।

प्र०3. संस्कृति के पिछेड़पन से आप क्या समझते हैं?

उ० जब भौतिक या तकनीकी आयाम तेजी से बदलते हैं तो मूल्यों तथा मानको की दृष्टि से अभौतिक पक्ष पिछड़ जाता है उसे संस्कृति के पिछड़ेपन कहलाता है।

प्र०4. ग्लोबल वार्मिंग क्या है?

उ० विश्व के औसत तापमान में होने वाली वृद्धि को ग्लोबल वार्मिंग कहते हैं।

प्र०5. श्रमविभाजन की परिभाषा बताओ।

उ० कार्य का विशिष्टीकरण जिसके माध्यम से कार्य का बटवारा योग्यता, प्रतिभा और क्षमता के अनुसार किया जाता है।

प्र०6. उद्विकास क्या है?

उ० परिवर्तन जब धीरे–धीरे सरल से जटिल की ओर होता है उसे उद्विकास कहते हैं।

प्र०7. पूंजीवाद की परिभाषा बताओ।

उ० आर्थिक उद्यम की व्यवस्था जिसमें उत्पादन के साधनों, सम्पति पर निजी स्वामित्व होता है और लाभ कमाने पर जोर दिया जाता है।

प्र०8. समाज में असमानता के मुख्य कारण बताओ।

उ० भूमि, धन, सम्पति, शिक्षा का समान वितरण न होना।

प्र०9. अपराध क्या है?

उ० कानून के विरूद्ध कार्य करना अपराध कहलाता है। जैसे– गांधी जी का नमक कानून तोड़ना ब्रिटिश सरकार की नजर में अपराध था।

प्र०10. सामाजिक स्तरीकरण क्या है?

उ० उच्चता और निम्नता के आधार पर समाज का बंटा होना सामाजिक स्तरीकरण कहलाता है।

प्र०11. सामाजिक विचलन से आप क्या समझते हैं?

उ० सामाजिक नियमों के विरूद्ध काम करना सामाजिक विचलन कहलाता है।

प्र०12. भूमिका संघर्ष से आप क्या समझते हैं?

उ० एक से अधिक भूमिका निभाने में जो असंतुलन होता है उसे भूमिका संघर्ष कहते हैं।

प्र०13. समष्टि समाजशास्त्र क्या है?

उ० जिसमें बड़ी–बड़ी समाजिक इकाइयों, संगठनों और व्यवस्थाओं का अध्ययन किया जाता है।

प्र०14. सहभागी अवलोकन क्या होता है?

उ० इसमें अनुसंधानकर्ता समूह में अजनबी की तरह न रहकर उसका एक अंग बनकर सारी स्थिति का अवलोकन करता है और आंकड़े इकट्ठे करता है।

प्र०15. जन–परिवहन किस प्रकार सामाजिक परिवर्तन लाते हैं?

उ० जन–परिवहन निम्न प्रकार सामाजिक परिवर्तन लाते हैं–

(i) जातिवाद के भेदभाव को दूर करते हैं।
(ii) समाज में गतिशीलता आई है।
(iii) समाज की आर्थिक स्थिति को प्रभावित करते हैं।
(iv) दिल्ली और दिल्ली के आस पास के शहरों में मैट्रो रेल के कारण बहुत परिवर्तन आया है।

प्र०16. नौकरशाही की विशेषताएं बताओ।

उ० (i) अधिकारियों के कार्य (ii) सोपनिक क्रम
(iii) विश्वसनीयता (iv) कार्यालय का आचरण

अथवा

प्र० भारतीय समाजशास्त्री के कर्तव्य बताओ।

उ० (i) वह भारतीय हो
(ii) सामाजिक परम्पराओं को जानता हो
(iii) भारतीय भाषाओं को जानता हो और सीखने का प्रयत्न करे
(iv) संस्कृति को पहचाने व उसका अध्ययन करे।

प्र०17. प्रदूषण के प्रकार बताओ।

उ० (i) जल प्रदूषण (ii) वायु प्रदूषण
(iii) ध्वनि प्रदूषण (iv) रासायनिक प्रदूषण

प्र०18. सर्वेक्षण पद्धति के तत्व बताओ।

उ० (i) सर्वेक्षण का नियोजन
(ii) आँकड़ों को इकट्ठा करना
(iii) आँकड़ों का विश्लेषण तथा विवेचन करना
(iv) आँकड़ों को प्रस्तुत करना।

प्र०19. सामाजिक नियंत्रण क्या है? इसके प्रकार बताओ।

उ० एक ऐसी प्रक्रिया जिसके द्वारा समाज में व्यवस्था स्थापित होती है और बनाए रखी जाती है। ये दो प्रकार का होता है–

(i) **औपचारिक नियंत्रण** : राज्य, कानून, पुलिस की सहायता से किया गया नियंत्रण औपचारिक नियंत्रण कहलाता है। इसमें अपराध की गंभीरता के अनुसार दण्ड दिया जाता है।

(ii) **अनौपचारिक नियंत्रण** : समाज द्वारा अर्थात् धर्म, प्रथा, परम्परा द्वारा किया गया नियंत्रण अनौपचारिक नियंत्रण कहलाता है। जैसे– जातीय नियमों का उलंघन करने पर गांव में हुक्का पानी बंद कर दिया जाता है।

प्र०20. कानून और प्रतिमान में क्या अन्तर है?

उ० (i) कानून स्पष्ट नियम है जबकि प्रतिमान अस्पष्ट है।

(ii) कानून सरकार द्वारा नियम के रूप में स्वीकृत है जबकि प्रतिमान नहीं।

(iii) कानून का उलंघन करने पर सजा हो सकती है जबकि प्रतिमान पर नहीं।

(iv) कानून सार्वभौमिक रूप से स्वीकृत है जबकि प्रतिमान सामाजिक परस्थिति अनुसार।

प्र०21. सत्ता क्या है? इसके प्रकार बताओ।

उ० सत्ता का अर्थ है – समाज के अन्य सदस्य इसके नियमों को मानने को तैयार है। यह तीन प्रकार की होती है–

(i) **परम्परागत सत्ता** : जो परम्परा पर आधारित हो, समाज द्वारा स्वीकृत हो।

(ii) **वैधानिक सत्ता** : जो कानून से प्राप्त हो।

(iii) **करिश्माई सत्ता** : धार्मिक गुरु, पीर, करिश्माई शक्ति से प्राप्त सत्ता।

प्र०.22 यांत्रिक एकता और सावयवी एकता में अंतर बताओ।

उ०

यांत्रिक एकता	सावयवी एकता
1. आदिम समाज यांत्रिक एकता पर आधारित है।	1. आधुनिक समाज सावयवी एकता पर आधारित है।
2. श्रम विभाजन नहीं होता है।	2. श्रम विभाजन पर आधारित है।
3. एकरूपता पर आधारित है।	3. एकरूपता पर आधारित नहीं है।
4. कम जनसंख्या वाले समाजों में पायी जाती है।	4. अधिक जनसंख्या वाले समाजों में पायी जाती है।
5. सामाजिक सम्बन्ध व्यक्तिगत होते हैं।	5. सामाजिक सम्बन्ध व्यक्तिगत नहीं होता है।
6. किसी मानदण्ड की अवहलेना करने पर कठोर दण्ड दिया जा सकता है।	6. आधुनिक समाज के कानून दमनकारी न होकर क्षतिपूरक प्रवृति के होते हैं।

प्र०23. घूर्ये के अनुसार जाति की विशेषताएं बताओ।

उ० (i) अपरिवर्तन (ii) खण्डात्मक विभाजन
(iii) संस्तरण (iv) भोजन आदि पर प्रतिबंध
(v) व्यवसाय आदि पर प्रतिबंध (vi) विवाह आदि पर प्रतिबंध

अथवा

प्र०. जाति व्यवस्था में परिवर्तन के कारण बताओ।

उ० (i) औद्योगीकरण (ii) स्त्रियों की आर्थिक निर्भरता
(iii) नगरीकरण (iv) उच्च जीवन स्तर
(v) युवावर्ग में क्रान्ति (vi) शिक्षा

प्र०24. समाजीकरण के प्रमुख अधिकरण कौन से है? व्याख्या करे।

उ० (i) परिवार (व्याख्या) (ii) मित्र समूह (व्याख्या)
(iii) विद्यालय (व्याख्या) (iv) भाषा (व्याख्या)
(v) जनसंचार साधन (व्याख्या)

प्र०25. निम्न अनुच्छेद को पढ़ो और नीचे लिखे प्रश्नों को उत्तर दें।

पृथ्वी द्वारा छोड़ी गई कुछ प्रमुख गैसे जैसे काबर्न डाई ऑक्साइड, मीथेन तथा अन्य गैसे सूर्य की रोशनी को रोककर तथा उसे वायुमंडल में न जाने देकर ग्रीन हाउस प्रभाव का निर्माण करती है। इससे विश्व के तापमान में परिवर्तन होने के कारण ध्रुवों के हिम की परतें पिघल रही है। जिसके कारण समुद्र तल की ऊचाई बढ़ती जा रही है। इसमें समुद्रों के किनारों पर स्थित प्रदेश जल में निमग्न हो जाएंगे तथा परिस्थिति की संतुलन पर भी असर पड़ेगा। ग्लोब वार्मिंग के परिमाणस्वरूप जलवायु में उतार चढ़ाव तथा अनियमितता का प्रभाव पूरी दुनिया में देखा जा सकेगा।

(i) ग्रीन हाउस से आप क्या समझते हैं?

उ० पौधों की जलवायु को अधिक ठंड से बचाने के लिए ढंका हुआ ढांचा ग्रीन हाउस कहलाता है।

(ii) ग्लोबल वार्मिंग के प्रभाव बताओ।

उ० (क) बर्फ पिघलने लगती है जिससे समुद्र तल की ऊचाई बढ़ती है।
(ख) जलवायु में उतार चढ़ाव और अनियमितता आती है।

(iii) विश्व को बचाने के लिए मानव क्या कर्तव्य है?

उ० (क) मनुष्य को पर्यावरण सुरक्षा पर ध्यान देना चाहिए।
(ख) पेड़ लगाकर स्वच्छ वातावरण प्रदान करना चाहिए।

समाजशास्त्र - XI

अभ्यास प्रश्न पत्र - 9

समय : 3 घंटे **M. M.: 80**

(1) सभी प्रश्न अनिवार्य हैं।
(2) प्रश्न 1 से 14 तक प्रत्येक प्रश्न के 2 अंक हैं।
(3) प्रश्न 15 से 21 तक प्रत्येक प्रश्न के 4 अंक हैं।
(4) प्रश्न 22 से 25 तक प्रत्येक प्रश्न के 6 अंक हैं।

---

1. दार्शनिक स्कूल और समाजशास्त्र के बीच क्या अंतर है? 2
2. यूरोप में समाजशास्त्र की शुरूआत और विकास का अध्ययन करना क्यों महत्वपूर्ण है? 2
3. तुलनात्मक और ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य द्वारा लाए गए दो कारक क्या है? 2
4. भूमिका संघर्ष का क्या अर्थ है? 2
5. संदर्भ समूह को परिभाषित करें। 2
6. टीबी बोटामोर और ऐंथनी गिडिएंन्स के अनुसार विश्व के चार प्रमुख वर्ग कौन से है? 2
7. कैल्विनवाद से आप क्या समझते है? 2
8. प्रकार्यवादियों ने सामाजिक नियंत्रण को किस प्रकार समझा है? 2
9. समाजशास्त्र में संचयी ज्ञान क्या है? 2
10. मातृस्थानीय परिवारों और पितृ स्थानीय परिवारों के बीच क्या अंतर है? 2
11. रक्तसम्बंधी नातेदारी क्या होती हैं? 2
12. अनौपचारिक अर्थव्यवस्था को समझाओ। 2
13. समाजीकरण क्या है? 2
14. साक्षात्कार अनुसूची के क्या लाभ हैं? 2

15. जीवों के बारे में डार्विन के विचार ने सामाजिक विचार को कैसे प्रभावित किया? 4

16. भारत में समाजशास्त्र के विकास पर चर्चा करें। 4

17. अंत–समूह और बाह्य–समूह की विशेषताओं पर चर्चा करे। 4

या

स्तरीकरण के आधार के रूप में वर्ग पर चर्चा करें। 4

18. प्रदत और अर्जित प्रस्थिति पर एक नोट लिखें। 4

19. सामाजिक नियत्रंण के अनौपचारिक साधनों से आप क्या समझते हैं?

या

एक सामाजिक संस्थान के रूप में सरकार के महत्व पर एक नोट लिखें। 4

20. 'विश्वबधुत्त्व' से आप क्या समझते है? 4

21. सामाजिक शोध में व्यक्तिगत अध्ययन विधि के महत्व की व्याख्या करें। 4

22. समाजशास्त्र के क्षेत्र में आगस्ट कॉम्टे के योगदान पर एक नोट लिखें। 6

23. विवाह को परिभाषित करे और इसके विभिन्न रूपों पर चर्चा करें। 6

या

समाजीकरण की प्रक्रिया पर एक नोट लिखें। 6

24. सँस्कृति को परिभाषित करें और इसकी महत्वपूर्ण विशेषताओं का वर्णन करें। 6

25. दिए गए गद्यांश पढ़ें और निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दें।

भारत में जजमानी प्रणाली जाति–आधारित प्रणाली थी, जिसका मतलब ग्रामीण भारत को पूरा करना था, जहां लोगों ने वंशानुगत व्यवसायों का दावा किया था। चूंकि अधिकांश ग्रामीण समुदाय गरीब थे, इसलिए वे पूरी तरह से अपने समृद्ध भूमि मालिकों की दया पर थे जिन्होंने अपनी दैनिक आवश्यकताएं देकर उन्हें संरक्षित किया, और ग्रामीण गरीबों ने पीढ़ियों के बाद पीढ़ी के लिए उनकी सेवा करके अपने स्वामी के प्रति कृतज्ञता व्यक्त की। एक छोटा समरूप समाज होने के नाते, जहां बहुमत गरीब थे, रिश्ते पारस्परिक थे, और हालांकि वे हमेशा प्राप्त करने वाले अंत में थे, वे हमेशा अपने लाभकारी लोगों के लिए आभारी रहे।

उपर्युक्त गद्यांश के आधार पर निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दें।

(क) आपके अनुसार जजमानी प्रणाली क्या है? वंशानुगत व्यवसायों से आप क्या समझते हैं? 2

(ख) समाजशास्त्रियों का मानना है कि जजमानी प्रणाली का संकेत है, बंधुआ श्रम जो दासता की तरह है। आप इस बात से सहमत या असहमत? कथन का विश्लेषण करें और इसे भारतीय जाति व्यवस्था के संदर्भ में समझाएं। 4

समाजशास्त्र - XI

अभ्यास प्रश्न पत्र - 10

समय : 3 घंटे **M. M.: 80**

(1) सभी प्रश्न अनिवार्य हैं।
(2) प्रश्न 1 से 14 तक प्रत्येक प्रश्न के 2 अंक हैं।
(3) प्रश्न 15 से 21 तक प्रत्येक प्रश्न के 4 अंक हैं।
(4) प्रश्न 22 से 25 तक प्रत्येक प्रश्न के 6 अंक हैं।

---

1. समाज में मौजूद बहुलताओं के बारे में संक्षेप में लिखें। 2
2. संदर्भ समूह को उदाहरण सहित परिभाषित करें। 2
3. गांवों और शहरों के बीच दो अंतरों की सूची बनाएं। 2
4. सत्ता और कानून के बीच क्या अंतर हैं? 2
5. भौतिक और अ–भौतिक संस्कृति के बीच अंतर बताये। 2
6. स्वजातिवाद शब्द से आप क्या समझते हैं। 2
7. क्या गेटेड़ समुदाय अधिकांश शहरों और गांवों में मौजूद हैं? 2
8. शहरों में सामाजिक व्यवस्था के लिए क्या चुनौतियां है? 2
9. आप मानकशुन्यता से क्या समझते है? 2
10. शहरों में जन आवागमन के मुख्य साधनों कौन–कौन से है? 2
11. क्या आपके पड़ोस में कोई भी मध्यवर्गीय समुदाय का उदय हुआ है? 2
12. आत्मसातीकरण को परिभाषित करें। 2
13. सामाजिक बाधाएँ क्या है? क्या वे जरूरी है? 2
14. क्या आधुनिक भारत में अहस्तक्षेप–नीति (laissez faire) उदारवाद मौजूद है? 2
15. समाजशास्त्र और अर्थशास्त्र के बीच अंतर बतायें? 4

16. समाज में प्रचलित सामाजिक नियंत्रण के प्रकारों में बुनियादी अंतरों को स्पष्ट करें? 4

17. जाति और वर्ग के बीच बुनियादी अंतर समझाइये? 4

18. प्रतिस्पर्धा के बिना समाज की कल्पना करे। क्या यह संभव है? चर्चा करे। 4

19. आज समाज के द्वारा सामना की जाने वाली प्रमुख पर्यावरणीय समस्याएं क्या है? 4

20. नौकरशाही की मूलभूत विशेषताये कौन–कौन सी है? 4

21. महिला नेतृत्व वाले परिवारों की अवधारणा का विस्तार करें। 4

22. संस्कृति को परिभाषित करें। इसके विभिन्न आयामों के बारे में विस्तार से चर्चा करें। 6

23. राज्य की अवधारणा पर ए आर देसाई के दृष्टिकोण क्या थे। 6

24. परिवार को परिभाषित करें और इसके प्रकार क्या है? 6

25. गंद्याश पढ़े और दिए गए प्रश्नों का उत्तर दें। 6

3 दिसंबर 1984 की रात को भोपाल के मध्य से एक घातक गैस फैल गई जिसके बारे में कहा गया है कि 4000 लोगों की हत्या हुई, 200,000 लोग स्थायी रूप से अक्षम हो गये है। बाद में गैसों की पहचान की गई एमआईसी के रूप में गलती से यूनियन कार्बाइड कीटनाशक कारखाने से लीक हो गई थी। भारत के पर्यावरण राज्य में द्वितीय नागरिकों की रिपोर्ट ''विज्ञान और पर्यावरण कैंद्र'' ने आपदा के पीछे छिपे कारणों का विश्लेषण किया।

(क) 1984 में भोपाल को आये आपदा के प्रकार को नाम दें? क्या यह एक प्राकृतिक था। 2

(ख) ऐसा क्यों कहा जाता है कि हम उच्च जोखिम वाले समाजों में रहते है? इसको विस्तृत करें। 4

समाजशास्त्र - XI

अभ्यास प्रश्न पत्र - 11

समय : 3 घंटे **M. M.: 80**

(1) सभी प्रश्न अनिवार्य हैं।
(2) प्रश्न 1 से 14 तक प्रत्येक प्रश्न के 2 अंक हैं।
(3) प्रश्न 15 से 21 तक प्रत्येक प्रश्न के 4 अंक हैं।
(4) प्रश्न 22 से 25 तक प्रत्येक प्रश्न के 6 अंक हैं।

---

1. समाजशास्त्र को वैज्ञानिक अनुशासन के रूप में क्यों माना जाता है? प्रयोग / मूल्य तटस्थता / सामाजिक वास्तविक्ता के आधर पर क्या इसे साबित किया जा सकता है? 2
2. सामाजिक समूह और अर्ध–समूह के बीच अंतर करें। 2
3. जीएस घुर्ये द्वारा दी गयी जाति व्यवस्था की किसी भी दो विशेषताओं का उल्लेख करें। 2
4. सत्ता क्या है? 2
5. क्या आपको लगता है कि सामाजिक असमानता प्रकृति में सार्वभौमिक है? अपने उत्तर का समर्थन करें। 2
6. मार्क्स द्वारा बताए गए अलगाव की अवधारणा की व्याख्या करें। 2
7. साँस्कृतिक समूहों के अंतःक्रिया के एक सकारात्मक और एक नकारात्मक प्रभाव का उल्लेख करें। 2
8. सहकर्मी दबाब को सामाजिक दबाब के रूप में क्यों माना जाता है? 2
9. मानवशास्त्र और विश्वबधुत्त्व के बीच क्या अंतर है। 2
10. उदाहरणों की मदद से विकासवादी और क्रांतिकारी परिवर्तन के बीच अंतर बताएं। 2

11. पूंजीवाद में प्रतिस्पर्धा की विचारधारा को एक प्रमुख विचारधारा के रूप में क्यों माना जाता है? 2

12. एमिले दुर्खाइम द्वारा दी गई सामाजिक 'एकता' की व्याख्या करें। 2

13. समाजशास्त्र के विकास के लिए पुनर्जागरण काल 'ज्ञान' क्यों महत्वपूर्ण है? 2

14. सरंचनात्मक परिवर्तन से आपका क्या अर्थ है? एक उदाहरण दें। 2

15. बौधिक विचारों को समझाएं जो समाजशास्त्र के निर्माण में काम आये? 4

16. एक आधुनिक राज्य को परिभाषित करें। एक आधुनिक राज्य की मूख्य विशेषताओं की व्याख्या करें। 4

अथवा

समझाएं कि पूर्व–औद्योगिक समाज तक कार्य का परिवर्तन कैसे हुआ?

17. दो–तरफा प्रक्रिया का वर्णन हें जिसके द्वारा ''सामाजिक वातावरण'' उभरते है? 4

18. नौकरशाही परिभाषित करें। नौकरशाही प्राधिकरण की मुख्य विशेषता की व्याख्या करें। 4

19. जनजातीय संस्कृति पर संरक्षणविदों और राश्ट्रवादियों की बहस पर चर्चा करें। 4

20. भारत में संयुक्त परिवार प्रणाली के विघटन के कारणों का उल्लेख करे। 4

21. सँस्कृति के विभिन्न आयामों को समझाएं। 4

22. कार्ल मार्क्स के वर्ग–संघर्ष के सिद्धांत पर चर्चा करे। 6

23. सामाजिक अनुसांधन के विषय के रूप में गांव के लिए और उसके खिलाफ दिए गए तर्कों का विश्लेषण करें। 6

24 'जोखिम आधारित समाज' क्या है? ''जिन संसाधनों का हम उपयोग करते है, या उनका दुरूपयोग आज आने वाली पीढियों को उनके हाथों में कुछ भी नहीं छोड़ता है''। सतत विकास के समबंध में समझौता है।?

6

25. निम्नलिखित गंद्याश पढ़े और नीचे दिए गए सवालों के जबाब दें।6

राज्य की राजधानी के पर्यावरण में और गिरावट आई है। प्रदूषण की स्थिति का वर्णन करने वाले लगभग सभी परैामीटर, सल्फर–डाई–ऑक्साइड की एकाग्रता, नाइट्रोजन ऑक्साइड, निलंबित कण पदार्थ (एसपीएम) ने पिछले कुछ वर्षों में वृद्धि दर्ज की है। यहां तक कि शोर प्रदूषण के स्तर में भी वृद्धि हुई है। गुरूवार को यहाँ जारी औद्योगिक विष विज्ञान अनुसंधन केंद्र की पर्यावरण स्थिति रिपोर्ट के मुताबिक चारबाग और अमीनबाद को छोड़कर सभी प्रमुख वाणिज्यिक क्षेत्रों में प्रदुषण भार में वृद्धि हुई है।

(क) उन क्षेत्रों का नाम दें जहां कम या कोई प्रदूषण नहीं है।

(ख) पर्यावरणीय में गिरावट के कारण क्या है? इस गिरावट को कम करने के लिए दो चरणों का सुझाव दें।

समाजशास्त्र - XI

अभ्यास प्रश्न पत्र

समय–3घंटे **M.M-80**

(i) प्रश्न पत्र के चार खण्ड हैं।

(ii) प्रश्नों को कुल संख्या 38 हैं।

(iii) सभी प्रश्न अनिवार्य है।

(iv) प्रश्न संख्या 1–20 तक वस्तुनिष्ठ प्रश्न है। प्रत्येक प्रश्न 1 अंक का है।

(v) प्रश्न संख्या 21–29 तक लघु उत्तर वाले प्रश्न हैं। प्रत्येक प्रश्न के 2 अंक है। इनमें से

प्रत्येक प्रश्न का उत्तर 30 शब्दो से अधिक का नही होना चाहिये।

(vi) प्रश्न संख्या 30–35 तक दीर्घ उत्तर वाले प्रश्न है। प्रत्येक प्रश्न के 4 अंक हैं। प्रत्येक

प्रश्न का उत्तर 80 शब्दों से आधिक नही होना चाहिये।

(vii) प्रश्न संख्या 36–38 तक अति दीर्घ उत्तर वाले प्रष्न है। प्रत्तेक प्रष्न 6 अंक का है प्रत्येक प्रश्न का उत्तर 200 शब्दों से अधिक नही होना चाहिये। प्रश्न अनुच्छेद के आधार पर देना है।

SECTION-A

रिक्त स्थानों की पूर्ति करें :

1. समाज में नियमो रीति रिवाजो प्रणालियो और अन्य तरीको द्वारा स्थपित समाज व्यवस्था को .....कहते है।
2. .....एक मानसिक दशा है जो पूर्ण रूप से आधुनिक समाजो मे पाया जाता है।
3. जब दो अलग अलग संस्कृतियो के लोग एक दूसरे के संपर्क मे आते है और दूसरे को सँस्कृति को ग्रहण करते है उसे .....कहते है।

4. जाति का निर्धारण.....द्वारा किया जाता है जबकि वर्ग का निर्धारण.....द्वारा किया जाता है।

5. जब समाज में चल रही संस्थाओ और नियमों में परिवर्तन आना शुरू हो जाये तो उसे .....परिवर्तन कहते है।

6. प्राचीन काल मे वस्तुओ और सेवाओ का लेन देन होता है जिसे ..... कहा जाता था।

7. समाजीकरण के अभिकरण हैं:

(क) मीडिया (ख) परिवार

(ग) स्कूल (घ) सभी

9. एक ऐसी अर्थव्यवस्था जहाँ निजी पूजीवादी उदयम और राज्य या सार्वजनिक स्वामित्व वाले उद्यम दोनो मोजूद होते है।

(क) निजी अर्थव्यवस्था (ख) सार्वजनिक अर्थव्यवस्था

(ग) मिश्रित अर्थव्यवस्था (घ) विकेन्द्रित अर्थव्यवस्था

10. द्वितियक समूह की विषेषता है

(क) अप्रत्यक्ष सम्बन्ध (ख) व्यक्तिगत सम्बन्ध

(ग) निजी सम्बन्ध (घ) इनमें से कोई नहीं

11. कार्ल मार्क्स के अनुसार संसार में दो वर्ग है

(क) अमीर गरीब (ख) पूंजीपती और श्रमिक वर्ग

(ग) उत्पादक और उपभोक्ता (घ) इनमें से कोई नही

12. सयुक्त परिवार टूट रहे है।

(क) औधोगिकरण से (ख) आधुनिकीकरण से

(ग) नगरीकरण से (घ) उपरोक्त सभी

कथन सही करे :

13. जन्म पर आधारित स्तरीकरण मे योग्यता आवश्यक है।

14. सावयवी एकता कम जन संख्या वाले समाजो में पाई जाती है जहाँ श्रम विभाजन नही होता है।

15 अलगाव एक सुदृढ़ एंव व्यवस्थित पद्धति है जिससे अधिकारियो के काम का बटवारा सरकारी कर्तव्यो के रूप मे होता है।

16 रक्त सबंधी नाते दारी के उदारहण है देवर, भाभी सास बहू दामाद आदि।

17 मैक्स वेबर ने श्रम विभाजन आत्महत्या की भाति धर्म को भी एक सामाजिक तथ्य माना है।

18 एकता के अभाव मे तथा विचारो के मतभेद के कारण सहयोग पनपता है।

19 भौतिक संस्कृति के अन्तगर्त ज्ञान विश्वास धर्म, आदर्श मूल्य आते है इनका स्वरूप अमूर्त होता है।

20 असहभागी प्रेक्षण से अनुसंधानकर्त्ता को समस्या का सूक्ष्म अध्ययन करने मे मदद मिलती है तथा प्रत्यक्ष अध्ययन करने का अवसर प्रदान करता है।

SECTION-B

21. समाजशास्त्र के अध्ययन को आवश्यकता क्यो होती है। कोई दो कारण बताओ?

22. सामाजिक स्तरीकरण को परिभाषित करें। सामाजिक स्तरीकरण के कोई दो आधार बताइए।

23. प्रस्थिति का कार्यात्मक पक्ष क्या है? उदाहरण द्वारा समझाईये

24 मिश्रित अर्थव्यवस्था से आप क्या समझते हो

25 सामाजिक विचलन से आपका क्या तात्पर्य है समझाइये?

26. असहभागी अवलोकन का अर्थ बताओं?

अथवा

नगरीकरण के कोई दो प्रभाव बताओ?

27 शक्ति और सत्ता में अन्तर बताओ?

अथवा

पूजीवाद से आप क्या समझते है चर्चा करे।

28. समव्यस्क समूह किसे कहते है।

अथवा

ग्लोबल वार्मिग से होने वाली दो हानियां बताओ।

29 कार्ल मार्क्स के अनुसार समाजवाद का क्या अर्थ है?

SECTION-C

30 अपराध को परिभाषित करो समाज मे हुए युवा अपराध के मुख्य कारणों पर प्रकाश डाले।

31. सर्वेक्षण पद्धति के मुख्य लाभ क्या है? वर्णन करो।

32. धर्म क्या है? सभी धर्मो को समान विषेषताएँ क्या है वर्णन करो?

अथवा

परिवार के बदलते स्वरूपो की व्याख्या करे।

33. समाजीकरण की प्रक्रिया एक जरूरी प्रक्रिया है? वर्णन करो?

34. प्रतिस्पर्धा के बिना समाज की कल्पना करें। क्या यह सम्भव है? व्याख्या करें।

35. समाज में प्रचलित सामाजिक नियंत्रण के प्रकारो में बुनियादी अंतरों को स्पष्ट करें।

SECTION-D

36. पर्यावरण से सम्बन्धित कुछ विवादस्पद मुद्दे जिनके बारे मे आपने पढ़ा तथा सुना हो

उनका वर्णन करो?

37 संघर्ष क्या है? संघर्ष कितने प्रकार का होता है । उदारहण देते हुए वर्णन करो। क्या संघर्ष को कम किया जा सकता है? कैसे?

अथवा

मैक्स वेबर द्वारा दिये गये सत्ता के प्रकारो का वर्णन करो। वेबर के अनुसार आदर्श प्रारूप क्या है? समझाये।

38. निम्नलिखित अनुच्छेद को पढ़े तथा निम्नलिखित प्रश्नो के उत्तर दो। पूँजीवादी समाज को कई स्तरो पर चलने वाले अलगाँव की एक सतत प्रक्रिया द्वारा चिंह्ति किया गया था। सबसे पहले आधुनिक पूंजीवादी समाज वह है जहाँ मनुष्य पहले से कहीं अधिक प्रकृति से अलग हो जाते है, दूसरा मनुष्य एक दूसरे से अलग हो जाते है तीसरा काम करने वाले लोगो का बड़ा हिस्सा अपने श्रम के फल से अलग हो जाता है क्यों कि श्रमिको के पास उनके द्वारा उत्पादित उत्पादो का स्वामित्व नही है। इसके अलावा श्रमिको के पास कार्य प्रक्रिया पर कोई नियत्रण नही है उन दिनो के विपरित जब कुशल कारीगर ने अपने श्रम को निंयत्रित किया, आज करखानो में कार्य कर्ता के कार्य दिवस की सामग्री प्रबन्धन ने द्वारा तय की जातीी है। आखिर कार इन सभी अलगावों के संयुक्त रूप परिणाम के रूप मे मनुष्य भी खुद से अलग हो जाते है। और अपने जीवन को एक प्रणाली में सार्थक बनाने के लिये संघर्ष करते है

1. सघर्ष को परिभाषित करें? 2
2. श्रमिको द्वारा सामना किये गये अलगाव के विभिन्न स्तरो को बताये। 4

समाजशास्त्र - XI

अभ्यास प्रश्न पत्र

समय–3घंटे **M.M-80**

(i) प्रश्न पत्र के चार खण्ड हैं।

(ii) प्रश्नों को कुल संख्या 38 हैं।

(iii) सभी प्रश्न अनिवार्य है।

(iv) प्रश्न संख्या 1–20 तक वस्तुनिष्ठ प्रश्न है। प्रत्येक प्रश्न 1 अंक का है।

(v) प्रश्न संख्या 21–29 तक लघु उत्तर वाले प्रश्न हैं। प्रत्येक प्रश्न के 2 अंक है। इनमें से

प्रत्येक प्रश्न का उत्तर 30 शब्दो से अधिक का नही होना चाहिये।

(vi) प्रश्न संख्या 30–35 तक दीर्घ उत्तर वाले प्रश्न है। प्रत्येक प्रश्न के 4 अंक हैं। प्रत्येक

प्रश्न का उत्तर 80 शब्दों से आधिक नही होना चाहिये।

(vii) प्रश्न संख्या 36–38 तक अति दीर्घ उत्तर वाले प्रश्न है। प्रत्येक प्रश्न 6 अंक का है प्रत्येक प्रश्न का उत्तर 200 शब्दों से अधिक नही होना चाहिये। प्रश्न अनुच्छेद के आधार पर देना है।

SECTION-A

1. .....बाजार विनियम पर आधारित एक आर्थिक प्रणाली है।
2. जाति एक बंद स्तरीकरण है जबकी .....एक खुला स्तरीकरण है।
3. नौकरशाही की अवधारणा.....समाजशास्त्री ने दी।
4. निम्न जाति के लडके का उच्च जाति की कन्या से विवाह करना ..... कहलाता है।
5. .....की मजबूत जड़े भूतकाल तथा मिथको द्वारा कहकर और सुनकर जीवित रखा जाता हैं।

6. पौधों की जलवायु को अधिक ठंड से बचाने के लिये ढका हुआ ढाचां.....
.कहलाता है।

7 सामाजिक प्रस्थिति को दो भागों में बाटा गया है :

(क) जाति और वर्ग

(ख) प्रदत्त और अर्जित

(ग) सघर्ष और सहयोग

(घ) यांत्रिक और सावयवी

8. उदविकास सिद्धान्त किसने दिया।

(क) कार्ल मार्क्स

(ख) मैक्स वेबर

(ग) एम एन श्री निवास

(घ) डार्विन

9 सघष का तात्पर्य

(क) दूसरों का हित करना

(ख) प्रेम और सहयोग की भावना

(ग) हितों मे टकराव

(घ) ईर्ष्या द्वेष की भावना

10 तीन क्रांतियों ने समाजशास्त्र के उदभव का मार्ग प्रशस्त किया वे थी

(क) वैज्ञानिक क्रांति अमेरिकी, फ्रासिसी क्रान्ति

(ख) अमेरिकी क्रांति, वैज्ञानिक क्रांति, औद्योगिक क्रांति

(ग) फ्रासिसी क्रान्ति, औद्योगिक क्रांति, ज्ञार्नोदय

(घ) इनमे से कोई नहीं

11 प्राथमिक समूह की विशेषता है

(क) आमने सामने के सम्बन्ध

(ख) अप्रत्यक्ष सम्बन्ध

(ग) प्रत्यक्ष सम्बन्ध

(घ) सम्बन्ध अस्थायी

12. परिवर्तन जब धीरे धीरे सरल से जटिल की ओर होता है उसे कहते है।

(क) क्रांतिकारी परिवर्तन

(ख) उदविकास

(ग) तकनीकी परिवर्तन

(घ) सांस्कृतिक परिवर्तन

कथन सही लिखे :

13 वर्ग पर आधारित स्तरीकरण जन्म से निर्धारित होता है।

14 द्वितियक समूह आकार में अपेक्षाकृत छोटे होते हैं। जिनमें व्यक्तिगत सम्बन्धो की विशेषता होती है।

15 निरीक्षण सामाजिक अनुसंधान की वह पद्धति है जिसके द्वारा व्यक्ति वार्तालाप द्वारा सूचनादाता के तथ्यों का संकलन करता है।

16 यात्रिक एकता अधिक जनसंख्या वाले समाजो में जाती है जहाँ श्रम विभाजन अत्यन्त

जटिल होता है।

17. विश्व के औसत तापमान में होने वाली वृद्धि को हरित ग्रह प्रभाव कहते है।

18. कार्ल मार्क्स को समाजशास्त्र का जनक माना जाता है।

19. प्रदत्त प्रस्थिति व्यक्ति अपनी योग्यता कार्यकुशलता बुद्धि, प्रयत्न व प्रतिस्पर्धा के द्वारा प्राप्त करता है।

20. मालाबार के नायर लोगो में पितृवंशीय परिवार पाये जाते है।

उत्तर :

1. पूँजीवाद

2. वर्ग

3. मैक्स वेबर

4 प्रतिलोम विवाह

5. परंपरा

6. हरित ग्रह

7. प्रदत्त और अर्जित

8. चार्ल्स डार्विन

9. हितो मे टकराव

10. अमेरिकी क्रांति, वैज्ञानिक क्रांति, औद्योगिक क्रांति

11. प्रत्यक्ष सम्बन्ध

12. उद्‌विकास

13. योग्यता, कार्यकुशलता

14. प्राथमिक समूह

15. साक्षात्कार

16. सावयवी एकता

17. ग्लोबल वार्मिग

18 अगस्त कोंत

19 अर्जित प्रस्थिाति

20 मातृवंशीय परिवार

SECTION-B

21. समाजशास्त्र की किन्ही दो विशेषताओं के बारे में लिखो।

उ0 1. समाज सामाजिक संबधों पर आधारित है।

2. भिन्नताओ और समानताओ पर आधारित है।

3. समाज अमूर्त है

4. आत्मनिर्भरता (कोई दो)

22. निकटाभिगमन निषेध क्या है। उदाहरण दो

उ० प्राथमिक समूह के सदस्यो में जिनके साथ हमारे रक्त सम्बन्ध होते है उनके साथ विवाह नहीं हो सकता।

जैसे भाई–बहन, माँ–बेटा, पुत्री–पिता आदि।

23. संस्कृति के मुख्य तत्व बताइये?

उ० 1. प्रथाएँ विश्वास परम्पराएँ ज्ञान संस्कार आदि संस्कृति के मुख्य तत्व है।

2. समाज के सदस्यों की आदतें और क्षमताएँ भी सँस्कृति के मुख्य तत्व है।

24. साँस्कृतिक विलंबना किसे कहते है।

उ० जब भौतिक संस्कृति मे तेजी से परिवर्तन आते है परन्तु अभौतिक संस्कृति में परिवर्तन नही आता। जिससे अभौतिक सँस्कृति पिछड़ जाती है इसे साँस्कृतिक विलंबना कहते है।

25. करिश्माई सत्ता को उदाहरण सहित परिभाषित करो?

उ० करिश्माई का अर्थ है किसी व्यक्ति विषेष के अन्दर कुछ अदभुत एवं विलक्षण गुणों की मौजूदगी। जिन व्यक्तियो मे कोई अदभुत करामाती या चमत्कारी शक्ति होती है वे इसप्रकार की सत्ता के वास्तविक अधिकारी होते है। उनमे असाधारण प्रतिभा नेतृत्व के जादुई गुण तथा निर्णय लेने की क्षमता होती है

जैसे स्वामी विवेकानन्द, अब्राहम लिकंन, महात्मा गाँधी, हिटलर आदि कुछ विश्व प्रसिद्ध करिश्माई नेता रहे है।

26 डी० पी० मुखर्जी ने जीवन्त परम्परा को कैसे परिभाषित किया है?

उ० डी० पी० मुखर्जी के अनुसार जीवन्त परम्परा जो केवल भूतकाल तक हो सीमित नही है बाल्कि वर्तमान के अनुसार भी ढाला है। साथ साथ नई

चीजो को ग्रहण करती है। अतः एक जीवन्त परंपरा प्राचीन तथा आधुनिक तत्वो का मिश्रण है। उदाहरण के लिये हम अपने आसपास जानने का प्रयास करते है कि किन्ही विशेष क्षेत्रों में कौन सी चीजें परिवर्तित हो चुकी है तथा कौन सी ऐसी चीजें है जो आज भी परिवर्तित नही हुई है।

अथवा

प्रजातीय श्रेष्ठता क्या होती है? उदारहण दो

उ० प्रजातीय श्रेष्ठता किसी व्यक्ति में वह भावना होती है जिसमे एक प्रजाति का व्यक्ति अपने आपको दूसरी प्रजातियों के व्यक्तियों से श्रेठ अथवा उच्च समझते है। इस श्रेष्ठता की भावना के फल स्वरूप एक प्रजाति दूसरी प्रजाति से नफरत करती है यह भावना जन्मजात नही होती है परन्तु व्यक्ति समाज मे रह कर सीखता है। जैसे गोरे लोग अपने आपको पीले अथवा काले लोगों से श्रेष्ठ समझते है

27 पारिस्थितिकी से आप क्या समझते है।

उ० परिस्थिति को शब्द का अर्थ एक ऐसे जाल से है जहाँ भौतिक और जैविक व्यवस्थाएँ

तथा प्रक्रियाएँ घटित होती है तथा मनुष्य भी इसका अग होता है। नदियाँ पर्वत, सागर मैदान जीवजन्तु सभी पारिस्थिति की के अंग है।

अथवा

जल प्रदूषण किन कारणों से होता है?

उ० नदियो के पानी में कूड़ा करकट

खेतो के रासायनिक उर्वरक

मूर्तियो का प्रवाह

उद्योगो के व्यर्थ पदार्थ आदि

28. सामाजिक नियन्त्रण क्यों आवश्यक है?

उ० लोगो को सुरक्षा प्रदान करता है जिससे समाज में शांति बनी रहती है।

सामाजिक व्यवस्था में सन्तुलन रहता है और समाज मे अराजकता नही होती।

अथवा

अर्जित प्रस्थिति से क्या अभिप्राय है? इसके दो आधार बताओ।

उ० योग्यता, शिक्षा, व्यक्तिगत गुणों से प्राप्त आधार शिक्षा धन दौलत

29. परिवार किस तरह लिगंवादी है?

उ० आज भी यही विश्वास है कि लड़का वृद्धावस्था में माता पिता की सहायता करेगा और लड़की विवाह के बाद दूसरे घर चली जायेगी।

अभिभावकों के मरने पर चिता को अग्नि पुत्र ही देगा।

SECTION-C

30. समाजशास्त्र में हम विशिष्ट शब्दावली और अवधारणाओं के प्रयोग की आवश्यकता क्यों होती है?

उ० 1. समाजशास्त्र एक विशिष्ट विज्ञान है।

2. यह तर्क सगंत विज्ञान है।

3. पूर्ण रूप से समझने के लिये हमें शब्दावली तथा अब धारणाओ की आवश्यकता पड़ती है (व्याख्या करे)

31. प्राथमिक समूह तथा द्वितियक समूह में अन्तर बताओं (कोई चार)

उ० प्राथमिक समूह घनिष्ठ सम्बन्ध, सीमित आकार सहयोग त्याग आदर प्यार की भावना सामूहिक स्थिरता द्वितियक समूह – अप्रत्यक्ष सम्बन्ध, विस्तृत आकार औपचारिक सम्बन्ध , निजीहित सर्वोपरि।

अथवा

औपचारिक शिक्षा तथा अनौपचारिक शिक्षा में कोई चार अन्तर बताओ?

1. औपचारिक शिक्षा :

    1. संस्थागत (स्कूल कालेज)

2. निश्चित पाठयक्रम

3. स्पष्ट उद्देश्य

4. निश्चित सीमा

2. अनौपचारिक शिक्षा :

1. संस्थागत नही (अनुभवों से)

2. कोई पाठयक्रम नही

3. स्पष्ट उद्देश्य नहीं

4. तमाम उम्र चलती है

32. ग्रामीण क्षेत्र में सामाजिक व्यवस्था के सामने क्या चुनौतियां है?

उ० 1. कृषि, 2. सयुक्त परिवार, 3. जनसंख्या का कम धनत्व, 4. सरल जीवन, 5. हम की भावना, 6. सजातीयता, 7. प्राथमिक सम्बन्ध व्याख्या (कोई चार)

33. धर्म में आधुनिक प्रवृतियों की व्याख्या कीजिये?

उ० 1. धर्म में रूढ़िवादी तत्वों का पतन

2. धर्म का व्यवसायीकरण

3. धार्मिक संस्कारों में कमी

4. धर्म और राजनीति (व्याख्या सहित)

34 पर्यावरण के सरंक्षण की क्यों आवश्यकता है?

उ० स्वस्थ जीवन जीना मुश्किल संसाधनों की कमी भावी पीढ़ी के लिये औसत आयु में

कमी संसाधनो को प्राप्त करने के लिये होड लगेगी (व्याख्या करें)

अथवा

वायु प्रदूषण को हानियों का वर्णन करो?

ग्लोबल वार्मिग, श्वास लेने में तकलीफ, अम्लीय वर्षा का होना, धुएँ वाली धुंध बनती है। (व्याख्या करे)

35. सहभागी प्रेक्षण के लाभ तथा हानियो का वर्णन करे। (कोई 2–2)

उ० लाभ :– सहभागी अवलोकन से अनुसंधानकर्त्ता को समस्या का सूक्ष्म अध्ययन करने में मदद मिलती है।

सहभागी प्रेक्षण प्रत्यक्ष अध्ययन का अवसर प्रदान करता है हानी सहभागी निरिक्षण एक खर्चीली प्रणाली है।

सहभागी अवलोकन में अध्ययन की गति धीरे धीरे आगे बढती है। (व्याख्या करे)

SECTION-D

36. आपके अनुसार आपको पीढ़ी केलिये समाजीकरण का सबसे प्रभावी अभिकरण क्या है। यह पहले अलग कैसे था, आप इस बारे में क्या सोचते है।

उ० हमारे अनुसार आज की पीढ़ी के लिये समाजीकरण का सबसे प्रभावी अभिकरण स्कूल या विद्यालय है व्याख्या करे

प्राचीन समय में विद्याालय नही गुरूकुल हुआ करते थे जहाँ व्यक्ति को धार्मिक शिक्षा दी जाती थी निश्चित पाठय्क्रम नहीं होता था

गुरूकुल में ही रहना पड़ता था आदि अपने शब्दो में व्याख्या करे।

37. जी एस घुर्रे के अनुसार जाति की विशेषताओं का भी वर्णन करे।

1. जाति जन्म पर आधारित
2. खण्डात्मक विभाजन
3. खानपान तथा रहन सहन पर प्रतिबन्ध
4. विवाह सम्बन्धी प्रतिबन्ध
5. संस्तरण एवं पदानुक्रम (व्याख्या सहित)

अथवा

नौकरी शाही को अवधारणा किसने दी? नौकरशाही की विशेषताओं की व्याख्या करे?

उ० नौकर शाही की अवधारणा मैक्स वेबर ने दी

विशेषताएँ :

1. अधिकारियों के कार्य
2. पदों का सोपानिक क्रम
3. लिखित दस्तावेजो की विश्वसनीयता
4. कार्यालय का प्रबधन
5. कार्यालयी आचरण (व्याख्या सहित)

38. निम्नलिखित अनुच्छेद को पढ़िये और पूछे गये प्रश्नों के उत्तर दें।

परिवार हमारे जीवन का अभिन्न अंग हैं। हमारे लिये इसका अस्तित्व स्वतः एकीकृत है। हम यह मानकर चलते है कि अन्य लोगो के परिवार भी हमारे परिवार की तरह होगें। तथापि हमने देखा है कि परिवार की सरंचनाए भिन्न भिन्न होती है। यह बदलती भी रहती है। यह परिवर्तन कभी कभी तो आकस्मिक तौर पर होते रहते है जब कोई लड़ाई छिड़ जाती है अथवा लोग काम की तलाश में अन्यत्र जा बसते है या कभी कभी ये परिवर्तन किसी विशेष प्रयोजन के लिये किये जाते है। जैसे कि जब युवा लोग बुर्जुगो द्वारा उनके लिये जीवन साथी का चुनाव करने की बजाय स्वयं ही अपने जीवन साथी का चुनाव कर लेते है।

1. परिवार मे होने वाले आकस्मिक परिवर्तन के उदारहण दीजीयें।
2. कभी कभी परिवर्तन विशेष प्रयोजन के लिए किये जाते हे उदाहरण सहित व्याख्या करें।

समाजशास्त्र - XI

अभ्यास प्रश्न पत्र

समय–3घंटे **M.M-80**

(i) प्रश्न पत्र के चार खण्ड हैं।

(ii) प्रश्नों को कुल संख्या 38 हैं।

(iii) सभी प्रश्न अनिवार्य है।

(iv) प्रश्न संख्या 1–20 तक वस्तुनिष्ठ प्रश्न है। प्रत्येक प्रश्न 1 अंक का है।

(v) प्रश्न संख्या 21–29 तक लघु उत्तर वाले प्रश्न हैं। प्रत्येक प्रश्न के 2 अंक है। इनमें से

प्रत्येक प्रश्न का उत्तर 30 शब्दो से अधिक का नही होना चाहिये।

(vi) प्रश्न संख्या 30–35 तक दीर्घ उत्तर वाले प्रश्न है। प्रत्येक प्रश्न के 4 अंक हैं। प्रत्येक

प्रश्न का उत्तर 80 शब्दों से अधिक नही होना चाहिये।

(vii) प्रश्न संख्या 36–38 तक अति दीर्घ उत्तर वाले प्रश्न है। प्रत्येक प्रश्न 6 अंक का है प्रत्येक प्रश्न का उत्तर 200 शब्दों से अधिक नही होना चाहिये। प्रश्न अनुच्छेद के आधार पर देना है।

SECTION-A

1. समाजीकरण की प्राथमिक संस्था की पहचान करें

(क) मीडिया

(ख) परिवार

(ग) स्कूल

(घ) कार्यस्थल

2. एक सामाजिक समूह की विशेषता है।

(क) अपनेपन की भावना का अभाव

(ख) आमने सामने के सम्बन्ध का अभाव

(ग) अवैयक्तिक सम्बन्ध

(घ) बातचीत का स्थिर पैटर्न

3. सामाजिक नियंत्रण समाज ..... में लाता है

(क) सामाजिक व्यवस्था

(ख) विचलन

(ग) अवज्ञा

(घ) हिंसा

4. कौन सा नियम राज्य से अपने अधिकार प्राप्त करता है।

(क) आचार

(ख) कानून

(ग) मानदंड

(घ) लोक रीतियां

5. "Sociological imagination" के बारे में बात करने वाले पहले विद्वान..... ....थे।

(क) मिल्स

(क) मैक्स वेबर

(क) ए. एम. शाह

(क) एम. एन. श्रीनिवास

खाली स्थान को भरें :

6. समाजशास्त्र शब्द अगस्ट काम्टे द्वारा.....वर्ष में दिया गया।

7. .....ने "Caste and race In India" पुस्तक लिखी है।

अथवा

एक कल्याणकारी राज्य.....बाजार को ख़त्म करने की मांग नहीं करता है।

8. सामाजिक तथ्य.....है जो लोगों के जुड़ाव से निकलते हैं।

अथवा

आधुनिक उद्योग की नीव औद्योगिक क्रांति द्वारा रखी गई थी जो सबसे पहले..... में शुरू हुई थी।

9. ग्रीन हाउस को एक ..... भी कहा जाता है।

10. चिपको आंदोलन .....राज्य में हुआ था।

सही गलत पहचानों :

11. जाति व्यवसाय चुनने के विकल्प को प्रतिबंध्ति करती है।

12. पश्चिमी अनुशासन के रूप में समाजशास्त्र का उदय अफ्रीका में हुआ था।

13. एक आधुनिक समाज विदेशों से सांस्कृतिक मतभेदों और साँस्कृतिक प्रभाव की. सराहना नहीं करता है।

14. एक मात्रात्मक शोध में प्रश्नावली विधि शामिल है।

15. उपसँस्कृति समूह शैली, स्वाद और ..... द्वारा चिन्हित है।

कथन ठीक करें

16. साक्षात्कार विधि का बहुत नुक्सान इसके प्रारूप का लचीलापन है।

17. समाजशास्त्र राज्य का अध्ययन है जबकि राजनीति विज्ञान एक विशेष विज्ञान है

18. छात्रों का एक वर्ग अर्ध समूह का एक उदाहरण है।

19. लघु परम्परा शहरी समाज में पाई जाती है।

20. ऐतिहासिक भौतिकवाद की अवधारणा मैक्स वेबर ने दी है।

SECTION-B

21. परंपरा से आप क्या समझते हैं ?

22. श्रम विभाजन से क्या तात्पर्य है?

23. पूंजीवाद का अर्थ स्पष्ट कीजिए ?

अथवा

नगरीकरण के दो प्रभाव बताइए।

24. विवाह एक सामाजिक संस्था है, चर्चा कीजिए।

25. सन्दर्भ समूह किसे कहते हैं ?

अथवा

भूमिका संघर्ष से आप क्या समझते हैं ?

26. सामाजिक प्रतिबन्ध परिभाषित करें ?

27. भारतीय गाँव पर लुई डयूमों के दृष्टिकोण क्या थे ?

अथवा

कल्याणकारी राज्य का क्या तात्पर्य है?

28. सँस्कृति के तीन आयाम बताइये।

29. कार्ल मार्क्स के सहयोग सम्बन्धी विचारों का उल्लेख कीजिये।

SECTION-C

30. सामाजिक स्तरीकरण क्या हैं? सामाजिक स्तरीकरण की मुख्य विशेषताएं बताइए।

अथवा

सामाजिक नियंत्रण से आप क्या समझते हैं? सामाजिक नियंत्रण के प्रकारों का उल्लेख कीजिये।

31. सामाजिक संस्थाओं को समझने के लिए प्रकार्यवादी और संघर्षात्मक दृष्टिकोणों की तुलना कीजिये।

अथवा

अलग अलग समाजों में पाए जाने वाले विभिन्न प्रकार के परिवारों का उल्लेख कीजिये।

32. भारतीय समाजशास्त्र के लिए ग्रामीण शोधकार्य क्यों महत्वपूर्ण थे?

33. सामाजिक परिवर्तन लाने में राजनीति की भूमिका का उल्लेख कीजिए।

34. यांत्रिक एकता और सावयवी एकता में अंतर स्पस्ट कीजिये। यांत्रिक एकता पर आधारित समाज की विशेषताएं बताइए।

35. जाति तथा प्रजाति पर हर्बर्ट रिजले और जी.एस. धूर्ये के मतों में अंतर स्पष्ट कीजिए।

SECTION-D

36. सत्ता कानून और प्रभुता से किस प्रकार संबंधित है? उदाहरण सहित सत्ता के प्रकारों को स्पष्ट कीजिए।

37. उदाहरण सहित प्रतियोगिता, सहयोग और संघर्ष के आपसी संबंध को समझाइए।

अथवा

विशेषाधिकार प्राप्त समूहों द्वारा उपयोग किये जाने वाले तीन प्रमुख लाभों का उल्लेख कीजिए।

38. निम्नलिति गद्यांश को पढ़े तथा प्रश्नों का उत्तर दें:

जब पुरुष नगरीय क्षेत्रों में चले जाते हैं तो महिलाओं को हल चलाना पड़ता है और खेतों के कार्य का प्रबंध करना पड़ता है। कई बार वे अपने परिवार की एकमात्र भरण पोषण करनेवाली बन जाती हैं। ऐसे परिवारों को महिला प्रधान घर कहा जाता है। विधवापन भी ऐसी पारिवारिक व्यवस्था एक कारण बन सकता है। यह स्थिति पुरुषों द्वारा दूसरा विवाह करने तथा अपने बच्चे, पत्नियों और अन्य आश्रितों को धन न भेजने के कारण भी बन सकती है। ऐसी स्थिति में महिलाओं को अपने परिवार की देखभाल सुनिश्चित करनी पड़ती है। दक्षिण पूर्व महाराष्ट्र और उत्तरी आंध्र प्रदेश में कोलम जनजाति समुदाय में महिला प्रधान घर एक स्वीकृत मानक हैं।

(अ) दो ऐसे राज्यों का नाम लिखिए जहां महिला प्रधान घर एक स्वीकृति मानक है।

(ब) उन कारणों का उल्लेख कीजिये जिन्होंने ग्रामीण क्षेत्रों में महिला प्रधान घरों को जन्म दिया।

समाजशास्त्र - XI

अभ्यास प्रश्न पत्र

समय–3घंटे **M.M-80**

(i) प्रश्न पत्र के चार खण्ड हैं।

(ii) प्रश्नों को कुल संख्या 38 हैं।

(iii) सभी प्रश्न अनिवार्य है।

(iv) प्रश्न संख्या 1–20 तक वस्तुनिष्ठ प्रश्न है। प्रत्येक प्रश्न 1 अंक का है।

(v) प्रश्न संख्या 21–29 तक लघु उत्तर वाले प्रश्न हैं। प्रत्येक प्रश्न के 2 अंक है। इनमें से
प्रत्येक प्रश्न का उत्तर 30 शब्दो से अधिक का नही होना चाहिये।

(vi) प्रश्न संख्या 30–35 तक दीर्ध उत्तर वाले प्रश्न है। प्रत्येक प्रश्न के 4 अंक हैं। प्रत्येक
प्रश्न का उत्तर 80 शब्दों से आधिक नही होना चाहिये।

(vii) प्रश्न संख्या 36–38 तक अति दीर्ध उत्तर वाले प्रश्न है। प्रत्येक प्रश्न 6 अंक का है प्रत्येक प्रश्न का उत्तर 200 शब्दों से अधिक नही होना चाहिये। प्रश्न अनुच्छेद के आधार पर देना है।

SECTION-A

1. 'चिपको आंदोलन' किस राज्य में हुआ –
   (क) पंजाब (ख) उत्तराखण्ड
   (ग) हरियाणा (घ) गुजरात

2. हितों में टकराव को कहते हैं –
   (क) एकता (ख) संघर्ष
   (ग) सहयोग (घ) इनमें से कोई नही

3. निम्नलिखित में से समाजशास्त्र की विषयवस्तु कौन–सी है।

(क) सामाजिक समूह (ख) सामाजिक संस्थाएँ

(ग) सामाजिक संबंध (घ) उपरोक्त सभी

4. अर्जित प्रस्थिति के कारण समाज में वृद्धि होती है।

(क) सामंजस्य (ख) सामतीकरण

(ग) सहयोग (घ) प्रतिस्पर्धा

5. 'दि प्रोटेस्टेंट एथिक्स एड दी स्पिरिट ऑफ कैपिटिलिज्म' नामक पुस्तक किसने लिखी है?

(क) आगस्ट कॉम्टे (ख) इमाईल दुखीर्म

(ग) मैक्स वैबर (घ) कार्ल मार्क्स

कथन सही है या गलत –

6. नगरीय समुदाय में व्यक्तिवादिता को प्रोत्साहन ही मिलता। (सही / गलत)

7. भौतिक और अभौतिक सँस्कृति के मिलन को साँस्कृतिक विलम्बना कहते हैं। (सही / गलत)

अथवा

'इंटरनेट चैटिंग' संस्कृति के मानकीय आयाम को दर्शाती है। (सही / गलत)

8. नाभिकीय विपदा यह दर्शाती है कि हम जोखिम भरे समाज में रहते है। (सही / गलत)

अथवा

सामाजिक परिस्थितिकी यह बताती है कि सामाजिक संबंध मुख्य रूप से संपत्ति तथा उत्पादन के संगठन पर्यावरण की सोच तथा प्रयास को आकार देते हैं। (सही / गलत)

9. प्रतिदर्श जितना छोटा होगा, उसके सही प्रतिनिधि होने के अवसर उतने ही अधिक होंगे। (सही / गलत)

10. औद्योगिक समाज में सावयती एकता पाई जाती है। (सही / गलत)

रिक्त स्थानों को भरें –

11. हबर्ट रिजले का तर्क था कि जाति का उद्‌भव ..... से हुआ होगा

12. जब परिवर्तन तुलनात्मक रूप से शीघ्र या अचानक होता है और पूर्व सत्ता को विस्थापित कर दिया जाता है तो उसे..... कहते हैं।

13. ..... से तात्पर्य बिना पक्षपात के तटस्थ होकर तथ्यों को जुटाना है।

14. सामाजिक नियंत्रण ..... या ..... हो सकता है।

15. कार्ल मार्क्स का मानना था कि .....का स्थान समाजवाद ले लेगा।

कथन को सही करके लिखिए –

16. भारत औद्योगिक क्रांति का केन्द्र था।

17. किसी दूसरे की सँस्कृतियाँ अपने सँस्कृति मूल्यों के आधर पर मूल्याकंन करने की प्रवृत्ति को विश्वनागरिकतावाद कहते हैं।

18. संघर्षवादी दृष्टिकोण के विचारक राज्य को समाज के सभी वर्गों के हितों का प्रतिनिधित्व करते हुए देखते हैं।

19. दुर्खाइम के अनुसार आधुनिक समाज का आधार यांत्रिक एकता पर आधारित था।

20. धूर्ये के अनुसार 'प्रजातीय शुद्धता' केवल उत्तर भारत में ही बची हुई थी क्योंकि वहाँ बहिर्विवाह निषिद्ध था।

SECTION-B

21. वे कोन से दो परिवर्तन है जो तकनीक तथा अर्थव्यवस्था द्वारा लाए गए हैं?

22. ग्लोबल वार्मिंग से आप का समझते हैं?

23. नौकरशाही सत्ता की दो विशिष्टताएँ बताएँ।

अथवा

श्रम विभाजन से आप क्या समझते हैं?

24. समष्टि समाजशास्त्र किसे कहते हैं?

25. सामाजिक नियंत्रण क्यों आवश्यक है?

अथवा

प्राथमिक समूह तथा द्वितियक समूह में अन्तर बताईये ।

SECTION-C

26. सहभागी प्रेक्षण से क्या तात्पर्य है?

27. भौतिक संस्कृति का अर्थ बताइये

अथवा

उपसँस्कृति से क्या अभिप्राय है।

28. सामाजिक परिवर्तन की दो विशेषताएँ बताइये।

29. बाध्य सहयोग की संकल्पना समझाइये।

30. समाजशास्त्र जैसे एक विज्ञान है। व्याख्या कीजिए। 4

31. समाजशास्त्र में हमें विशिष्ट शब्दावली और संकल्पनाओं के प्रयोग की आवश्यकता क्यों होती है? 4

अथवा

सामाजिक नियन्त्रण के काई चार कार्य लिखिये। 4

32. समाजीकरण की प्रक्रिया में परिवार की भूमिका की चर्चा कीजिए। 4

अथवा

सँस्कृति की विशेषताओं की व्याख्या कीजिए। 4

33. सामाजिक सर्वेक्षण के प्रमुख चरण क्या हैं? 4

34. अपराध सामाजिक विघटन का कारण है। कैसे? 4

35. औद्योगिक क्रांति किस प्रकार समाजशास्त्र के जन्म के लिये उत्तरदायी है? 4

अथवा

मार्क्स के अनुसार विभिन्न वर्गों में संघर्ष क्यों होता है?

SECTION-D

36. धर्म में आधुनिक प्रवृत्तियों की व्याख्या कीजिए। 4

37. 'जनजातियो समुदायों को कैसे जोड़ा जाए' इस विवाद के दोनों पक्षों के क्या तर्क थे? 4

अथवा

जी.एस. धूर्ये ने जाति की विशेषताओं का वर्णन किस प्रकार किया है। 4

38. निम्नलिखित अनुच्छेद को पढ़िए तथा प्रश्नों के उत्तर दीजिए –

प्रतिस्पर्धा की विचारधारा पूँजीवाद को सशक्त विचार धारा है। इस विचार धारा का तर्क है कि बाजार इस प्रकार से कार्य करता है कि अधिकतम कार्यकुशलता सुनिश्चित हो सके। उदाहरण के लिए, प्रतिस्पर्धा यह सुनिश्चित करती है कि सर्वाधिक कार्यकुशल फर्म बची रहे। प्रतिस्पर्धा यह सुनिश्चित करती है कि अधिकतम अंक पाने वाला छात्र अथवा बेहतरीन छात्र को प्रसिद्ध कालेजों में दाखिला मिल सके और फिर बेहतरीन रोजगार प्राप्त हो सके। उन सभी स्थितियों में 'बेहतरीन' होना सबसे बड़ा भौतिक पुरस्कार सुनिश्चित करता है।

(क) प्रतिस्पर्धा किसे कहते हैं?

(ख) प्रतिस्पर्धा और संघर्ष में अंतर बताइए।

MARKING SCHEME

SECTION-A

1. (ख) उत्तराखण्ड 1
2. (ख) संघर्ष 1
3. (घ) उपरोक्त सभी 1
4. (घ) प्रतिस्पर्धा 1
5. (ग) मैक्स वैबर 1
6. गलत 1
7. गलत अथवा गलत 1
8. सही अथवा सही 1
9. गलत 1
10. सही 1
11. प्रजाति 1
12. क्रान्ति । क्रान्तिकारी परिवर्तन 1
13. वस्तुनिष्ठता 1
14. औपचारिक, अनौपचारिक 1/2 + 1/2
15. पूँजीवाद 1
16. इंग्लैंड औद्योगिक क्रान्ति का केन्द्र था। 1
17. किसी दूसरे की संस्कृति या अपने साँस्कृतिक मूल्यों के आधार पर मूल्याकंन करने की प्रवृत्ति को नृजाति केन्द्रवाद कहते हैं। 1
18. प्रकार्यवादी दृष्टिकोण के विचारक राज्य को समाज के सभी वर्गों के हितों का प्रतिनिधित्व करते हुए, देखते है। 1
19. दुखाईम के अनुसार आधुनिक समाज का आधार सावयवी एकता पर आधारित था ।

20. धूर्ये के अनुसार, 'प्रजातिय शुद्धता' केवल उत्तर भारत में ही बची हुई थी क्योंकि वहाँ अतंर्विवाह निषिद्ध था ।

SECTION-B

21. मशीनी तकनीक ने औद्योगिक उत्पादन को बढ़ाया । कागज की छपाई की तकनीक ने कपड़ा उद्योग में क्रान्तिकारी परिवर्तन लाएग (कोई अन्य उदाहरण)

22. विश्व के औसत तापमान (ग्रीन हाऊस गैसों) में होने वाली वृद्धि 'ग्लोबल वार्मिंग' कहलाती है। यह एक विश्वव्यापी पर्यावरणीय समस्या है।

23. 1. अधिकारियों के प्रकार्यः कार्यालयी क्षेत्राधिकारों का संचालन, नियम व कानूनो अनुसार होता है।
    2. पदों का दस्तावेजों की सोपानिक क्रम होता है।
    3. लिखित दस्तावेजों की विश्वसनीयता (कोई 2 बिन्दु या अन्य संबंधित बिन्दु)

    अथवा

    श्रम विभाजन एक ऐसी व्यवस्था है जिसमें लोगों के कार्यों का बँटवारा उनकी योग्यता प्रतिभा, क्षमता आदि के आधार पर होता है। आधुनिक अर्थव्यवस्था में श्रम विभाजन का बहुत महत्व है।

24. समाजशास्त्र की यह शाखा जो बड़े समूहों, संगठनों अथवा सामाजिक व्यवस्थाओं का अध्ययन करती है, उसे समष्टि समाजशास्त्र कहते हैं।

25. सामाजिक नियन्त्रण व्यक्ति व समूह के व्यवहार नियमित करता है इस से समाज शान्ति बनी रहती है। लोगों के सुरक्षा प्रदान करता है। समाज में अराजकता नही फैलती ।

    (या कोई अन्य सम्बन्धित बिन्दु)

    अथवा

प्राथमिक समूह	द्वितियक समूह
• अपेक्षाकृत लघु समूह होता है	• अपेक्षाकृत इसका आकार बड़ा होता है।
• प्रत्यक्ष संबंध होते है	• अप्रत्यक्ष संबंध होते है।
• सामान्य उत्तरदायित्व	• उत्तरदायित्व सीमित

(कोई 2 बिन्दु या अन्य संबंधित बिंदु)

SECTION-C

26. सहभागी प्रेक्षण में अध्ययनकर्त्ता जाने वाले समूह में जाकर अध्ययन रहने लगता है। समूह के अन्य सदस्यों की भांति समूह के क्रियाकलापों में भाग लेते हुए अवलोकन करता है।

27. सँस्कृति का भौतिक पर औजारों तकनीको यंत्रो भवनों यातायात के साधनो, उत्पादन तथा संप्रेषण के उपकरणों से संदर्भित है। भौतिक सँस्कृति उत्पादन बढ़ाने व जीवन स्तर को ऊपर उठाने के लिए महत्वपूर्ण है।

अथवा

उपसँस्कृति से तात्पर्य एक बड़ी सँस्कृति के भीतर कुछ लोगों के समूह से है जैसे कामगार वर्ग के युवाओं की सँस्कृति उपसँस्कृति है। उपसँस्कृतियों की पहचान शैली, रुचि तथा संघ से होती है।

28. 1. सामाजिक परिवर्तन समाज की संरचना में परिवर्तन को इंगित करता है ।

2. सामाजिक परिवर्तन मूल्यों व मान्यताओं में परिवर्तन का परिणाम होते हैं।

(उपरोत्त कोई दो बिन्दु या अन्य संबंधित बिन्दु)

29. ऐसा सहयोग जो स्वैच्छिक न होकर किसी दबाव के अंतर्गत किया जाता है उसे बाध्य सहयोग कहा जाता है। बाध्य सहयोग का उदाहरण स्त्रियों

द्वारा पैतृक संपत्ति में अपने हिस्से का दावा न करना है भाईयों से संबंध खराब न हो जाएं इस दबाव में वे संपत्ति का हिस्सा नहीं लेती है।

30. 1. वैज्ञानिक विधियो का प्रयोग

2. क्यों व कैसे का अध्यन

3. पक्षपाज रहित ढंग से अध्यन

4. समाजशास्त्र में सिद्धांतो व नियमों का प्रयोग

31. समाजशास्त्र एक विशिष्ट विज्ञान है।

यह एक सगंत विज्ञान है। अतः इस विषय से संबंधित ज्ञान की आवश्यकता है शब्दावली विषयवस्तु से परिचित होती है जो अपने आप से अनेक अवधारणाओं को जन्म देती है। अतः पूर्णरुप से समझने के लिये शब्दावली की आश्यकता है।

अथवा

1. सामाजिक व्यवस्था को स्थापित रखना

2. व्यक्तियों को सामाजिक सुरक्षा प्रदान करना

3. समान में सहयोगात्मक दृष्टिकोण विकसित करना

4. समूह मे एकरुपता

32. परिवार समाजीकरण की प्रथम पाठशाला है।

बच्चे के माता पिता से सीखना

परिवार के अन्य सदस्यों से सीखना

परिवार में देश प्रेम, कर्त्तव्य पालन तथा परोपकार जैसे गुणों का विकास

अथवा

1. सँस्कृति एक सीखा हुआ व्यवहार है।

2. सोचने, अनुभव करने तथा विश्वास का एक तरीका है।

3. सामाजिक धरोहर है जो व्यक्ति अपने समूह से प्राप्त करता है

4. सीखी हुयी चीजों का एक भण्डार है।

5. एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी को हस्तांतरित

33. 1. सर्वेक्षण का आयोजन

2. तथ्यों का संकलन

3. तथ्यों का विश्लेषण

4. तथ्यों का प्रदर्शन

34. अपराध समान तथा सामाजिक व्यवस्था के विरुद्ध किया गया कार्य है। यह कानून विरोधी भी होता है। जब इस प्रकार के कार्य समान बार–बार लगातार हाते हैं तो सामाजिक व्यवस्था भिन्न–भिन्न हो जाती है। सारा सामाजिक ढाँचा हिल जाता है। जिसके कारण सामाजिक संबंध भी टूटने लग जाते है। अपराध या अपराधी बढ़ जाये तो सामाजिक व्यवस्था के पूरी तरह टूट जाने का खतरा उत्पन्न हो जाता है। इस तरह हम कह सकते हैं कि अपराध से समाज में विघटन आता है।

35. औद्योगिक क्रांति के कारण बहुत से अविष्कार हुऐ। उत्पादन घरों से निकल कर उद्योगों में चला गया। लोग ग्रामीण क्षेत्र को छोड़कर उद्योगों में कार्य करने के लिये शहरी क्षेत्रों की तरफ चले गए। अमीर लोग बड़े–बड़े भवनों में रहने लगे और मजदूर वर्ग ने गन्दी बस्तियों में रहना शुरू कर दिया। आधुनिक प्रशासनिक व्यवस्था के कारण राजतंत्र को लोक सम्बन्ध विषयों और कल्याणकारी कार्यों को जबाब देने के लिये बाध्य किया गया। ज्ञान की मांग ने सामाजिक विज्ञान और विशेषतया समाज शास्त्र जैसे नए विषयों के जन्म तथा विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।

अथवा

कार्लमार्क्स ने प्रत्येक समाज के दो वर्गों की विवेचना की है। मार्क्स के अनुसार प्रत्येक समाज में दो विरोधी वर्ग एक शोषण करने वाला तथा

दूसरा शोषित होने वाला वर्ग होते है। जिसमें संघर्ष होता है। इसी को मार्क्स वर्ग संघर्ष कहते है शोषक वर्ग पूँजीपति होता है। जिसके पास उत्पादन के साधन होते हैं। इसका शोषित वर्ग मज़दूर वर्ग होता है उसके पास अपनी श्रम को बेचने के अलावा कुछ नहीं होता है। पूँजीपति मज़दूरों का शोषण करते हैं और दोनों वर्गों में हमेशा संघर्ष चलता रहता है।

SECTION-D

36. 1. धर्म में रूढ़िवादी तत्वों का पतन

2. धर्म का व्यवसायीकरण

3. धर्म में राजनीति का प्रवेश

4. धर्म में मानवता की प्रकृति पनप रही है।

5. धार्मिक क्रियाओं एव अनुष्ठानों का संक्षिप्तीकरण हो रहा है।

6. अब धर्म व्यक्ति की सामाजिक स्थिति का निर्धारण नही करता।

(कोई अन्य उपयुक्त बिन्दु)

37. ब्रिटिश मानव विज्ञानियों के अनुसार जनजातीय समुदाय की अपनी विशेष संस्कृति है, जो हिन्दु मुख्य धारा से अलग है। राज्य का कर्त्तव्य है कि वे जनजातियों को संरक्षण दे। राष्ट्रवादी भारतीयों के अनुसार जनजातीय सरंक्षण के जो प्रयास हो रहे हैं, वे दिशाहीन है तथा गुमराह करने का प्रयास है। जनजातियों को विकास की आवश्यकता है। उन्होंने इस बात पर बल दिया कि भारतीय जनजातियों को 'पिछड़े हिन्दू समूह' के रूप में पहचाना जाए न कि एक भिन्न सांस्कृतिक समूह के रूप में।

अथवा

1. जन्म पर आधारित

2. विवाह के कठोर नियम

3. खान पान सम्बन्धी कठोर नियम

4. व्यवसाय सम्बन्धी कठोर नियम

5. खण्डीय विभाजन पर आधारित

6. सोपानिक विभाजन पर आधारित

38. (क) प्रतिस्पर्धा वह सामाजिक प्रक्रिया है जिसमें सीमित वस्तुओं के उपयोग या अधिकार के लिए व्यक्ति या समूह प्रयत्न करते है। 2

(ख) प्रतिस्पर्धा अवैयक्तिक होती है जबकि संघर्ष प्रायः व्यक्तिगत होता है प्रतिस्पर्धा विरोध का अहिंसक रूप हैं जबकि संघर्ष विरोध का हिंसक रूप है।

प्रतिस्पर्धा एक अचेतन प्रक्रिया है जबकि संघर्ष एक चेतन प्रक्रिया है। प्रतिस्पर्धा सामाजिक जीवन में निरंतर चलती रहती है जबकि संघर्ष विशेष परिस्थितियों में ही होती है।

Class : XI

SUBJECT : SOCIOLOGY

Time Allowed : 2 hours **Maximum Marks : 40**

समय : 2 घंटे **अधिकतम अंक – 40**

सामान्य निर्देशः

1. प्रश्नपत्र में कुल 14 प्रश्न हैं।
2. सभी प्रश्न अनिवार्य हैं।
3. खंड क – प्रश्न संख्या 1 से 2, एक अंक के स्रोत आधारित प्रश्न हैं। इन प्रश्नों का उत्तर 10 – 15 शब्दों अध्कि नहीं होना चाहिए।
4. खंड ख – प्रश्न संख्या 3 से 9 तक दो अंकों के प्रश्न है। ये प्रश्न अति लघु उत्तरीय प्रकार के है। इन प्रश्नों का उत्तर 30 शब्दों से अधिक नहीं होना चाहिए।
5. खंड ग – प्रश्न संख्या 10 से 12 चार अंकों के प्रश्न है। ये लघु उत्तरीय प्रकार के प्रश्न है। इन प्रश्नों का उत्तर 80 शब्दों से अधिक नहीं होना चाहिए।
6. खंड घ – प्रश्न 13 और 14 छह अंकों के प्रश्न है। ये दीर्घ उत्तरीय प्रकार के प्रश्न है। इन प्रश्नों का उत्तर 200 शब्दों से अधिक नहीं होना चाहिए।

खण्ड–क

SECTION-A

1. परम्परा शब्द का मूल अर्थ संचारित/प्रेषित करना है – डी. पी. ने इस ओर ध्यान आकर्षित किया। इसका समतुल्य संस्कृत शब्द परंपरा है, जोकि उत्तराधिकार अथवा आतिथ्य है, जिसका मूल आधार वही है जो इतिहास का है। अतः परंपरा की मजबूत जड़े भूतकाल में होती है और उन्हें कहानियों तथा मिथको द्वारा कहकर और सुनकर जीवित रखा जाता है।

स्रोत पढ़े और निम्नलिखित प्रश्न का उत्तर दे।

परम्परा की परिभाषा उदाहरण सहित लिखिए।

2. धूर्ये का यह विश्वास था कि रिजले के शोध प्रबंध में उच्च जातियों को आर्य तथा निम्न जातियों का अनार्य बताया गया है, यह व्यापक रूप से केवल उत्तरी भारत के लिए ही सही है। अन्य भागों में, अंतरसमूहों की भिन्नताएँ मानवमिति माप बहुत व्यापक अथवा व्यस्थित नहीं है।

स्रोत पढ़े और निम्नलिखित प्रश्न का उत्तर दें।

भारत के आदि निवासी किसको कहा गया है?

खण्ड–ख

SECTION-B

3. बच्चे अपने परिवारों की काम करने में मदद पाँच अथवा छह वर्ष की आयु से ही प्रारंभ कर देते थेः प्रारंभिक फैक्ट्री व्यवस्था बच्चों के श्रम पर आश्रित थी। यह उन्नीसवीं तथा पूर्व बीसवी शताब्दियों के दौरान बचपन जीवन की एक विशिष्ट अवस्था है – यह संकल्पना प्रभावी हुई। तब छोटे बच्चों का काम करना अविचारणीय हो गया तथा अनेक देशों ने बालश्रम को कानून द्वारा बंद कर दिया। उसी समय, अनिवार्य शिक्षा संबंधी विचारों का जन्म हुआ तथा इससे संबंधित कई कानून भी पास किए गए है।

निम्नलिखित अनुच्छेद को पढ़िए तथा प्रश्नों के उत्तर दीजिएः

(क) अनिवार्य शिक्षा से आपका क्या तात्पर्य है?

(ख) 'बालश्रम' की परिभाषा दीजिए।

4. जन–परिवहन के साधनों में परिवर्तन नगरों में सामाजिक परिवर्तन ला सकते है। समर्थ, कार्यकुशल तथा सुरिक्षत जन–परिवहन शहरी जीवन में भारी परिवर्तन लाते है तथा नगर की आर्थिक स्थिति को प्रभावित करने के साथ–ही–साथ उसके सामाजिक रूप को भी आकार प्रदान करते है। कई विद्वानों ने जन–परिवहन पर आधारित नगर जैसे लंदन अथवा न्यूयार्क तथा

वे नगर जो निजी परिवहन पर मुख्यतः निर्भर करते है, जैसे लॉस एंजेल्स के अंतर पर काफी कुछ लिखा है।

निम्नलिखित अनुच्छेद को पढ़िए तथा प्रश्नों के उत्तर दीजिए:

(क) 'जन परिवहन' क्या है?

(ख) जन परिवहन किस प्रकार नगर की आर्थिक स्थिति को प्रभावित करते है?

5. 'सर्वहारा वर्ग' से आपका क्या तात्पर्य है?
6. परंपरागत सत्ता करिश्माई सत्ता से किस प्रकार भिन्न है?
7. 'सामाजिक तथ्य' क्या है?
8. संरचनात्मक परिवर्तन से आप क्या समझते है?

अथवा

'उदविकास' क्या है?

9. आधुनिक दुनिया के लिए फ्रांसीसी क्रांति कौन–कौन से सिद्वांत छोड़कर गई?

खण्ड–ग

10. सावयवी एकता और यांत्रिक एकता में अंतर स्पष्ट कीजिए?
11. भारतीय समाजशास्त्र के इतिहास में ग्रामीण अध्ययन का क्या महत्त्व है? ग्रामीण अध्ययन को आगे बढ़ाने में एम.एन. श्रीनिवास की क्या भूमिका रही ?

अथवा

भारतीय सँस्कृति तथा समाज की क्या विशिष्टताएँ है तथा ये बदलाव के ढाँचे को कैसे प्रभावित करती है?

12. औद्योगिक क्रांति किस प्रकार समाजशास्त्र के उद्‌भव के लिए उत्तरदायी है?

खण्ड–घ

SECTION-D

13. सामाजिक व्यवस्था का क्या अर्थ है तथा इस कैसे बनाए रखा जा सकता है?

अथवा / OR

गाँव, कस्बा तथा नगर एक–दूसरे से किस प्रकार भिन्न है?

14. कल्याणकारी राज्य क्या है? ए. आर. देसाई कुछ देशों द्वारा किए गए दावों की आलोचना क्यों करते है?

Class : XI

SUBJECT : SOCIOLOGY

Time Allowed : 2 hours **Maximum Marks : 40**

समय : 2 घंटे **अधिकतम अंक – 40**

सामान्य निर्देश:

1. प्रश्नपत्र में कुल 14 प्रश्न है।
2. सभी प्रश्न अनिवार्य है।
3. खंड क – प्रश्न संख्या 1 से 2, एक अंक के स्रोत आधरित प्रश्न है। इन प्रश्नों का उत्तर 10 – 15 शब्दों अधिक नहीं होना चाहिए।
4. खंड ख – प्रश्न संख्या 3 से 9 तक दो अंकों के प्रश्न है। ये प्रश्न अति लघु उत्तरीय प्रकार के है। इन प्रश्नों का उत्तर 30 शब्दों से अधिक नहीं होना चाहिए।
5. खंड ग – प्रश्न संख्या 10 से 12 चार अंकों के प्रश्न है। ये लघु उत्तरीय प्रकार के प्रश्न है। इन प्रश्नों का उत्तर 80 शब्दों से अधिक नहीं होना चाहिए।
6. खंड घ – प्रश्न 13 और 14 छह अंकों के प्रश्न है। ये दीर्घ उत्तरीय प्रकार के प्रश्न है। इन प्रश्नों का उत्तर 200 शब्दों से अधिक नहीं होना चाहिए।

खण्ड–क

SECTION-A

1. सामाजिक परिवर्तन कुछ अथवा सभी परिवर्तनों को सम्मिलित नहीं करते, मात्र बड़े परिवर्तन जो, वस्तुओं को बुनियादी तौर पर बदल देते हैं।
   उपरोक्त स्त्रोत को पढ़िए तथा प्रश्न का उत्तर दीजिए:
   सामाजिक परिवर्तन से क्या तात्पर्य है?

2. कृषि की कीमतों में आकस्मिक उतार–चढ़ाव, सूखा अथवा बाढ़ ग्रामीण समाज में विप्लव मचा देते है। भारत में किसानों द्वारा हाल ही में की गई आत्महत्या की संख्या में वृद्धि इसके उदाहरण है। वहीं दूसरी तरफ बड़े स्तर पर विकास कार्यक्रम जो निर्धन ग्रामीणों को ध्यान में रखकर चलाए जाते है, उनका भी काफी असर पड़ता है।

उपरोक्त स्त्रोत को पढ़िए तथा प्रश्न का उत्तर दीजिएः

बड़े स्तर पर एक विकास कार्यक्रम का नाम लिखिए जो निर्धन ग्रामीणों को ध्यान में रखकर चलाए जाते है?

खण्ड–ख

SECTION-B

3. कार्ल मार्क्स के अनुसार पूँजवादी समाज में अलगाव की स्थिति और शक्ति का स्थानांतरण कई स्तरों पर काम करता हुआ दिखाई देता है।
   (क) पूँजीवादी समाज में परिवर्तन किस वर्ग द्वारा लाया जाएगा?
   (ख) कार्ल मार्क्स के अनुसार समाज का वर्गीकरण लिखिए।
4. जाति एक ऐसी संस्था है जो खंडीय विभाजन पर आधारित है। इसका अर्थ है कि जातीय समाज कई बंद, पारस्परिक अनन्य खंडों में बँटा है। प्रत्येक जाति ऐसा ही एक खंड है।

   निम्नलिखित अनुच्छेद को पढ़िए तथा प्रश्नों के उत्तर दीजिएः

   (क) जाति का निर्धारण किससे होता है?
   (ख) जाति एक बंद समूह है। समझाए।
5. पूँजीवादी व्यवस्था में ''उत्पादन के साधनों'' से क्या अभिप्राय है?
6. युवाओं में पाई जाने वाली 'दोहरी–संस्कृति' अथवा 'युवा असंतोष' क्या है?
7. नगरी क्षेत्रों की सामाजिक व्यवस्था के सामने कौन–सी चुनौतियाँ है?
8. ''प्रभावी जातियाँ'' कौन है? इस शब्द को देने का श्रेय किसे जाता है?

अथवा / OR

जन परिवहन के साधनों में परिवर्तन नगरों में सामाजिक परिवर्तन ला सकते है? इस कथन को समझाए।

9. 'उद्विकास' किसे कहते है? यह शब्द किस प्राणीशास्त्री द्वारा दिया गया?

खण्ड–ग

SECTION-C

10. ग्रामीण क्षेत्रों में सामाजिक परिवर्तन की चर्चा कीजिए।
11. बौद्धिक ज्ञानोदय किस प्रकार समाजशास्त्र के विकास के लिए आवश्यक है?

अथवा / OR

आदर्श प्रारूप से क्या तात्पर्य है? मैक्स वेबर द्वारा दिए गए सत्ता के प्रकारों का वर्णन कीजिए।

12. एक भारतीय समाजशास्त्री के क्या कर्त्तव्य होने चाहिए?

खण्ड–घ

SECTION-D

13. जीवंत परपंरा से क्या तात्पर्य है? भारतीय परंपरा में परिवर्तन के तीन सिद्धांतों को मान्यता दी गई है। उदाहरण देते हुए विस्तार से लिखिए।

अथवा / OR

घूर्य जाति की एक विस्तृत परिभाषा दिए जाने के कारण भी जाने जाते है। उनकी परिभाषा छह महत्वपूर्ण विशेषताओं पर बल देती है? चर्चा कीजिए।

14. नौकरशाही की बुनियादी विशेषताएँ क्या है?

NOTES

NOTES

NOTES